INTRODUCTION

✓ अतीत में निश्चित रूप से घटी किसी घटना के अध्ययन को इतिहास कहते है।
✓ इतिहास किसी विशेष क्षेत्र की सभ्यता, संस्कृति, समाज और विकास का अध्ययन होता है।
✓ यह अतीत का कालानुक्रमिक अध्ययन होता है।

इतिहास जानने के साधन

- **साहित्यिक स्रोत**
  - प्राचीन लिपि
  - धार्मिक ग्रंथ
  - ऐतिहासिक पुस्तके
  - विदेशी साहित्य
- **पुरातत्व स्रोत**
  - अभिलेख
  - स्मारक
  - चित्रकाला

हिस्टोग्राफी

✓ इतिहास को वर्णनात्मक रूप में लिखने की प्रक्रिया को हिस्टोग्राफी के रूप में जाना जाता है।
✓ इतिहास लेखन की शुरुआत **'यूनानी'** में हुई थी।
✓ **'हेरोडोटस'** को **'इतिहास के पिता'** के रूप में जाना जाता है।
✓ **'कल्हन'** पहले भारतीय लेखक थे, जिन्होंने '7वीं-12वीं' सदी में कश्मीर के इतिहास पर 'रस्तारंगिनी' नामक एक किताब लिखी थी।
✓ **समय पैमाना:-** इतिहास के कालक्रम को समझने के लिए **'ग्रेगेरियन कैलेंडर'** का प्रयोग किया जाता है।

ईसा मसीह जन्म से पहले						ईसा मसीह की मृत्यु के बाद				
1 लाख 3C	1000 BC	10 BC	2 BC	1 BC	**0 AD**	1 AD	2 AD	10 AD	1000 AD	2021

0 ई.-इस कालखंड में ईसा मसीह का जन्म हुआ था।

इतिहास के युग:

साहित्यिक स्रोतों के आधार पर इतिहास के 3 युग हैं।

- पूर्व ऐतिहासक काल (1 लाख ई०पूव- 5000 ईसा पूर्व)
- आदि ऐतिहासक काल (5000 ईसा पूर्व -1750 ईसा पूर्व)
- ऐतिहासक काल (1750 ईसा पूर्व – वर्तमान)

KD Publication

पूर्व-ऐतिहासिक कालः

- ✓ इस काल के साहित्यिक स्रोतों या लिखित शिलालेख का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- ✓ इस समय के केवल औजार और चित्रकारी ही मिले हैं।
- ✓ पाषाण युग पूर्व-ऐतिहासिक काल का युग था।

आदि-ऐतिहासिक काल

- ✓ साहित्यिक स्रोतों या लिखित शिलालेखों के साक्ष्य मिले हैं लेकिन उन्हें अभी तक समझा नहीं जा सका है।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता आदि-ऐतिहासिक काल का युग था।

ऐतिहासिक काल

- ✓ साहित्यिक स्रोतों के साक्ष्य मिले हैं और उन्हें समझा व पढ़ा जा सकता है।
- ✓ वैदिक काल ऐतिहासिक काल का युग था।

मानव जाति के इतिहास में पूर्व-ऐतिहासिक काल लगभग 2 लाख ईसा पूर्व से 3500-2500 ईसा पूर्व तक का समय हो सकता है, जब पहली सभ्यताओं ने आकार लेना शुरू किया था। पहले आधुनिक मानव या होमो सेपियन्स भारतीय उपमहाद्वीप में 2 लाख ईसा पूर्व से 40,000 ईसा पूर्व के समय में आए और वे जल्द ही उपमहाद्वीप के एक बड़े हिस्से में फैल गए, जिसमें भारतीय प्रायद्वीप क्षेत्र भी शामिल था।

उन्होंने लगातार भारतीय उपमहाद्वीप में वर्तमान ईरान से प्रवास करना शुरू करा। ये लोग कुछ परिवारों के समूहों में आते थे और मुख्य रूप से शिकार पर जीवित रहते थे।

KD Publication

1 Chapter

STONE AGE
(100000 BC – 5000 BC)

✓ पूर्व-ऐतिहासिक काल के व्यक्ति पत्थरों से बने औजार और उपकरणों का इस्तेमाल करते थे, इसलिए इस युग को **'पाषाण युग'** के नाम से जाना जाता है।

पाषाण युग को 3 युगों में बांटा गया है।

1. पुरापाषाण काल (1 लाख ईसा पूर्व से 20 हजार ईसा पूर्व)
2. मध्यपाषाण काल (20 हजार ईसा पूर्व से 5 हजार ईसा पूर्व)
3. नवपाषाण काल (5 हजार ईसा पूर्व से 1800 ईसा पूर्व)

पुरापाषाण युग (पुराना पाषाण युग)

✓ पुरापाषाण युग में रहने वाले मनुष्य जीवित रहने के लिए शिकार और भोजन संग्रह करते थे। वह जड़, बीज, पत्ते आदि जैसे प्राकृतिक भोजन पर निर्भर रहते थे।

✓ वे **'क्वार्टजाइट'** पत्थर से बने बड़े और खुरदुरे औजारों का इस्तेमाल करते थे।

✓ उन्हें खेती का कोई ज्ञान नहीं था लेकिन वे आग के उपयोग को जानते थे।

✓ वे वस्त्र के तौर पर पत्ते, पेड़ की छाल और जानवरों की खाल का उपयोग करते थे।

✓ वे गुफाओं में और पेड़ों के उपवनों में रहते थे।

✓ पुरापाषाण युग के लोग **बिजली** की पूजा करते थे।

✓ भीमबेटका और सोन घाटी पुरापाषाण काल के महत्वपूर्ण स्थल हैं।

मध्य पाषाण युग

✓ बेहतर जीवन सुनिश्चित करने के लिए मध्य पाषाण युग में कई विकास और परिवर्तन देखे गए।

✓ मध्यपाषाण युग के लोग जीवित रहने के लिए शिकार, एकत्रित भोजन और पालतू जानवरों पर निर्भर रहते थे।

✓ इस युग में कुत्ते, मवेशी, घोड़े और बकरियों को पालतू बनाया जाता था।

✓ इस युग के उपकरण सूक्ष्म और संगठित माइक्रोलिथ औजार थे जो की बेहतर चमक के साथ आकार में छोटे थे और हल्के वजन वाले थे। जैसे:- खंजर और चाकू।

✓ औजार बनाने के लिए जानवरों की हड्डियों और हाथी दांत का भी इस्तेमाल किया जाता था।

✓ लोग एक जुट होकर छोटी बस्तियों में रहने लगे और छोटे उपनिवेश स्थापित हो गए।

✓ लोगो ने डालियों और घास से बनी छोटी झोंपड़ियों में रहना शुरू कर दिया।

✓ बेलन घाटी, भीमबेटका और आदमगढ़ मध्यपाषाण काल के महत्वपूर्ण स्थल हैं।

नवपाषाण युग

यह पाषाण युग का अंतिम समय था।

✓ अब लोग भोजन के लिए 'कृषि', शिकार, मछली पकड़ने, एकत्रित भोजन और पालतू जानवरों पर निर्भर रहते थे।

✓ जौ नवपाषाण काल के लोगों द्वारा बोई जाने वाली पहली फसल थी।

✓ गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा, रागी नवपाषाण युग की प्रमुख फसलें थीं।

✓ इस युग के उपकरण अधिक नुकीले, तेज और मजबूत हो गए थे।

✓ नवपाषाण युग के लोग गांवों और कस्बों में मिट्टी की ईटों से बने घरों में जीवन जीते थे।

✓ नवपाषाण युग में कताई, बुनाई, मनका बनाने और मिट्टी के बर्तन बनाने जैसी गतिविधियाँ शुरू की गई।

KD Publication

- ✓ पुश्तैनी पूजा, शवों का दाह संस्कार, पशु बलि और अन्य अनुष्ठान जैसी धार्मिक गतिविधियाँ नवपाषाण युग में प्रचलित थीं।
- ✓ मेहरगढ़, बुर्जहोम, गुफ्खराल, पिखलीहाल, चिरंद और कोल्डिहावा नवपाषाण युग के महत्वपूर्ण स्थल हैं।

ताम्रपाषाण काल (1800 - 1000 ईसा पूर्व)

- ✓ नवपाषाण काल के अंत में, कांस्य और तांबे जैसे धातुओं का उपयोग किया जाने लगा, इसलिए इस समय को ताम्रपाषाण काल के नाम से जाना जाता है।
- ✓ ताँबा मनुष्य द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला पहला धातु था।
- ✓ लोग नदियों के किनारे और पहाड़ियों के पास ग्रामीण बस्तियों में रहते थे।
- ✓ चित्रकारी वाले मिट्टी के बर्तनों को सबसे पहले ताम्रपाषाण युग में ही देखा गया है।

KD Publication

2
Chapter

Indus Valley Civilization
(2500 BC – 1500 BC)

- ✓ सिंधु संस्कृति का उदय ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहादेश के पश्चिमोतर भाग में हुआ था।
- ✓ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जान मार्शल के निर्देशन में 1921 ई. में राय बहादुर दयाराम साहनी ने पंजाब के माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित हड़प्पा का खोज किया।
- ✓ इस सभ्यता का प्रथम अवशेष हड़प्पा नामक स्थान से प्राप्त हुआ, इसलिए इस सभ्यता को **'हड़प्पा सभ्यता'** कहा गया।
- ✓ तीसरी शताब्दी के मध्य तक, एक समान संस्कृति विकसित हुई और पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, बलूचिस्तान, सिंध और मकरान तट के कुछ हिस्सों सहित लगभग 5 लाख वर्ग मील में बस्तियां फैल गईं।
- ✓ यह एक अत्यधिक विकसित सभ्यता थी और इसका नाम उस क्षेत्र की मुख्य नदी सिंधु से लिया गया था।

भौगोलिक विस्तार

यह सभ्यता पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों फली फूली थी।

उत्तर - मांडा (अखनूर जिला), चिनाब नदी के पास, जमामू-कश्मीर।

दक्षिण- दायमाबाद (अहमदनगर जिला), गोदावरी नदी के पास, महाराष्ट्र।

पूर्व- आलमगीरपुर (मेरठ), हिंडन नदी के पास, उत्तर प्रदेश।

पश्चिम - सुतकागन दोर (बलूचिस्तान),दख्त नदी के पास, पाकिस्तान

सिन्धु घाटी सभ्यता के अन्य नाम

- हड़प्पा सभ्यता
- कांस्य युग की सभ्यता
- शहरी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं

नगर-योजना

- ✓ यह नगर-योजना प्रणाली **जाल पद्धति** पर विन्यस्त है और नगरों का निर्माण नियोजित योजना के आधार पर किया गया था।
- ✓ सिंधु के लोगों ने अपने नगरों के निर्माण में **शतरंज पद्धति** को अपनाया था। जिसमें सड़के सीधी एवं नगर सामान्य रुप से चौकोर होते थे।
- ✓ सड़क का मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण की ओर जाता था एवं दूसरा मार्ग पूर्व से पश्चिम की ओर उसे समकोण पर काटता था।
- ✓ निर्माण सामग्री के रूप में अच्छी गुणवत्ता की पकी हुई ईंटों का उपयोग किया गया था।
- ✓ नगरों को 2 भागों में बांटा गया था: नगर का ऊपरी भाग में दुर्ग क्षेत्र था (किला क्षेत्र) और निचला भाग आम लोगों का आवस क्षेत्र था।
- ✓ मोहनजोदड़ो में एक बड़ा सार्वजनिक विशाल स्नानागार (महान स्नानागार) मिला है।

जल निकासी व्यवस्था

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता की जल निकासी प्रणाली अच्छी तरह से विकसित और कुशल थी।
- ✓ ताजे पानी की आपूर्ति के लिए ढकी हुई नालियाँ थी जो बाँध से जुड़ी थी।
- ✓ शहर में मल निकास और इस्तेमाल किए गए पानी के लिए अलग से ढकी हुई नालियां थीं।

KD Publication

लिपि और भाषा

- ✓ लिपि बुस्ट्रोफेडन थी, जिसे एक पंक्ति में दाएं से बाएं और फिर अगली पंक्ति में बाएं से दाएं लिखा जाता था।
- ✓ लिपि को अभी तक समझा नहीं गया है।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि वर्णात्मक नहीं चित्रात्मक थी।

सामाजिक विभाजन

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता में समाज को व्यवसाय के आधार पर 3 भागों में बांटा गया था।
  - (a) उच्च वर्ग– पुरोहित जो क्षेत्र के प्रशासक थे और उच्च वर्ग के लोग माने जाते थे।
  - (a) मध्यम वर्ग– क्षेत्र के छोटे व्यापारी जिन्हें मध्यम वर्ग का सुखी वर्ग माना जाता था।
  - (a) निम्न वर्ग– मजदूर, कलाकार, मूर्तिकार और अन्य कर्मचारी

पारिवारिक जीवन

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग मातृसत्ता समाज का पालन करते थे, जिसमें परिवार की सबसे वरिष्ठ महिला परिवार की मुखिया होती थी।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी थी, उन्हें हर क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त थे।

धर्म

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग ज्यादातर प्रकृति को भगवान के रूप में पूजते थे।
- ✓ प्रमुख पुरुष देवता पशुपति महादेव (प्रोटो–शिव) थे, जिन्हें एक सिंहासन पर योग मुद्रा में बैठे हुए मुहरों में दर्शाया गया था। वह चार जानवरों (हाथी, बाघ, गैंडा और भैंस) से घिरे हुए थे और उनके पैरों के पास दो हिरण दिखाई देते हैं।
- ✓ प्रमुख महिला देवी मातृदेवी थीं, जिन्हें विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है और उन्हें पृथ्वी की माता और उर्वरता की देवी माना जाता है।
- ✓ मातृदेवी के अतिरिकत लिंग तथा योनि पूजन के भी प्रमाण मिले हैं
- ✓ कूबड़ वाला बैल सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों द्वारा पूजा जाने वाला मुख्य जानवर था
- ✓ लोथल और कालीबंगा में अग्नि कुंड के प्रमाण मिले हैं जो की अग्नि पूजन को दर्शाते हैं।
- ✓ इसके अलावा वे भूतों और बुरी ताकतों में भी विश्वास करते थे और उनसे सुरक्षा के लिए ताबीज का इस्तेमाल करते थे।

दफनाने की रस्म

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता में तीन प्रकार के अंत्येष्टि पाए गए हैं, अर्थात पूर्ण अंत्येष्टि, आंशिक अंत्येष्टि और दाह संस्कार के बाद अंतिम संस्कार के प्रमाण मिले हैं।
- ✓ सामान्य अभ्यास में अमानवीयता का विस्तार किया गया था – शरीर को पीठ के बल लिटाया जाता था और सिर आम तौर पर उत्तर दिशा में होता था।

राजनीतिक व्यवस्था

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि अस्पष्ट है, इसलिए राजनीतिक व्यवस्था अभी तक स्पष्ट नहीं है, लेकिन उचित सड़क, जल निकासी व्यवस्था और नगर नियोजन के साथ क्षेत्र की एकरूपता किसी केंद्रीय प्राधिकरण के बिना संभव नहीं है। इसलिए इतिहासकारों द्वारा यह माना जाता है कि सिंधु घाटी सभ्यता में एक उचित राजनीतिक व्यवस्था अवश्य रही होगी।

आर्थिक जीवन

- ✓ सिन्धु घाटी सभ्यता में वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता में लघु औद्योगीकरण की स्थापना हुई और वस्तुओं का आयात और निर्यात होता था।

उद्योग:–

- ✓ सिन्धु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा उद्योग सूती वस्त्र था
- ✓ ईट बनाने के कारखाने भी मौजूद थे।
- ✓ मनके बनाने या गहने बनाने के कारखाने मौजूद थे, क्योंकि स्त्री और पुरुष दोनों ही आभूषण पहनते थे।
- ✓ धातु उद्योग थे जिनमें औजार बनाए जाते थे।
- ✓ हड़प्पा के मृदभांड चमकीले लाल–काले रंग के थे जिन पर फूलों की चित्रकारी हुई थी और समान रूप से बने थे और अच्छी तरह से पके हुए थे।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता के कुछ स्थलों पर खिलौना और गुड़िया उद्योग भी पाए गए हैं।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता में नौवहन उद्योग भी अस्तित्व में था क्योंकि लोथल में एक जहाज बंदरगाह पाया गया है।

KD Publication

कृषि:-

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता का कृषि क्षेत्र अच्छी तरह से विकसित था और कृषि तकनीकों, औजारों और उपकरणों में सुध ार हुआ था।
- ✓ सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग लकड़ी के हल का प्रयोग करते थे।
- ✓ गेहूं मुख्य फसल थी और जौ, तिलहन, सरसों और दालें सिंधु घाटी सभ्यता में उगाई जाने वाली अन्य फसलें थीं।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों द्वारा कपास, रेशम और नील जैसी वाणिज्यिक फसलों की भी खेती की जाती थी।
- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग अपना पेट भरने और खाद्यान्न भंडार में रखने के लिए पर्याप्त उत्पादन करते थे।

व्यापार एवं वाणिज्य

- ✓ राजस्थान, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों के साथ अंतर क्षेत्रीय व्यापार किया जाता था।
- ✓ विदेश व्यापार मुख्य रूप से मेसोपोटामिया और बहरीन के साथ किया जाता था।
- ✓ व्यापार भूमि परिवहन के साथ-साथ जल परिवहन द्वारा भी किया जाता था।

मुहर

- ✓ ये सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों की सबसे बड़ी कलात्मक रचनाएं हैं।
- ✓ मुहर आमतौर पर चौकोर आकार की होती थी। जो कि सेलखड़ी (नरम पत्थर) और टेराकोटा (पकी हुई मिट्टी) से बनी होती थी।
- ✓ अधिकांश मुहरों पर भगवान और देवी के चित्र बने हुए थे और कई मुहरों पर जानवरों के साथ एक छोटा शिलालेख उत्कीर्ण था।
- ✓ मुहरों का उपयोग दुर्ग जैसे विशेष क्षेत्रों में प्रवेश पाने के लिए किया जाता था।

पतन

- ✓ हड़प्पा संस्कृति लगभग 1000 वर्षों तक चली।
- ✓ 2000 ईसा पूर्व के बाद सिंधु संस्कृति का धीरे-धीरे पतन हुआ और यह लुप्त होती चली गई।
- ✓ कुछ लोग इसका कारण पड़ोसी रेगिस्तान के विस्तार के कारण मिट्टी की घटती उर्वरता को बताते हैं परंतु अन्य लोग बताते हैं कि आर्यो ने इसे नष्ट कर दिया।
- ✓ भले ही इस सभ्यता के पतन के लिए कई सिद्धांत हैं, लेकिन सबसे स्वीकृत संस्करण पारिस्थितिक असंतुलन और आर्यों के आक्रमण का है।

सिंधु सभ्यता के मुख्य स्थल

हड़प्पा

- ✓ हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के बायें तट पर स्थित है।
- ✓ जॉन मार्शल के निर्देशन में 1921 ई. में दयाराम साहनी ने इस स्थल का उत्खनन कराया था।
- ✓ हड़प्पा में 6 एक **अन्नागार** का अवशेष प्राप्त हुआ है।
- ✓ हड़प्पा से शंख का बना बैल, ईंटों के वृत्ताकार चबूतरे, एक बर्तन पर बना मछुआरे का चित्र, पीतल का बना इक्का, गेंहू तथा जौ के दानों के अवशेष भी मिले है।

मोहनजोदड़ों

- ✓ मोहनजोदड़ों पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है।
- ✓ 1922 ई. में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों के टीलों की खोज की।
- ✓ यह सिंधु घटी सभ्यता का सबसे बड़ा शहर था।
- ✓ मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ **'मृतकों का टीला'** होता है।
- ✓ यहाँ से विशाल स्नानागार और विशाल अन्नागार के अवशेष मिले है।
- ✓ यहाँ काँस्य की बनी **नृत्यागना** की मूर्ति मिली है।
- ✓ मोहनजोदड़ों में सभी घर पकी हुई ईटों से बने थे।
- ✓ पशुपती कि मोहर मिली है।

कालीबंगा

- ✓ कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ काले रंग की चूड़ियाँ है।
- ✓ कालीबंगा राजस्थान के गंगा नगर जिले में घग्घर नदी के तट पर स्थित है।
- ✓ यहाँ से ईंटों के चबूतरों के शिखर पर हवन कुण्डों के होने के साक्ष्य मिले है।
- ✓ यहाँ से हवन कुण्ड, पशुबली, अलंकृत ईंटों, काँस्य की बैल गाड़ी, चुड़ियाँ बनाने की कारखाना, हल की कुड और बेलनाकार मुहरे मिले है।

KD Publication

- ✓ यहाँ पर **पूर्ण समाधिकरण**, **आंशिक समाधिकरण** एवं **दाह संस्कार** के भी चिन्ह मिले है।

लोथल

- ✓ लोथल गुजरात के अहमदाबाद जिले में **भोगवा नदी** के तट पर स्थित है।
- ✓ लोथल के नगर निर्माण और उपकरणों को देखकर ही इसे हड़प्पा या लघु मोहनजोदड़ों कहते हैं।
- ✓ लोथल से जहाजों का बंदरगृह मिला है।
- ✓ यहाँ से चावल का साक्ष्य, बाजरे के दाने, एक शंख का उपकरण, दिशा मापक यंत्र, युगल सवाधान, एक मृदभाण्ड पर बारहसिंगा की आकृति, सोने के मनके, आटे की चक्की और घोड़े के मृण्मूर्तियों के अवशेष मिले है।
- ✓ यहाँ पश्चिमी एशियाई देशों के साथ व्यापार होता था।

बनवाली

- ✓ बनवाली हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है।
- ✓ यहाँ अच्छे किस्म के **जौ** मिले हुए है।
- ✓ बनवाली में **जल निकासी प्रणाली** का अभाव था।
- ✓ यहाँ से हल की आकृति का पक्की मिट्टी का खिलौना, मिट्टी का बना हल का नमुना, मनुष्यों एवं पशुओं की मूर्तियाँ और मनके मिले है।

धौलावीरा

- ✓ धौलावीरा गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है।
- ✓ यहाँ पर **नहरों** का प्रथम साक्ष्य मिला हैं और कही से नहीं।
- ✓ यहाँ से पॉलिशदार श्वेत पाषाण खण्ड बड़ी संख्या में मिला है।
- ✓ यहाँ से एक स्टेडियम मिला है। स्टेडियम के साइन बोर्ड पर बड़े अक्षर मिले है।

राखीगढ़ी

- ✓ राखीगठी हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है।
- ✓ यह सिंधु घाटी सभ्यता का भारत में सबसे बड़ा शहर था।
- ✓ इसका क्षेत्रफल 7 किमी. है।

KD Publication

3 Chapter

VEDIC AGE
(1500 BC – 600 BC)

- ✓ हड़प्पा या सिंधु संस्कृति के पतन के बाद भारत में एक नई सभ्यता का आविर्भाव हुआ उसे वैदिक अथवा आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है।
- ✓ इस सभ्यता के संस्थापक आर्य थे, इसीलिए इसे आर्य सभ्यता भी कहा जाता है।
- ✓ यहाँ **आर्य** शब्द का अर्थ है- श्रेष्ठ, कुलीन, अभिजात्य और उत्कृष्ट आदि।
- ✓ आर्यों की प्रारंभिक जीवन मुख्यत: पशुचारण का था जबकि कृषि उनका दूसरा व्यवसाय था।

1. ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. से 1000 ई. प

- ✓ इस काल की जानकारी ऋग्वेद से प्राप्त होती है इसलिए इसे ऋग्वैदिक युग कहा जाता है।

भौगोलिक विस्तार

- ✓ इस युग की अधिकांश बस्तियां पाकिस्तान और पश्चिम भारत की नदियों के आसपास थीं।

  उत्तर:-हिमालय की शिवालिक श्रेणी तक

  दक्षिण:-विंध्याचल तक

  पूर्व:-यमुना नदी तक

  पश्चिम:-अफगानिस्तान की हिंदुकुश श्रेणी तक

राजनीतिक संरचना

- ✓ राजनीतिक संगठन की सबसे छोटी इकाई **कुल** अथवा परिवार होता था। परिवार के पिता अथवा बड़ा भाई को **'कुलप'** कहा जाता था।
- ✓ कई कुलों को मिलाकर ग्राम बनता था। ग्राम का मुखिया **'ग्रामणी'** कहा जाता था।
- ✓ ग्राम से बड़ी संस्था **'विश'** होती थी जिसका स्वामी **'विशपति'** कहलाता था। अनेक विशों का समूह **'जन'** होता था। जन के अधिपति को जनपति या राजा कहा जाता था और वह चयनित होता था।
- ✓ सभा, समिति, विधाता और गण प्रमुख सभाएं थीं। इनमें विधाता सबसे प्राचीन थी।
- ✓ इन सभाओं ने सैन्य, धार्मिक और राजनीतिक कार्यों पर विचार-विमर्श किया जाता था।
- ✓ सभा और समिति दो सबसे महत्वपूर्ण सभाएं थीं।
- ✓ समिति-इसमें आम लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधि शामिल होते हैं।
- ✓ सभा-इसमें अप्रत्यक्ष प्रतिनिधि होते हैं जो समिति के प्रतिनिधि द्वारा चुने जाते हैं।

ऋग्वेदिक समाज

- ✓ लोग अपनी प्राथमिक वफादारी अपने कबीले के प्रति कृतज्ञ करते थे, जिसे जन कहा जाता था।
- ✓ परिवारों में अनिवार्य रूप से पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन किया जाता था।
- ✓ यह एक समतावादी समाज था।
- ✓ इस काल में राष्ट्र (राज्य) अस्तित्व में नहीं आया था।

सामाजिक विभाजन

- ✓ जब आर्य पहली बार भारत आए, तब न तो जाति की चेतना थी और न ही व्यवसाय वंशानुगत थे।
- ✓ ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग केवल आर्य या दास के संदर्भ में किया गया है न कि ब्राह्मण या क्षत्रिय के संदर्भ में।
- ✓ प्रारंभिक वैदिक काल में कोई भाई-भतीजावाद नहीं था। समाज का सामाजिक विभाजन व्यवसाय पर आधारित था और समाज के लिए सभी वर्ग समान रूप से महत्वपूर्ण थे।
  - **पुरोहित (ब्राह्मण):-** पुजारी (जो दूसरों को शिक्षा देते थे।)
  - **क्षत्रिय:-** रक्षक (जो रक्षा प्रशासन का हिस्सा थे)

KD Publication

- **वैश्य:-** व्यापारी (जो समाज के मध्यस्थ थे)
- **शूद्र:-** छोटे किसान, मजदूर और सेवादार।

महिलाओं की स्थिति

- ✓ ऋग्वैदिक काल में महिलाएं सभा और विधाता में भाग लेती थीं।
- ✓ महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वे अपने पतियों के साथ यज्ञ में भाग लेती थीं।
- ✓ महिलाओं को शिक्षा में भाग लेने की अनुमति थी।
- ✓ विधवा पुनर्विवाह और नियोग (लेविरेट) के अभ्यास के प्रमाण भी मिले हैं।
- ✓ एक पत्नीत्व प्रथा स्थापित थी। हालाँकि, बहुविवाह और बहुपति प्रथा को भी जाना जाता था।
- ✓ प्रारंभिक वैदिक काल में अमाजू एक प्रथा थी, जिसमें महिलाओं को अविवाहित रहने की अनुमति थी।
- ✓ ऋग्वैदिक काल में सती प्रथा, पर्दा प्रथा और बाल विवाह का कोई प्रमाण नहीं पाया गया है।

आर्थिक गतिविधियां

कृषि

- ✓ प्रारंभिक वैदिक काल के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था।
  - जौ और गेहूं वैदिक काल की प्रमुख फसलें थीं।
  - इस काल में कपास और रेशम की खेती होती थी।
  - प्रारंभिक वैदिक काल में चावल का कोई निशान नहीं मिलता है।
- ✓ पशुपालन- गाय, घोड़ा, बकरी और कुत्ते मुख्य पालतू जानवर थे और इन्हें मांस और दूध के लिए पाला जाता था।
- ✓ कपड़े बनाने के उद्योग।
- ✓ लकड़ी के रथ बनाने वाले उद्योग।
- ✓ आभूषण उद्योग
- ✓ प्रारंभिक वैदिक काल में केवल 'बाली कर' मौजूद था जिसमें राजन को प्रशासन चलाने के लिए गाय दी जाती थी और यह कर स्वैच्छिक था, अनिवार्य नहीं था।

धार्मिक व्यवस्था

- ✓ प्रारंभिक वैदिक धर्म प्रकृतिवादी था, न तो मंदिर थे और न ही मूर्तियाँ।
- ✓ प्रार्थना की विधि मंत्र जाप थी। पूजा का मुख्य उद्देश्य भौतिक सुख और मानसिक स्थिरता प्राप्त करना था।
- ✓ ऋग्वेद में कुल 33 देवताओं का उल्लेख है।

ऋग्वैदिक काल के **भगवान**

इंद्र - प्रारंभिक वैदिक काल के सबसे महत्वपूर्ण देवता थे। उन्हें वर्षा और युद्ध का स्वामी माना जाता था। ('इंद्र को पुरंदर कहा जाता है)

अग्नि - प्रारंभिक वैदिक काल के दूसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता थे।

वरुण - जल और महासागरों के देवता।

मारुत - हवा और तूफान के देवता।

सोम - वृक्षों के देवता।

पुशन - जानवरों के देवता।

ऋग्वैदिक काल की देवियाँ

उषा - भोर की देवी

अदिति- देवताओं की माता

पृथ्वी- जगत की देवी

आर्यनी- वन की देवी

सरस्वती- नदी की देवी

उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

- ✓ ऋणवैदिक संस्कृति की पृष्ठभूमि पर ही उत्तर वैदिक कालीन संस्कृति की विकास हुआ।
- ✓ उत्तर वैदिक युग के दौरान, आर्यो ने यमुना, गंगा और सदानीरा नदियों के उपजाऊ मैदानों को पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया था। उन्होंने विंध्यांचल को पार किया और गोदावरी के उत्तर में दक्कन तक बस गए।

राजनीतिक व्यवस्था

- ✓ उत्तर वैदिक युग के दौरान, लोकप्रिय सभाओं ने अपना महत्व खो दिया।
- ✓ राजन (राजा) के पद ने अपना आकर्षण खो दिया और यह वंशानुगत हो गया और प्रारंभिक वैदिक काल की तुलना में राजनीतिक संरचना कठोर हो गई।
- ✓ विधाता सभा पूरी तरह से लुप्त हो गयी थी।
- ✓ सभा और समिति अभी भी अस्तित्व में थी, लेकिन उनका चरित्र बदल गया था।
- ✓ महिलाओं को अब सभाओं में शामिल होने की अनुमति नहीं थी,
- ✓ 'क्षेत्र' को दर्शाने वाला 'राष्ट्र' शब्द सबसे पहले इसी काल में आया था।

KD Publication

सामाजिक व्यवस्था

- ✓ उत्तर वैदिक युग में समाज जटिल हो गया और चार वर्णों में विभाजित हो गया - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
- ✓ अब समाज का सामाजिक विभाजन वंशानुगत हो गया। दूसरे शब्दों में भाई-भतीजावाद उत्तर वैदिक काल में शुरू हुआ।

  ब्राह्मण: बलि और यज्ञ की बढ़ती प्रवृत्ति ने ब्राह्मणों को शक्ति प्रदान की जिन्होंने लोगों के लिए विभिन्न अनुष्ठान और बलिदान किए। उन्हें समाज की सबसे शिक्षित जाति माना जाता था।

  क्षत्रिय: उन्होंने योद्धा वर्ग का गठन किया। अधिकांश शासक इसी वर्ग के थे।

  वैश्य: वे कृषक, पशुपालक, व्यापारी, शिल्पकार और धातु श्रमिक थे, जो आबादी का बड़ा हिस्सा थे।

  शूद्र: वे सामाजिक पदानुक्रम में सबसे नीचे थे और ऊपरी तीन वर्णों की सेवा करने के लिए थे।
- ✓ रथकार या रथ-निर्माता जैसे कारीगरों के कुछ वर्गों को शूद्रों में उच्च दर्जा प्राप्त था।
- ✓ ऊपरी तीन वर्णों को द्विज (दो बार जन्म लेने वाले) के रूप में जाना जाता था।
- ✓ गोत्र प्रणाली उत्तर वैदिक काल में ही उभरी।

महिलाओं की स्थिति :-

- ✓ उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी।
- ✓ समाज लैंगिक पक्षपाती हो गया था।
- ✓ महिलाओं को राजनीतिक संगठन और शिक्षा प्रणाली में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।
- ✓ बहुविवाह एक प्रचलित प्रथा थी जिसमें पुरुष एक से अधिक पत्नी रख सकते थे।
- ✓ उत्तरवैदिक काल में विधवा विवाह, अन्तर्वर्णीय विवाह, दहेज प्रथा और नियोग प्रथा का प्रचलन शुरू हो गया था।
- ✓ बाल विवाह उत्तर वैदिक काल में शुरू हुआ।
- ✓ उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति सबसे खराब हो गई और उन्होंने अपनी स्वतंत्रता खो दी थी।

आश्रम व्यवस्था

- ✓ 4 आश्रम की अवधारणा उत्तर वैदिक युग में उभरी थी
- ✓ आश्रम शब्द का अर्थ है परिश्रम या प्रयास करना।
- ✓ जाबालोपनिषद में सर्वप्रथम **चारों आश्रमों** का उल्लेख मिलता है। इसमें गृहस्थ आश्रम को विशेष महत्व दिया जाता था।

क्रम.	आश्रम	आयु	कार्य
1.	ब्रह्मचर्य	0-25 वर्ष	ज्ञान की प्राप्ति
2.	गृहस्थ	26-50 वर्ष	संसारिक जीवन
3.	वानप्रस्थ	51-75 वर्ष	ईश्वर में ध्यान लगाना
4.	संयास	76-100 वर्ष	मोक्ष हेतु तपस्या

धार्मिक जीवन

- ✓ ऋग्वैदिक काल के शुरुआती देवताओं ने उत्तर वैदिक युग में अपना महत्व खो दिया।
- ✓ उत्तरवैदिक काल में धर्म का प्रमुख आधार यज्ञ बन गया था जबकि इसके पूर्वज ऋग्वैदिक काल में स्तुति और आराधना को महत्व देते थे।
- ✓ इस काल में ही **मूर्ति पूजा** का आरंभ हुआ।
- ✓ त्रिदेव की अवधारणा उत्तर वैदिक काल में शुरू हुई।

  प्रजापति:- ब्रह्मा (ब्रह्मांड के निर्माता)

  रुद्र:- शिव (ब्रह्मांड का नाश करने वाले)

  नारायण:- विष्णु (ब्रह्मांड के रक्षक)
- ✓ पशु बलि और रिवाज प्रथाए अधिक महत्वपूर्ण हो गई थी।
- ✓ उत्तर वैदिक काल में धार्मिक गतिविधियाँ महंगी हो गई, इसलिए आम लोग या वैश्य और शूद्र इनका वहन नहीं कर पाते थे।
- ✓ उत्तर वैदिक काल में, राजन अपने राज्य का विस्तार करने और भौतिकवादी जीवन प्राप्त करने के लिए यज्ञ करते थे।

  अश्वमेध यज्ञ:- अश्वमेघ यज्ञ राजनीतिक विस्तार हेतु किया जाने वाला यज्ञ था और इसे वही सम्राट कर सकता था, जिसका अधिपत्य अन्य सभी नरेश मानते थे।

  वाजपेय यज्ञ:-यह यज्ञ शौर्य प्रदर्शन व प्रजा के मनोरंजनार्थ किया जाता था।

KD Publication

राजसूय यज्ञः- राजा राज्याभिषेक के समय **'राजसूय यज्ञ'** का अनुष्ठान करता है।

- यह सिंहासनारोहण से संबंधित यज्ञ है।
- इस यज्ञ के अनुष्ठान से यह समझा जाता था कि राजा को दिव्य शक्ति मिल गयी है।

आर्थिक गतिविधियांः-

✓ **कृषिः**चावल और गेहूँ उत्तर वैदिक काल की प्रमुख फसलें थीं।

✓ **पशुपालनः** इस काल में पशुपालन का महत्व कायम था, पशुओं में गाय, बैल, घोड़ा, भेंड़ बकरी, शुअर एवं गधे आदि प्रमुख रूप से पाले जाते थे।

✓ इस काल के विभिन्न व्यवसायिकों की एक लम्बी सूची मिलती है, इनमें रथकार, लुहार, स्वर्णकार चर्मकार, स्नक, जुलाहे, मछुआरे, कुम्भकार, नाई, वैद्य, नर्तक और ज्योतिषी आदि है।

✓ **खननः** लोहा सबसे पहले उत्तर वैदिक काल में देखा गया था और इसे श्याम अयस के नाम से जाना जाता है। उत्तर वैदिक काल में उपकरण और औजार लोहे के बने होते थे।

✓ बुनाई, रंगसाजी एवं कढ़ाई का काम स्त्रियाँ भी करती थी।

✓ उत्तरवैदिक काल में **मृदभांड** निर्माण कार्य भी व्यवसाय का रूप ले चुका था। इस काल में चार प्रकार के मृदभांड मिलते है। 1. काले मृदभांड 2. चित्रित मृदभांड 3. लाल मृदभांड 4. लाल व काले रंग के मृदभांड

वैदिक साहित्य

वेद

✓ वेद शब्द संस्कृति के **'विद्'** धातु से बना हैं जिसका अर्थ है जानना।

✓ वेद शब्द का अर्थ ज्ञान, महतज्ञान अर्थात पवित्र एवं आध्यात्मिक ज्ञान है।

✓ वेदों के संकलन कर्ता कृष्ण द्वैपायन **वेदव्यास** को माना गया है।

✓ वेदों की कुल संख्या 4 हैं- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद।

ऋग्वेद

- ऋग्वेद चारों वेदों में से सर्वाधिक **प्राचीन वेद** है।
- ऋग्वेद से **आर्यो** की राजनीतिक प्रणाली एवं इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।
- ऋग्वेद में कुल 10 मण्डल, 8 अष्टक एवं 1028 सूक्त हैं।
- ऋग्वेद की रचना 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. के बीच मानी जाती है।
- आर्युवेद ऋणवेद का उपवेद है।
- ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण यज्ञों के अवसर पर **होतृ ऋषियों** द्वारा किया जाता था।

सामवेद

- **'साम'** शब्द का अर्थ है गान।
- इसमें ऋग्वेद के भजनों का उल्लेख संगीत प्रारूप में हैं।
- साम वेद को **'भारतीय संगीत के जनक'** के रूप में जाना जाता है।
- यह 7 सरगम से युक्त संगीत की सबसे पुरानी पुस्तक है।
- सामवेद के मंत्रों को गाने वाला **'उदगाता'** कहलाता था।
- गंधर्व वेद सामवेद का उपवेद है।

यजुर्वेद

- **'यजु'** का अर्थ है यज्ञ।
- यजुर्वेद में यज्ञों के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है।
- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण **'अध्वुर्य'** नामक पुरोहित करता है।
- धर्नुवेद यर्जुवेद का उपवेद है।

अथर्ववेद

- अथर्ववेद की रचना **अथर्वा ऋषि** द्वारा की गई है।
- अथर्ववेद में ब्रह्म ज्ञान, धर्म, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, मंत्र, जादू-टोना आदि विषयों का उल्लेख है।
- उत्तर वैदिक काल में इस वेद का विशेष महत्व है।
- शिल्पवेद अथर्ववेद का उपवेद है।

ब्राह्मणः

✓ ये वेदों के सूक्तों की व्याख्या करते हैं।

✓ प्रत्येक वेद के साथ अनेक ब्राह्मण जोड़े गए हैं।
ऋग्वेदः कौशेतकी और ऐत्रेय ब्राह्मण

KD Publication

यजुर्वेदः तैत्रीय और शतपथ ब्राह्मण।
सामवेदः जेमिनेय ब्राह्मण
अथर्ववेदः गोपथ ब्राह्मण

अरण्यकास

- ✓ यह ब्राह्मण का समापन भाग हैं।
- ✓ इन्हें 'वन पुस्तकें' कहते हैं, जो मुख्य रूप से जंगलों में रहने वाले साधुओं द्वारा अपने विद्यार्थियों के लिए लिखी जाती हैं।
- ✓ इन्हें गुप्त और खतरनाक माना जाता है।

उपनिषद

- ✓ ये अरण्यकास के साथ जुड़ी भाष्य हैं
- ✓ उपनिषदों को **'वेदान्त'** के नाम से भी जाना जाता है।

KD Publication

4
Chapter

BUDDHISM

नए धर्मों के उदय के कारण

- ✓ वैदिक संस्कृति अपनी मूल शुद्धता खो चुकी थी और बहुत जटिल हो गई थी।
- ✓ वंशानुगत 4 वर्ण व्यवस्था ने समाज में अराजकता, निराशा और जन्म आधारित मुद्दों को जन्म दिया।
- ✓ ब्राह्मणों के वर्चस्व ने समाज में अशांति पैदा की और क्षत्रिय ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त की।
- ✓ धार्मिक गतिविधियां महंगी हो गई, इसलिए आम लोग वैदिक धर्म के अनुष्ठानों, बलिदानों और समारोहों के साथ तालमेल नहीं बिठा सके।
- ✓ शूद्रों और वैश्यों ने वैदिक देवताओं में अपना विश्वास खो दिया क्योंकि वे एक सरल जीवन जीने की इच्छा रखते थे, जिसके परिणामस्वरूप समाज में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों का उदय होता है।

बौद्ध धर्म

- ✓ गौतम बुद्ध को **'सिद्धार्थ और शाक्यमुनि'** के नाम से भी जाना जाता है, उनका जन्म 563 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन मल्ल महाजनपद के कपिलवस्तु शहर के पास लुंबिनी ग्राम में हुआ था।

सिद्धार्थ का परिवार

पिता- शुद्धोधन (लुंबिनी के निर्वाचित शासक)
माता- महामाया
पालन पोषण- गौतमी
पत्नी- यशोधरा:
बेटा- राहुल

सिद्धार्थ की कहानी

- ✓ 29 साल की उम्र में सिद्धार्थ ने पहली बार रथ पर शहर की सैर की और उन्होंने 4 दर्शायों को अपने जीवन में पहली बार देखा।

  (a) बूढ़े आदमी (b) बीमार आदमी
  (c) मृत शरीर (d) तपस्वी
- ✓ इन सबका साक्षी होने के कारण उन्होंने अपनी जीवन शैली को बदलने और अपने घर, परिवार को छोड़कर जीवन की सच्चाई को खोजने का मन बना लिया। इस घटना को **'महाभिनिष्क्रम'** कहा गया।
- ✓ घर छोड़ने के बाद सिद्धार्थ ने **'अलारा कलामा'** और **'उदक रामपुत्त'** से ध्यान और उपनिषद की शिक्षा ली।
- ✓ 35 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ उरुवेला (बोधगया) पहुंचे और 49 दिनों तक पीपल के पेड़ (बोधि वृक्ष) के नीचे ध्यान किया और **'निर्वाण'** प्राप्त किया या ज्ञान प्राप्त किया और **'बुद्ध'** के रूप में जाने गए।
- ✓ बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ (बनारस) में अपने 5 शिष्यों को दिया था, इस घटना को **'धर्मचक्र प्रवर्तन'** कहा जाता है।
- ✓ बुद्ध ने अपने 5 शिष्यों के साथ **'संघ'** (संस्था या बौद्ध मठ) की स्थापना की।
- ✓ 80 वर्ष की आयु में 463 ईसा पूर्व में बुद्ध की मृत्यु **'कुशीनगर'** (यूपी) में हुई थी और इस घटना को **'महापरिनिर्वाण'** कहा जाता है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

• बुद्ध • धम्म • संघ

बुद्ध के 4 आर्य सत्य

1. **दु:ख:-** संसार में सर्वत्र दु:ख ही दु:ख है। जीवन दु:खों तथा कष्टों से भरा हुआ है, जिन्हें हम सुख समझते हैं वे सभी दुखों से भरे हुए है।
2. **दु:ख समुदाय:-** प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। अत: दु:ख का भी कारण हैं क्योंकि कोई भी वस्तु बिना किसी कारण के नहीं हो सकती।

KD Publication

3. **दु:ख निरोध:**-दु:ख का अन्त संभव है, अत: यदि दु:खों के मूल कारण अविद्या का विनाश कर दिया जाए तो दु:ख भी नष्ट हो जायेगा।
4. **दु:ख निरोधगामिनी:**- दु:ख के मूल अविद्या के **प्रतिपदा:** विनाश का उपाय **अष्टांगिक मार्ग** है।

✓ बुद्ध ने सांसारिक दु:खों से मुक्ति पाने हेतु अष्टांगिक मार्ग की बात कही है। ये **अष्टांगिक मार्ग** है-

1. सम्यक दृष्टि:- वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप का ध्यान करना ही सम्यक दृष्टि है।
2. सम्यक संकल्प:- आसक्ति, द्वेष तथा हिंसा से मुक्त विचार रखना।
3. सम्यक वाक्:- अप्रिय वचनों को सर्वथा परित्याग करना।
4. सम्यक कर्मान्त:- सत्य, अहिंसा, दया व दान आदि सत्कर्मों का अनुसरण करना।
5. सम्यक आजीवन:- सदाचार के नियमों के अनुकूल आजीविका का अनुसरण करना।
6. सम्यक व्यायाम:- नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानसिक उन्नति के लिए प्रयत्न करना।
7. सम्यक स्मृति:- मिथ्या धारणाओं का त्याग कर सच्ची धारणा का अनुसरण करना।
8. सम्यक समाधि:- मन अथवा चित की एकाग्रता को बनाये रखना।

बुद्ध का दर्शनशास्त्र

✓ बुद्ध अज्ञेयवादी थे, वे **'कर्म'**, **'पुनर्जन्म'** और **'अष्टांगिका मार्ग'** के सिद्धांत में विश्वास करते थे। बुद्ध के अनुसार वेदों में निहित पारंपरिक शिक्षा मनुष्य के लिए मोक्ष प्राप्त करने के लिए उपयोगी नहीं हो सकती है और किसी को उन पर आँख बंद करके भरोसा नहीं करना चाहिए।

बौद्ध परिषद

✓ **प्रथम बौद्ध परिषद : 483 ई.पू**
स्थान- राजगृह
अध्यक्षता- महाकश्यप
संरक्षक- अजातशत्रु
निष्कर्ष- पालि लिपि में 2 बौद्ध साहित्य का संकलन।

✓ सुत्त-पिटक आनंद द्वारा लिखा गया जिसमें बुद्ध की मूल शिक्षाएं शामिल हैं

✓ विनय-पिटक उपाली द्वारा लिखा गया जिसमें संघ के नियम शामिल हैं

✓ **द्वितीय बौद्ध परिषद : 383 ई.पू**
स्थान- वैशाली
अध्यक्षता- सबकामीक
संरक्षक- काल अशोक
निष्कर्ष- संघ और विनय-पिटक का विभाजन
(a) स्थवीरवादिन (पुराने नियम, रूढ़िवादी)
(b) महा संघिका (नए नियम, उदारवादी)

✓ **तृतीय बौद्ध परिषद : 250 ई.पू**
जगह - पाटलिपुत्र
अध्यक्षता- मोगलीपुट्टा तिस्सा
संरक्षक- अशोक
निष्कर्ष- बौद्ध धर्म की तीसरी पुस्तक 'अभिदम्मा पिटक' का संकलन मोगलीपुत्त ने किया था।

✓ **बौद्ध परिषद : 78 ई**
जगह- कश्मीर
अध्यक्षता- वसुमित्र और अश्वघोष ने की
संरक्षक- कनिष्क
निष्कर्ष- बौद्ध धर्म का विभाजन
(a) हीनयान (रूढ़िवादी)
(b) महायान (उदार)

हिनायान

✓ हीनयान के अनुयायी बुद्ध को एक महान व्यक्ति (पवित्र) मानते हैं, भगवान नहीं।
✓ वे पवित्रता और ध्यान के जीवन में विश्वास करते हैं।
✓ उनका अंतिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है।
✓ वे मूर्ति पूजा नहीं करते बल्कि बुद्ध की मूल शिक्षाओं का पालन करते हैं।
✓ उन्होंने पाली को प्रचार भाषा के रूप में जारी रखा।

महायान

✓ महायान के अनुयायी बुद्ध को भगवान मानते हैं।
✓ वे पूजा, प्रार्थना और तपअंरव में विश्वास करते हैं।
✓ उनका अंतिम लक्ष्य स्वर्ग में जगह बनाने का प्रयास करना है।
✓ ये लोग बोधिसत्व के साथ बुद्ध की पूजा करते हैं।

KD Publication

✓ संस्कृत को उपदेशात्मक भाषा के रूप में अपनाय

बुद्ध से संबंधित प्रतीक

घटना		**प्रतीक**
जन्म	-	कमल एवं सांड
गृह-त्याग	-	घोड़ा
निर्वाण	-	पीपल का वृक्ष
प्रथम उपदेश	-	चक्र
मृत्यु	-	स्तूप

बौद्ध वास्तुकला।

✓ बरहुत स्तूप (मध्य प्रदेश)
✓ सांची स्तूप (मध्य प्रदेश)
✓ सारनाथ (उत्तर प्रदेश)
✓ नालंदा (बिहार)

बौद्ध गुफा

✓ बराबर गुफा (बिहार)
✓ भोज गुफा (पुणे)
✓ नासिक गुफा (महाराष्ट्र)
✓ कन्हारी गुफा (मुंबई)

KD Publication

Chapter 5

Jainism

✓ जैन शब्द का अर्थ होता है विजेता (एक व्यक्ति जो अपनी इच्छा पर विजय प्राप्त कर लेता है)

✓ जैन धर्म के अनुयायी 24 प्रचारकों की अवधारणा में विश्वास करते हैं जिन्हें 'तीर्थंकर' के रूप में जाना जाता है।

जैन धर्म के तीर्थंकर

क्रम संख्या	तीर्थंकर	प्रतीक चिन्ह
1.	आदिनाथ/ऋषभनाथ	वृषभ/सांड़ (बैल)
2.	अजितनाथ	हाथी
3.	सम्भवनाथ	घोड़ा
----	--------------------	-------
----	--------------------	-------
21.	नेमिनाथ	नील कमल
22.	अरिष्टनेमि	शंख
23.	पार्श्वनाथ	सांप (सर्प)
24.	महावीर	सिंह

जैन धर्म के पांच सिद्धांत

✓ लगभग 800 ई.पू. में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने जैन धर्म को बढ़ावा दिया और 4 प्रतिज्ञाओं का प्रचार किया।

1. 'अहिंसा' – हिंसा न करें
2. 'सत्य' – झूठ मत बोलो
3. 'अस्तेय' – चोरी न करें
4. 'अपरिग्रह' – संपत्ति का अधिग्रहण न करें।

✓ 570 ईसा पूर्व में महावीर ने पार्श्वनाथ की शिक्षा में 5वीं प्रतिज्ञा जोड़ी।

5. ब्रह्मचर्य– संयम का पालन करें।

✓ यह 5 प्रतिज्ञाएं मिलकर 'जैन धर्म के पांच सिद्धांत' या 'महाव्रत' कहलाते हैं।

महावीर का परिवार

पिता – सिद्धार्थ (जनत्रिका कबीले के मुखिया)
माता – त्रिशला
पत्नी – यशोदा (भीम्बिसल की राजकुमारी)
बेटी – प्रियदर्शनी या अनुजा।

महावीर की कहानी

✓ महावीर का जन्म 540 ईसा पूर्व में वज्जि महाजनपद के कुंडग्राम में हुआ था।

✓ 30 वर्ष की आयु में, महावीर के माता और पिता का निधन हो गया, इसलिए उन्होंने अपना घर छोड़ने का फैसला किया और पार्श्वनाथ के समाज में शामिल हो गए। उन्होंने वहां दो वर्ष बिताए और सच्चाई की तलाश में वहां से चले गए।

✓ महावीर अगले 10 वर्षों तक तपस्वी के रूप में भटकते रहे और अंत में जरिंभिकाग्राम (बिहार) पहुंचे और साल के पेड़ के नीचे ध्यान किया और 'कैवल्य' की प्राप्ति की (एक व्यक्ति जो जीवन की सच्चाई को जानता है) और 'वर्धमान महावीर' के रूप में प्रसिद्ध हुए।

KD Publication

- ✓ वर्धमान ने अपना पहला उपदेश **'राजगीर'** में अर्ध-मगधी भाषा में दिया और बाद में उन्होंने जैन संग की स्थापना की।
- ✓ 468 ईसा पूर्व में 72 वर्ष की आयु में महावीर ने 'पावापुरी' राजगीर (बिहार) में आत्म-भूख से 'निर्वाण' प्राप्त किया और उनकी मृत्यु हो गई
- ✓ महावीर की मृत्यु के बाद, उनके शिष्यों ने देश के विभिन्न हिस्सों में महावीर की शिक्षाओं का प्रसार किया।
- ✓ महावीर को जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

महावीर के विचार

- ✓ महावीर द्वैतवादी दर्शन में विश्वास करते थे अर्थात पदार्थ और आत्मा दो वस्तुएं होती हैं । पदार्थ नाशवान है और आत्मा शाश्वत या विकासवादी है।
- ✓ सभी जीवित प्राणियों में कुछ हद तक चेतना होती है और वे सभी दर्द महसूस करते हैं।
- ✓ वह पुर्न जन्म और 'कर्म' में विश्वास करते थे, पिछले कर्मों से मुक्त होने के लिए 'महाव्रत' का पालन करना चाहिए जिससे 'मोक्ष' की प्राप्ति की जा सके।
- ✓ उन्होंने वेदों की शिक्षा, रीति रिवाजों, ब्रह्मणों की सर्वोच्चता और वर्ण व्यवस्था को खारिज किया।
- ✓ उन्होंने भगवान के विचार को अस्वीकारा और उनके अनुसार केवल अच्छे कर्म ही आपको मोक्ष की प्राप्ति करा सकते हैं।

महावीर की शिक्षा।

महावीर ने त्रिरत्न का प्रचार किया।

1. सम्यक श्रद्धा - सत्य में विश्वास करना
2. सम्यक ज्ञान - वास्तविक ज्ञान
3. सम्यक आचरण - इन्द्रियों एवं कर्मों पर पूर्ण नियंत्रण

जैन धर्म परिषद

- ✓ **प्रथम जैन धर्म परिषद : 298 ई.पू**

  स्थान- पाटलिपुत्र (पटना)

  अध्यक्षता- स्थूलभद्र

  परिणाम:- 1. जैन धर्म का दो संप्रदायों में विभाजन
  (a) दिगंबर (b) श्वेतांबर

  2. 12 अंग साहित्य स्थूलभद्र द्वारा संकलित किए गए

- ✓ **द्वितीय जैन धर्म परिषद 512 ई**

  स्थान - वल्लभि

  अध्यक्षता - देवर्धि

  परिणाम- 12उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र संकलित किए गए।

जैन साहित्य

- ✓ जैन साहित्य को **'आगम'** कहा जाता है, जिसमे 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र, नन्दिसूत्र और अनुयोग सूत्र की गणना की जाती है।
- ✓ **भगवती सूत्र** में महावीर के जीवनी के बारे में उल्लेख किया गया है।

जैन धर्म वास्तुकला

1. जैन मंदिर - पार्श्वनाथ (खजुराहो)
2. उदयगिरी गुफा - उड़ीसा
3. एलोरा गुफा- महाराष्ट्र
4. पावापुरी गुफा
5. श्री सम्मेद शिखर - झारखंड

KD Publication

6
Chapter

MAHAJANPADA

छठी शताब्दी ईसा पूर्व सामाजिक-धार्मिक और राजनीतिक विकास का युग था और महाजनपद के रूप में शहरीकरण की स्थापना हो रही थी।

✓ किसी क्षेत्र का शहरीकरण एक समय लेने वाली प्रक्रिया है। महाजनपद के उदय के विभिन्न कारण हैं।

1. जनसंख्या में वृद्धि
2. लौह-अयस्क प्रौद्योगिकियों की खोज से औद्योगीकरण की स्थापना हुई।
3. चावल और कृषि उपज की अधिशेष खेती।
4. व्यापार, भूमि मार्ग, न्याय और प्रशासन के कारण राजनीतिक संगठन शक्तिशाली हो गए।

✓ वैदिक काल के अंत में, जब ये सभी घटनाएं समाज में सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ हो रही थीं तभी छोटे क्षेत्रों के एकीकरण या विलय से **'नगर'** और महानगर का निर्माण हुआ जो बाद में **'महाजनपद'** में बदल गए।

महाजनपद की विशेषताएं:-

1. शहरव का आकार काफी बड़ा था।
2. उचित जल निकासी और निपटान प्रणाली जीप।
3. वास्तुकला के लिए जली हुई ईंटों का उपयोग किया जाता था।
4. शहरों में केंद्रीय बाजार थे
5. महाजनपदों की मुख्य सड़कें नगरों या ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ी हुई थीं।
6. छिद्रित अंकित सिक्कों का प्रयोग व्यापार के लिए किया जाता था।
7. व्यापार मार्ग:-
   (क) उत्तरपथ:- तक्षशिला को राजगृह से जोड़ता है
   (बी) दक्षिणपथ:- प्रतिष्ठान को श्रावस्ती से जोड़ता है

राजधानी, राजा और वर्तमान स्थान के साथ महाजनपद की सूची:-

महाजनपद	राजधानी	राजा	वर्तमान स्थान
अंग	चंपा	ब्रह्मदत्त	बिहार में मोंगर और भागलपुर
मगध	राजगृह:	अजातशत्रु	पटना, गया और बिहार के शाहाबाद के कुछ हिस्सों में
काशी	काशी	बृहद्रथ:	वाराणसी
वत्स	कौशाम्बी	उदयन	इलाहाबाद, मिर्जापुर। ऊपर में
कोशल	श्रावस्ती	प्रसेनजीत	पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद, गोंडा, बहराइच
सौरसेना	मथुरा	अवंतीपुर	मथुरा
पांचाल	अधिछत्र और काम्पिल्य	केसीन दलभ्या	पश्चिमी यूपी
कुरु	इंद्रप्रस्थ	कौरवों	हरियाणा और दिल्ली।

महाजनपद	राजधानी	राजा	वर्तमान स्थान
मत्स्य	विराटनगर	विराट	राजस्थान में अलवर, भरतपुर और जयपुर।
चेदि	सुखिमती	शिशुपाल	बुंदेलखंड क्षेत्र।
अवंती	उज्जैन	प्रद्योत	मलावा
गांधार	तक्षशिला	पुष्करसरीन	पाकिस्तान का पश्चिमी भाग और पूर्वी अफगानिस्तान।
कम्बोज	राजपुर	चित्रांगदा	पाकिस्तान के हजारा जिले
वज्जि	वैशाली	चेतक	बिहार में नदी बेसिन गंगा के उत्तर में
असाका	पोटाली	अस्माक	नर्मदा और गोदावरी नदियों के बीच।
मल्ला	कुशीनगर	सुजाता	पूर्वी यूपी में देवरिया, बस्ती, गोरखपुर और सिद्धार्थनगर।

महाजनपद का मौर्य साम्राज्य में परिवर्तन।

1. वत्स महाजनपद

राजा - उदयन।

- उदयन के अवंती, अंग और मगध महाजनपद के साथ वैवाहिक संबंध थे।
- उदयन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **'बेधिकुमार'** एक कमजोर शासक था इसलिए वत्स महाजनपद पर अवंती महाजनपद के राजा **'प्रद्योत'** ने कब्जा कर लिया था।

2. अवंती महाजनपद

राजा - प्रद्योत:

- वत्स पर कब्जा करने के बाद **'प्रद्योत'** का विवाह उदयन की बेटी से हुआ।
- 'प्रद्योत' की मृत्यु के बाद उसका पुत्र 'पलाक' भी एक कमजोर उत्तराधिकारी था इसलिए अवंती महाजनपद पर कोसल महाजनपद के राजा प्रसन्नजीत ने कब्जा कर लिया था।

3. कौशल महाजनपद

राजा- प्रसन्नाजीत

- मगध और कौशल महाजनपद के वैवाहिक संबंध थे।
- प्रसन्नजीत का विवाह मगध महाजनपद के बिंबिसार की पुत्री से हुआ था और बिंबिसार का विवाह कोसल महाजनपद के प्रसन्नजीत की बहन 'कोशल देवी' से हुआ था।
- प्रसन्नजीत की मृत्यु के बाद उसके पुत्र 'विदुभ' ने कोसल पर शासन किया लेकिन बाद में मगध महाजनपद के बिंबिसार ने कोसल पर कब्जा कर लिया।

4. मगध महाजनपद

राजा- बिंबिसार

- मगध के महाजनपद पर हर्यक वंश (500-413 ईसा पूर्व) का शासन था, उसके बाद शिशुनाग वंश (413 - 345 ईसा पूर्व) और नंद वंश (345 - 321 ईसा पूर्व) का शासन था।
- अब मगध में वत्स, अवंती, कोसल और मगध महाजनपद का क्षेत्र शामिल है।

हर्यक राजवंश (500 ईसा पूर्व - 413 ईसा पूर्व)

राजा- बिंबिसार

✓ बिंबिसार ने ब्रह्मदत्त को हराकर अंग महाजनपद पर कब्जा कर लिया और उसे अपने पुत्र अजातशत्रु के अधीन कर दिया।

✓ बिंबिसार ने 3 शादियां कीं और नोम वैवाहिक संबंधों ने उन्हें अपार शक्ति प्रदान की।

1. पहली पत्नी 'कोसला देवी', कोसल महाजनपद की राजकुमारी।
2. दूसरी पत्नी 'चेलेना', वज्जि महाजनपद के वैशाली की राजकुमारी ।
3. तीसरी पत्नी 'चेमा', मद्रा कबीले (पंजाब के सबसे शक्तिशाली कबीले) के मुखिया की बेटी।

KD Publication

- ✓ अजातशत्रु ने अपने पिता की हत्या कि और मगध का शासक बना।

अजातशत्रु (494 ईसा पूर्व - 462 ईसा पूर्व)

- ✓ अजातशत्रु ने वज्जि के लिच्छवी को हराकर वज्जि महाजनपद पर कब्जा कर लिया।
- ✓ वह भारतीय इतिहास का पहला राजा था जिसने अपने पिता की हत्या करके साम्राज्य हासिल किया था।
- ✓ अजातशत्रु का पुत्र 'उदयिन' भी एक कमजोर उत्तराधिकारी था और मगध पर शिशुनाग ने कब्जा कर लिया और हरक वंश का अंत हो गया।

शिशुनाग राजवंश (413 ईसा पूर्व -345 ईसा पूर्व)

राजा- शिशुनाग

- ✓ शिशुनाग ने उदयिन को हराकर हरक वंश का अंत किया।
- ✓ शिशुनाग की मृत्यु के बाद उसका पुत्र 'कालसोक' सत्ता में आया और उसने दूसरी बौद्ध परिषद को कायम रखा लेकिन बाद में नंद वंश के 'महापद्म नंद' ने उसकी हत्या कर दी।

नंद वंश (385 ईसा पूर्व-321 ईसा पूर्व)

राजा- महापद्म नंद

- ✓ नंदों को भारत का पहला साम्राज्य निर्माता माना जाता है।
- ✓ महापद्म नंदा के बाद उनके 8 पुत्र आए और नंद वंश के अंतिम राजा धनानंद थे।

KD Publication

Chapter 7
Foreign Invasion in India

फारसी आक्रमण (588 ई.पू.-327 ई.पू.)

1. **साइरस (588 ईसा पूर्व-530 ईसा पूर्व)**
   - छठी शताब्दी के दौरान ईरान में 'जोरोस्टर' धर्म का उदय हुआ और साइरस 'जोरोस्टर' का अनुयायी था।
   - उसने यूरोप में 'अनातोलिया और बेबीलोन' पर विजय प्राप्त की, फिर उसने काबुल क्षेत्र से भारत में प्रवेश किया और गांधार महाजनपद पर विजय प्राप्त की।
   - साइरस ने 558 ई. पू. से 529 ई. पू. तक शासन किया।
   - उसकी मृत्यु कैस्पियन क्षेत्र में डरबाइक नामक एक पूर्वी जनजाति के विरूद्ध लड़ते हुए हई।
   - साइरस के मृत्यु के बाद उसका पुत्र कम्बुजीय द्वितीय साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना।
2. **कम्बुजीय (530 ईसा पूर्व-522 ईसा पूर्व):**
   - वह साइरस का पुत्र था और उसने गांधार पर शासन किया था।
3. **दारा प्रथम (522 ईसा पूर्व-486 ईसा पूर्व)**
   - वह साइरस का पोता था और उसने भारत के पश्चिमी भाग (सिंधु और सिंध क्षेत्र) पर विजय प्राप्त की।
   - दारा प्रथम ने **कम्बोज** एवं **गंधार** पर भी विजय हासील किया था।
   - दारा प्रथम के मृत्यु के बाद उसका पुत्र जरक्सीज साम्राज्य का शासक बना।
4. **जरक्सीज (465 ईसा पूर्व - 456 ईसा पूर्व)**
   यूनानियों के साथ जरक्सीज की प्रतिद्वंद्विता थी इसलिए उसने अपनी सेना में भारतीय सैनिकों को नियुक्त किया और यूनानियों के खिलाफ युद्ध लड़ें।
5. **दारा III (456 ईसा पूर्व-327 ईसा पूर्व)**
   - वह अंतिम फारसी शासक था जिसने भारत के उत्तर-पश्चिम भाग (गांधार और सिंधु क्षेत्र) पर शासन किया था।
   - **आरबेला के युद्ध** में सिकंदर ने दारा तृतीय को बुरी तरह परास्त किया और उसकी सेना को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इसी पराजय के साथ ही भारत से पारसीक (ईरानी) आधिपत्य की समाप्ति हुई।

भारत पर फारसी आक्रमण का प्रभाव:-

1. भारत-ईरान व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हुई।
2. भारतीय समाज में सिग्लॉइड और डेल्टॉइड सिक्के प्रचलन में आए।
3. भारतीयों को फारसी सेना में भर्ती किया गया।
4. भारतीय समाज में फारसी लिपि 'खरोष्ठी' का प्रचलन हुआ।
5. फारसी कला ने भी मौर्य संस्कृति को प्रभावित किया था
6. भारतीय विद्वान एवं दार्शनिक पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान से परिचित हुए।

यूनानी आक्रमण (327 ईसा पूर्व-325 ईसा पूर्व)

सिकंदर

✓ ईरानी आक्रमण के बाद भारत को यूनानी आक्रमणकारी सिकंदर का सामना करना पड़ा।

✓ **सिकंदर** मेसीडोन के क्षत्रप फिलिप द्वितीय का पुत्र था।

✓ सिकंदर का जन्म **मकदूनिया** में 356 ई. पू. में हुआ।

KD Publication

- ✓ फिलिप द्वितीय 359 ई. पू. में **मकदूनिया** का शासक बना।
- ✓ पिता के मृत्यु के बाद सिकंदर 20 वर्ष की उम्र में 336 ई. में यूनान के राज्य मकदूनिया का शासक बना।
- ✓ वह 'मैसेडोनिया' (ग्रीस) से 329 ईसा पूर्व में पूरी दुनिया को जीतने के लिए निकला था।
- ✓ पहले उसने ईरान और फारसी क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की और फिर भारत की ओर बढ़ा।
- ✓ उन्होंने हिंदुकुश क्षेत्र के माध्यम से भारत में प्रवेश किया और 327 ईसा पूर्व में - दारा तृतीय द्वारा शासित भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- ✓ दारा तृतीय को हराने के बाद, उसने सिंधु नदी को पार किया और झेलम का युद्ध अथवा वितस्ता का युद्ध अथवा हाईडेस्पीच का युद्ध में पोरस को हराया।
- ✓ सिकंदर ने पोरस के बहादूरी से प्रभावित होकर उसके राज्य को वापस कर दिया।
- ✓ फिर उसने झेलम और चिनाब नदी को पार किया और राजा ग्लेनसाई और राजा संभूति को हराया।
- ✓ भारत विजय करने के उद्देश्य से सिकंदर अपने सैनिकों के साथ पूर्व की ओर बढ़ना चाहता था, किन्तु सिकंदर के सैनिक **व्यास नदी** के आगे बढ़ने से मना कर दिया क्योंकि सैनिकों को गृहवियोग सता रहा था।
- ✓ सिकंदर का जब सभी प्रयास निष्फल हो गया तो सिकंदर ने सैनिकों को व्यास नदी से वापस यूनान जाने का आदेश दिया।
- ✓ वापसी के समय सिकंदर की सेना **सिंधु नदी** के मुहाने पर दो भागों में विभक्त हो गई, पहली सेना **नियार्कस** के नेतृत्व में जलमार्ग से और दूसरी सेना **क्रेटेरस** के नेतृत्व में स्थलमार्ग से प्रस्थान किया।
- ✓ मैसेडोनिया जाने से पहले सिकंदर ने अपने अधिग्रहीत क्षेत्रों को 3 भागों में विभाजित किया और अपने 3 राज्यपालों को इन क्षेत्रों का प्रमुख नियुक्त किया।
  - (a) पीथन - सिंध क्षेत्र
  - (b) फिलिप - काबुली
  - (c) ऑक्सीरेट्स- हिंदुकुश क्षेत्र
- ✓ 323 ई. पू. में **बेबीलोन** में सिकंदर का मृत्यु हो गया।
- ✓ भारतीय भू-भाग पर सिकंदर का अन्तिम विजय **'पाटल'** राज्य के विरूद्ध थी।
- ✓ भारत पर सिकंदर का आक्रमण प्रथम यूरोपीय एवं दूसरा विदेशी आक्रमणकारी था।
- ✓ सिकंदर भारत में 19 महीने तक रहा था।

KD Publication

8 Chapter

THE MAURYA EMPIRE
(325 BC – 183 BC)

भारत के प्रथम साम्राज्य की जानकारी विभिन्न साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त होती है।

(a) मेगस्थनीज द्वारा **'इंडिका'**।

(b) विष्णुगुप्त (चाणक्य) द्वारा **'अर्थशास्त्र'**

- ✓ **'चाणक्य'** ने नंद वंश का अंत किया और अपने शिष्य चंद्रगुप्त मौर्य को मगध का नया राजा बनाया।
- ✓ इस अवधि के दौरान सिकंदर भारत पर आक्रमण कर रहा था इसलिए चाणक्य ने पहले भारत को विदेशी आक्रमण से बचाने और फिर नंद वंश का अंत करने का फैसला किया।

चंद्रगुप्त मौर्य

- ✓ चंद्रगुप्त का जन्म पुष्पपुरा (बिहार) में हुआ था लेकिन बाद में चाणक्य उन्हें तक्षशिला ले गए।
- ✓ 321 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त ने चाणक्य की मदद से घनानंद की हत्या की और नंद वंश को समाप्त करके मगध का राजा बन गया।
- ✓ 316 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त ने सिंध क्षेत्र पर शासन करने वाले **'पीथन'** (सिकंदर का राज्यपाल) को हराया।
- ✓ 305 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त ने यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को हराया, जिसने एक विशाल क्षेत्र को चंद्रगुप्त के अधीन समर्पण कर दिया और अपनी बेटी 'हेलेना' का विवाह चंद्रगुप्त से कर दिया।
- ✓ मेगस्थनीज एक यूनानी राजदूत था जिसे सेल्यूकस निकेटर ने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था।
- ✓ चंद्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में पहली बार पूरा उत्तर भारत एकजुट हुआ।
- ✓ व्यापार फला-फूला, कृषि को विनियमित किया गया, बाटों और मापों का मानकीकरण किया गया और धन का उपयोग किया जाने लगा।
- ✓ चन्द्रगुप्त मौर्य **जैन धर्म** का अनुयायी था और उसने जैन गुरू **भद्रवाहु** से जैनधर्म की दीक्षा ली थी।
- ✓ उसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य श्रवण बेलगोला (मैसूर) चले गए और चंद्रगिरी पहाड़ी पर 298 ई. पू. में उपवास द्वारा प्राण त्याग दिए।
- ✓ चंद्रगुप्त मौर्य ने अपना राज्य अपने पुत्र बिन्दुसार को दे दिया।

बिन्दुसार

- ✓ चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार 298 ई.पू. में मौर्य साम्राज्य का शासक बना।
- ✓ यूनानी लेखक ने बिन्दुसार को **'अमित्रोकेडीज'** कहा है जिनका संस्कृत रूपांतर **'अमित्रघात'** (शत्रुओं को नष्ट करने वाला) होता है।
- ✓ सेल्यूकस के उत्तराधिकारी एण्टियोकस प्रथम ने अपना राजदूत **डायनेकस** को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
- ✓ बिंदुसार ने शुरू में बौद्ध धर्म का पालन किया लेकिन बाद में उन्होंने आजीविका को संरक्षण दिया।
- ✓ बिन्दुसार की मृत्यु लगभग 273 ई.पू. में हुई थी।

अशोक

- ✓ बिन्दुसार के मृत्यु के बाद अशोक मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- ✓ अशोक बिन्दुसार के शासन काल में अवंति का उपराजा (वायसराय) था।
- ✓ **सिंहली अनुश्रुतियों** के अनुसार अशोक अपने 99 भाईयों की हत्या कर राजसिंहासन प्राप्त किया।
- ✓ अशोक के अभिलेखों में उसे **'देवानामपिय'** **'देवानामपियदशि'** (देवताओं का प्रिय) और राजा आदि की उपाधियों से संबोधित किया गया है।
- ✓ अशोक के अधीन मौर्य साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया था और पहली बार, दक्षिण को छोड़कर पूरा

KD Publication

उपमहाद्वीप शाही नियंत्रण में था।

- ✓ उसने दिग्विजय की नीति का पालन किया।
- ✓ अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग का युद्ध लड़ा और लगभग 2 लाख लोगों की हत्या और कई अन्य लोगों को घायल किया।
- ✓ कलिंग युद्ध की हिंसा एवं नरसंहार की घटनाओं ने अशोक के हृदय में महान परिवर्तन उत्पन्न कर दिया, उसका हृदय मानवता के प्रति दया एवं करूण से उद्वेलित हो गया।
- ✓ यही से सैन्य विजय और दिग्विजय का काल समाप्त हुआ तथा आध्यात्मिक विजय और धम्म विजय का काल प्रारंभ हुआ।
- ✓ कलिंग युद्ध के बाद उन्होंने मोग्गलीपुत्ततिस्सा के प्रभाव से बौद्ध धर्म को अपनाया और 250 ईसा पूर्व में उन्होंने पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध परिषद का संरक्षण किया।
- ✓ अशोक भारतीय इतिहास में पहला शासक था जिसने राजनीतिक जीवन में **हिंसा के त्याग का सिद्धांत** सामने रखा।
- ✓ अशोक के पुत्र महेन्द्र ने श्रीलंका के शासक तिस्स को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

मौर्य साम्राज्य की विशेषताएं

- ✓ चन्द्रगुप्त न केवल एक महान विजेता ही था अपितु एक उच्चकोटि का प्रशासक भी था।
- ✓ अशोक एक सफल धर्म प्रचारक होने के साथ-साथ एक कुशल प्रशासक भी था।
- ✓ चाणक्य के **'अर्थशास्त्र'** मेगास्थनीज की **'इंडिका'** और अशोक के अभिलेखों से मौर्य प्रशासन की जानकारी मिलती है
- ✓ चाणक्य ने मौर्य प्रशासन के लिए राज्य में **सप्तांग सिद्धांत** का प्रतिपादन किया, जिसमें राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड एवं मित्र शामिल थे।
- ✓ मौर्य शासन व्यवस्था का स्वरूप **राजतंत्रात्मक** था।
- ✓ मौर्य साम्राज्य में भर्ती होने वाले कर्मचारियों को सिक्कों के रूप में नकद वेतन मिलता था।
- ✓ मेगस्थनीज ने अपनी इंडिका में मौर्य समाज में 7 जातियों का उल्लेख किया था। वे दार्शनिक, किसान, सैनिक, चरवाहे, कारीगर, मजिस्ट्रेट और पार्षद थे।
- ✓ **केंद्रीय प्रशासन**
  - राजा की सहायता के लिए अनुभवी सलाहकारों का एक समूह होता था।
  - केन्द्रीय प्रशासन अनेक विभागों में बंटा हुआ था, प्रत्येक विभाग को **'तीर्थ'** कहा जाता था।
- ✓ **रक्षा प्रशासन**
  - मौर्य साम्राज्य में सेना को 5 समूहों या 5 बटालियन में विभाजित किया गया था (सैनिक, तीरंदाज, घुड़सवार, हाथी और नौसेना) ।
  - मौर्य कालीन सैन्य व्यवस्था का प्रधान **राजा** होता था।
  - सैन्य मंत्रालय का प्रधान **'सेनापति'** होता था, सेनापति का मुख्य कार्य था- सैनिकों की नियुक्ति, प्रशिक्षण, प्रबंध, वेतन एवं अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था करना था।
- ✓ **नगर और जिला प्रशासन-व्यवस्था**
  - इसमें 30 अधिकारी होते हैं जो 6 समितियों में विभाजित होते थे। प्रत्येक समिति को अलग-अलग विभाग दिए गए थे (स्वास्थ्य, व्यापार, कराधान, औद्योगीकरण, परिवहन, कृषि) ।
  - नगर में अनुशासन रखने तथा अपराधि मनोवृति का दमन करने हेतु पुलिस व्यवस्था थी, जिन्हें **'सक्रिय'** कहा जाता था।
- ✓ **न्याय व्यवस्था:-**
  - मौर्यकालीन न्याय व्यवस्था का सर्वोच्च **न्यायधीश** होता था।
  - प्रत्येक अपराध के लिए अत्यधिक सजा के प्रावधान के साथ अलग दीवानी अदालत और आपराधिक अदालत के साथ न्यायिक प्रणाली अच्छी तरह से स्थापित थी।

मौर्य साम्राज्य के पतन

- ✓ अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य के पतन में तेजी आ गयी थी, इसका एक स्पष्ट कारण कमजोर राजाओं का उत्तराधिकार था।
- ✓ 180 ईसा पूर्व में अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा कर दी गयी, इसके साथ ही मौर्य साम्राज्य के पतन की शुरूआत हो गयी।

KD Publication

9

Chapter

POST MAURYAN PERIOD
(185 BC– 250 AD)

इस काल को 'काला युग अथवा अंधाकर काल' के रूप में जाना जाता है क्योंकि राजनीतिक संकट पैदा हो गए थे और एक बड़ा साम्राज्य का अंत हो गया था।

मौर्योत्तर काल में विभिन्न राजवंश मौजूद थे और साथ ही साथ विदेशी आक्रमण भी हुए।

मौर्योत्तर काल में देशी राजवंश।

1. शुंग राजवंश (185 ई० पू०-72 ई० पू०)
2. कणव वंश (72 ई० पू० -27 ई० पू०)
3. आंध्र सातवाहन राजवंश (27 ई० पू०-250 ईस्वी)

मौर्योत्तर काल में विदेशी आक्रमण

1. बैक्ट्रियन या इंडो यूनानी
2. सीथियन या शक
3. पार्थियन या पहलव
4. यूचिस या कुषाण।

मौर्योत्तर काल के राजवंश

1. शुंग राजवंश (185 ईसा पूर्व- 72 ईसा पूर्व)

- पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य साम्राज्य के अंतिम राजा 'बृहद्रथ' की हत्या की और 185 ई०पू० में शुंग राजवंश की स्थापना की।
- पुष्यमित्र ने ग्रीक आक्रमणकारी बैक्ट्रियन राजा 'डेमेट्रियस' को पराजित किया।
- पुष्यमित्र के शासन काल में बौद्ध धर्म की उपेक्षा वैदिक धर्म का अधिक प्रभुत्व स्थापित हुआ था।
- इस काल में पूजा, यज्ञ, बलि की प्रथा पुन: अस्तित्व में आ गई।
- इसी काल में **'संस्कृत भाषा'** का पुनरुत्थान हुआ।
- पुष्यमित्र की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अग्निमित्र शुंग वंश का राजा बना।
- वसुमित्र शुंग 151 ई०पू० में सत्ता में आया और ग्रीक आक्रमणकारी 'मेनेंडर' (मिलिंडा) को पराजित किया था।
- देवभूति शुंग वंश के अंतिम राजा थे, 72 ई० पू० में उनके मंत्री **'वासुदेव कण्व'** ने उनकी हत्या कर दी थी और कण्व वंश का साम्राज्य स्थापित किया।

2. कण्व वंश (72 ई०पू० से 27 ई०पू०)

- अन्तिम शुंग शासक देवभूति को उसके अमात्य वासुदेव कण्व ने 72 ई०पू० में हत्या कर **'कण्व वंश'** की स्थाना की।
- पुराणों के अनुसार कण्व वंश में मात्र 4 शासक हुए वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण और सुशर्मन।
- शिमुक ने 27 ई० पू० में अन्तिम कण्व शासक सुशर्मन की हत्या कर दी और आंध्र-सातवाहन वंश की स्थापना की।

3. आंध्र सातवाहन राजवंश (27 ई०पू०- 250 ईस्वी):

- शिमुक ने 27 ई०पू० में अन्तिम कण्व शासक सुशर्मन की हत्या करने पश्चात् आंध्र-सातवाहन वंश की स्थापना की।
- शिमुक ने अनेक जैन एवं बौद्ध मंदिरों, चैत्यों का निर्माण करवाया था।
- शिमुक के पश्चात उसका छोटा भाई कान्ह (कृष्ण) राजा बना और उसने अपना साम्राज्य नासिक तक बढ़ाया था।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी सातवाहन वंश के सबसे महत्वपूर्ण राजा थे जिन्होंने सातवाहनों की शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाया।
- वे भारत में सीसे के सिक्के पेश करने वाले पहले व्यक्ति थे।

मौर्योत्तर काल में विदेशी आक्रमण

1. बैक्ट्रियन या इंडो-यूनानी (190 ई०पू०- 145 ई०पू०)

- मौर्य साम्राज्य के पतनोपरांत भारत पर पश्चिमोत्तर से पुन: विदेशियों के आक्रमण प्रारम्भ हो गए।

KD Publication

- इनमें सर्वप्रथम भारत आने वाले बैक्ट्रिया के हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक) शासक थे, उन्होंने भारत के कुछ प्रदेशों को जीता था
- वे भारत में सोने के सिक्के जारी करने वाले पहले व्यक्ति थे।

डेमेट्रियस

- डेमेट्रियस 190 ई०पू० के लगभग यवन साम्राज्य की उत्तराधिकारी बना।
- डेमेट्रियस ने हिन्दुकुश की पहाड़ियों को पार कर सिंध तथा पंजाब के प्रदेशों की विजय की।
- वह पुष्यमित्र शुंग द्वारा पराजित किया गया था

यूक्रेटाइड्स

- यूक्रेटाइड्स ने बैक्ट्रिया में विद्रोह कर दिया जिसके बाद यूक्रेटाइड्स और डेमेट्रियस के बीच युद्ध हुआ जिसमें डेमेट्रियस पराजित हुआ।
- यूक्रेटाइड्स ने डेमेट्रियस की मृत्यु के बाद उसके कुछ भारतीय प्रांतों को भी जीत लिया था।

मेनाण्डर

- इण्डो-ग्रीक शासकों में मेनाण्डर का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध था।
- मेनाण्डर बौद्ध साहित्य में **'मिलिंद'** नाम से प्रसिद्ध था। वह एक शक्तिशाली एवं न्यायप्रिय शासक था।
- वह विद्या और कला का प्रेमी था
- वसुमित्र शुंग ने मेनाण्डर को भारत में हराया था।

2. शक वंश या सीथियन

- यूनानियों के बाद शक भारत में आये। उन्होंने यूनानियों से अधिक भाग पर नियंत्रण किया।
- शक मूलतः मध्य एशिया के निवासी थे।
- भारत में शक पूर्वी ईरान से होकर आये थे।
- उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेशों से यवन-सत्ता को समाप्त कर उत्तरापथ एवं पश्चिमी भारत के भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया।
- इस अवधि के दौरान मथुरा के राजा 'राजुल' को उज्जैन के राजा 'अंबावती' ने पराजित किया और इस जीत के बाद अंबावती ने खुद को 'विक्रमादित्य' घोषित किया और 57 ई०पू० में 'विक्रम संवत' नाम का एक नया युग या कैलेंडर शुरू किया।
- रुद्रदामन- प्रथम शक वंश का सबसे शक्तिशाली राजा था।

3. पार्थियन या पह्लवः-

- पश्चिमोत्तर भारत में शकों के बाद पार्थियन (पह्लव) भारत आये।
- ये मूलतः पार्थिया (ईरान) के निवासी थे।
- पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मिथ्रदात प्रथम था।
- भारत में पहला पार्थियन शासक **'माउस'** है।
- इस वंश का सबसे प्रतापी राजा मिथ्रदात द्वितीय था।
- उसने शकों को पराजित कर सीस्तान और कांधार पर अधिकार कर लिया।
- **गोण्डोफर्नीज** पह्लव वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा था। इसी के शासन-काल में ईसाई धर्म का प्रचारक **'सेंट टॉमस'** भारत आया था।

4. यूचिस या कुषाणः- (55 ईस्वी- 240 ईस्वी)

- वे चीन क्षेत्र के यूची जनजाति के लोग थे।
- कुजुल कडफिसेस ने उत्तर के पर्वतों को पार करते हुए भारतीय उपमहाद्वीपों की सीमा में प्रवेश किया।
- कुजुल कडफिसेस ने पह्लवों को पराजित कर काबुल और कांधार पर अधिकार कर लिया।
- कुजुल कडफिसेस की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विम कडफिसेस कुषाण वंश का राजा बना।
- विम कडफिसेस के पश्चात कनिष्क कुषाण वंश की गद्दी पर बैठा।
- कनिष्क कुषाण शासकों में सबसे योग्य एवं महान था।
- वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था और उसने 78 ई. में कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया था।
- 78 ई. में कनिष्क ने एक युग या कलैण्डर की शुरुआत की जिसे **'शक संवत'** के नाम से जाना जाता है।
- 'शक संवत' भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।
- भारत में शुद्ध सोने का सिक्का लाने वाले पहले कुषाण थे।
- कनिष्क की मृत्यु के बाद, कुषाण वंश कमजोर हो गया और उनके सामंत 'गुप्त' प्रमुख हो गए जिन्होंने कुषाण वंश का अंत करके गुप्त साम्रज्य की स्थापना की।

KD Publication

10 Chapter

THE AGE OF THE GUPTAS
(320 BC – 550 BC)

गुप्त वंश

श्रीगुप्त	240 ई०	–	280 ई०
घटोत्कच	280 ई०	–	319 ई०
चंद्रगुप्त प्रथम	319 ई०	–	335 ई०
समुद्रगुप्त	335 ई०	–	375 ई०
रामगुप्त	375 ई०	–	380 ई०
चंद्रगुप्त द्वितीय	380 ई०	–	415 ई०
कुमारगुप्त	415 ई०	–	454 ई०
स्कन्दगुप्त	454 ई०	–	475 ई०

विष्णुगुप्त – गुप्त वंश के अंतिम राजा

मौर्य साम्राज्य के पतन के लगभग 500 साल बाद, मगध में गुप्त नामक एक नए राजवंश का उदय हुआ और उसने भारत के बड़े हिस्से पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया हालाँकि उनका साम्राज्य मौर्यो जितना बड़ा नहीं था फिर भी गुप्तो ने उत्तर भारत में रजनीतिक एकता स्थित करने में सफला प्राप्त की।

- ✓ इस काल को प्राचीन भारत का 'शास्त्रीय युग' या 'स्वर्ण युग' भी कहा जाता है।
- ✓ वायुपुराण के अनुसार, गुप्ता वैश्य जाति के थे और कुषाणों के अधीन सामंत (जमींदार) के रूप में काम करते हैं।
- ✓ कनिष्क की मृत्यु के बाद, कुषाण वंश कमजोर हो गया और गुप्तों ने कुषाण साम्राज्य पर एक नया साम्राज्य स्थापित किया
- ✓ गुप्ता शासकों ने अपनी सत्ता का केंद्र प्रयाग को बनाया था।

श्रीगुप्त (240 ई०– 280 ई०)

- ✓ वह गुप्त वंश का संस्थापक था।
- ✓ वह पहले राजा थे जिन्होंने अपने नाम के आगे 'महाराज' की उपाधि का प्रयोग किया था।

घटोत्कच गुप्त (280 ई०– 319 ई०)

- ✓ श्रीगुप्त ने अपने पुत्र घटोत्कच गुप्त को गुप्तवंश का राजा बनाया।
- ✓ इसने भी 'महाराज' की उपाधि धारण की।

चंद्रगुप्त प्रथम (319 ई० –335 ई०)

- ✓ घटोत्कच के पश्चात उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंश का राजा बना।
- ✓ वह 'महाराजाधिराज' की उपाधि प्रयोग करने वाला पहला गुप्त शासक था ।
- ✓ चंद्रगुप्त प्रथम ने मिथिला के शासक लिच्छवी वंश के शक्तिशाली परिवार के साथ वैवाहिक गठबंधन करके अपने राज्य को मजबूत किया । लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से उनके विवाह ने उन्हें अपार शक्ति, संसाधन और प्रतिष्ठा प्रदान की।
- ✓ 319 ई. में उन्होंने एक नया कैलेंडर या युग **गुप्त संवत** शुरू किया

समुद्रगुप्त (335 ई० – 375 ई०)

- ✓ चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त गुप्त वंश का शासक बना और वह गुप्त वंश का सबसे महान राजा था।
- ✓ उसे कई उपाधियाँ मिलीं
  - (a) लिच्छविदोहत्रा (लिच्छवी राजकुमारी का पुत्र)
  - (b) अश्वमेघकार्ता
  - (c) भारत का नेपोलियन (विन्सेंट स्मिथ द्वारा)
  - (d) कविराजी
- ✓ उनके शासनकाल का सबसे विस्तृत और प्रामाणिक अभिलेख उनके दरबारी कवि हरिसेना द्वारा रचित इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में संरक्षित है।
- ✓ समुद्रगुप्त विजेता के साथ-साथ कवि, संगीतज्ञ और विद्या का संरक्षक था।

KD Publication

- ✓ समुद्रगुप्त ने 6 प्रकार की **स्वर्ण मुद्राएं**- गरुड़, परशु, धनुर्धर, अश्वमेघ, वीणासरण और व्याघ्रहन्ता चलवाया था, जिनमें गरुड़ मुद्राएं सर्वाधिक लोकप्रिय था।
- ✓ समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर **अश्वमेघ पराक्रम** और उसे **वीणा वादन** करते हुए दिखाया गया है।
- ✓ समुद्रगुप्त की दिग्विजय का **उद्देश्य** 'संपूर्ण पृथ्वी को जीतना' था।
- ✓ समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र रामगुप्त गुप्ता वंश का शासक बना

चंद्रगुप्त-द्वितीय (380 ई० - 415 ई०)

- ✓ चंद्रगुप्त-द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।
- ✓ उसने शकों को पराजित किया और उसे **सकारी** के नाम से जाना जाने लगा।
- ✓ उन्हें **देवभूति** के नाम से भी जाना जाता है।
- ✓ वह चांदी और तांबे के सिक्के जारी करने वाले पहले शासक थे।
- ✓ दिल्ली में कुतुब मीनार के पास बना लोहे के खंभों का शिलालेख उन्हीं के द्वारा बनवाया गया था।
- ✓ 399 ई० में, एक चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान भारत आया था और उसने 'फू-कू-की' पुस्तक लिखी और उसे चंद्रगुप्त-द्वितीय के दरबार में राजदूत नियुक्त किया गया था।
- ✓ चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में 9 विद्वानों की एक मण्डली निवास करती थी जिसे नवरत्न कहा गया है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के नवरत्न और उनके क्षेत्र

क्र.स.	रत्न	क्षेत्र
1.	कालिदास	नाटक व काव्य
2.	क्षपणक	ज्योतिष विद्या
3.	धनवंतरी	चिकित्सा
4.	वराहमिहिर	ज्योतिष विज्ञान
5.	शंकु	वास्तुकला
6.	अमर सिंह	शब्दकोष रचना
7.	हरिसेन	कवि
8.	वेतालभट्ट	जादू
9.	वरुचि	व्याकरण

कुमारगुप्त प्रथम (415 ई० - 454 ई०)

- ✓ चंद्रगुप्त प्रथम के बाद उसका सबसे बड़ा पुत्र कुमारगुप्त प्रथम गुप्ता वंश का राजा बना
- ✓ उसने महेंद्रादित्य की उपाधि धारण की।
- ✓ कुमारगुप्त प्रथम ने नालंदा विश्वविद्यालय (प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय) की स्थापना की थी।
- ✓ उसके शासनकाल के अंतिम वर्षों में तुर्क-मंगोल की जनजाति हूणों के आक्रमण से साम्राज्य की शांति और समृद्धि भंग हुई थी। हूणों के साथ युद्ध के दौरान कुमारगुप्त की मृत्यु हुई थी।

स्कंदगुप्त (454 ई० -475 ई०)

- ✓ कुमारगुप्त-प्रथम के बाद उसका पुत्र स्कंदगुप्त गुप्त वंश का शासक बना।
- ✓ उसने हूणों को पराजित किया था।
- ✓ स्कंदगुप्त ने जूनागढ़ के सुदर्शन झील के पास भगवान विष्णु मंदिर का निर्माण कराया था।
- ✓ उनकी मृत्यु के बाद, गुप्तों के महान दिन समाप्त हो गए। साम्राज्य जारी रहा लेकिन केंद्रीय नियंत्रण कमजोर हो गया और स्थानीय राज्यपाल वंशानुगत अधिकारों के साथ सामंत राजा बन गए।

KD Publication

10 Chapter

THE AGE OF THE GUPTAS
(320 BC – 550 BC)

1. पुष्यभूति या वर्धन वंश (575 ई० - 647 ई०)

✓ 'पुष्यभूति वंश' या 'वर्धन वंश' का संस्थापक **पुष्यभूति** था।

✓ यह उत्तरी भारत का अंतिम हिंदू राजवंश था।

✓ गुप्त राजाओं की दुर्बलता का लाभ उठाकर पुष्यभूति वंश के राजाओं ने हरियाणा के अम्बाला जिले के थानेश्वर में अपनी सत्ता स्थापित कर ली और थानेश्वर को अपनी राजधानी बनायी।

प्रभाकर वर्धन

- प्रभाकर वर्धन इस वंश का चौथा शासक था।
- हर्षचरित में प्रभाकर वर्धन को **'हूणहरिणकेसरी'** कहा गया है क्योंकि उसने हुणों को पराजित किया था।
- प्रभाकर वर्धन ने **'परमभट्टारक'** व **'महाराजाधि राज'** जैसी उपाधि धारण की।

हर्षवर्धन

- वह प्रभाकर वर्धन के पुत्र थे।
- हर्षवर्धन ने ह्वेनसांग को सम्मानित करने के लिए कन्नौज में बौद्ध परिषद का संरक्षण किया।
- हर्षचरित (हर्षवर्धन की जीवनी) उनके दरबारी कवि वाणभट्ट द्वारा संस्कृत भाषा में लिखी गई थी।
- वह नर्मदा नदी के तट पर चालुक्य राजा पुलकेशिन -द्वितीय द्वारा पराजित हुआ था।
- उसने कई उपाधि धारण की थी
  1. परम भट्टारक (उन्होंने गौर राजा शशांक को पराजित करते समय इस उपाधि का प्रयोग किया था)
  2. सकलो उत्तरापथनाथ (अर्थात् उत्तर का राजा)
  3. शिलादित्य (यह उपाधि उन्हें 'ह्वेनसांग' द्वारा दी गई थी)

ह्वेनसांग (627 ई.- 643 ई.):-

- वह एक चीनी यात्री था जो 627 ई. में सिल्क मार्ग या जेलेप दर्रे के माध्यम से बौद्ध ग्रंथों की खोज में भारत आया था।
- उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और 'सु-यू-की' नामक एक पुस्तक लिखी।

2. चालुक्य वंश (575 ईस्वी- 1189 ईस्वी)

संस्थापक - पुलकेसिन-प्रथम

राजधानी - बीजापुर

✓ चालुक्यों को 'वातापी' के नाम से भी जाना जाता था।

✓ इसी को **'पूर्वकालीन पश्चिमी चालुक्य'** भी कहा गया है।

✓ उनका उदय स्थल वर्तमान कर्नाटक राज्य के बीजापुर जिले में स्थित बादामी नामक स्थान था।

✓ पुलकेशिन प्रथम ने **'सत्याश्रय'** तथा **'रणविक्रम'** जैसी उपाधि धारण की थी।

पुलकेसिन-द्वितीय

- पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य वंश के शासकों में सर्वाधिक योग्य व शक्तिशाली शासक था।
- वह दक्षिण भारत के पहले शासक थे जिन्होंने 'पैगोडा' नाम के सोने के सिक्के जारी किए थे।
- उन्होंने नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्धन को पराजित किया था।
- 641ई. में पुलकेशिन द्वितीय के दरबार में ह्वेनसांग आया था।
- पल्लव वंशी शासक नरसिंह वर्मन प्रथम ने पुलकेशिन द्वितीय को 642 ई. में पराजित किया था।
- पुलकेशिन द्वितीय उसने कई उपाधि धारण की थी
  1. परमेश्वर:
  2. दक्षिणपतेश्वर (दक्षिण के राजा)

KD Publication

सोमेश्वर-प्रथम

- सोमेश्वर प्रथम महान विजेता और साम्राज्य निर्माता था।
- उसने अपनी राजधानी **मान्यखेत** से **कल्याणी** में स्थानान्तरित कि थी।
- उसने चोल राजा 'राजसिद्धेश्वर चोल' को हराया, लेकिन वह 'राजेंद्र चोल' से हार गया और मानसिक रूप से परेशान हो गया।

विक्रमादित्य-VI

- वह बाद के चालुक्य काल के सबसे शक्तिशाली राजा थे।
- उसने 1076 ई. में अपने राज्यारोहण के समय एक सम्वत् का प्रवर्तन किया जिसे **'चालुक्य- विक्रम-सम्वत्'** कहा जाता है।

3. पल्लव वंश:-(575 ई.- 780 ई.)

संस्थापक- सिंहवर्मन

राजधानी - कांची या कांचीपुरम

- ✓ सातवाहन साम्राज्य के विघटन के पश्चात दक्षिण भारत में **पल्लव वंश** का उदय हुआ।
- ✓ पल्लव लोग स्वतंत्र राज्य स्थापित करने से पूर्व सातवाहनों के सामंत थे।
- ✓ पल्लव वंश का प्रथम शासक **सिंहवर्मन** था जिसने तृतीय शताब्दी ई. के अन्तिम चरण में शासन किया था।
- ✓ दक्षिण भारतीय लिपि 'पल्लव लिपि' को विकसित करने वाले यह पहले व्यक्ति थे।
- ✓ पल्लव वंश ने ही दक्षिण भारत में मंदिरों की वास्तुकला का संरक्षण किया जीं।

सिंह विष्णु-

- महान पल्लव राजाओं की सूचि में सिंहवर्मन के बाद उसका पुत्र सिंहविष्णु पल्लव वंश का राजा बना।
- उसने **'अवनिसिंह'** की उपाधि धारण की।
- इसी के शासन काल में महाबलिपुरम में **'आदि वराह गुफा मंदिर'** का निर्माण हुआ था।

महेंद्र वर्मन-प्रथम

- सिंहविष्णु के बाद उसका पुत्र महेन्द्रवर्मन प्रथम पल्लवंश का राजा बना।
- वह एक महान निर्माता, कवि एवं संगीतज्ञ था।
- महेंद्र वर्मन-प्रथम के शासन में तमिल साहित्य का विकास हुआ।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम ने **'मतविलास प्रहसन'** व **'भगवदज्जुकीयम'** जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की।

नरसिम्हा वर्मन-प्रथम

- महेन्द्रवर्मन प्रथम के बाद उसका पुत्र नरसिंहवर्मन प्रथम पल्लव वंश का शासक बना।
- वह इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।
- हर्षवर्धन, पुलकेशिन-द्वितीय और नरसिंह वर्मन-प्रथम एक दूसरे के समकालीन थे।
- नरसिम्हा वर्मन-प्रथम ने 'मणिमंगलम युद्ध' में पुलकेसिन- द्वितीय को पराजित किया और 'वातापी कोंडा' की उपाधि ग्रहण की।
- उन्होंने महाबलीपुरम का 'रथ मंदिर' बनवाया था।

नरसिम्हा वर्मन द्वितीय

- उसने 'राजसिंह', 'आगमप्रिय' व 'शंकर भक्त' की उपाधि धारण की।
- उन्होंने महाबलीपुरम में 'शोर मंदिर' और कांची में 'कैलाशनाथ राज सिद्धेश्वर मंदिर' का निर्माण कराया था।

अपराजितवर्मन

- वह पल्लव वंश का अंतिम राजा था।
- चोल राजा आदित्य-प्रथम ने 897 ई. में तोंडमंडलम पर अधिकार कर लिया और अपराजितवर्मन की हत्या कर दी थी।

4. चोल वंश :- प्रतीक बाघ

1. **पारंपरिक चोल (300BC - 850AD)**
   वे आदिवासी कुलों से संबंधित हैं।
   वे अन्य शासकों के अधीन सामंत के रूप में कार्य करते हैं।
2. **बाद के चोल (850AD -1275AD)**
   वे असली राजा थे, उन्होंने साम्राज्य का विस्तार किया और दक्षिण भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य बन गए।

विजयालय-

- वह चोल वंश का संस्थापक था।
- तंजौर को जीतने के उपलक्ष्य में विजयालय ने 'नरकेसरी' की उपाधि धारण की।

KD Publication

आदित्य प्रथम

- विजयालय के बाद आदित्य प्रथम चोल राजवंश का शासक बना।
- आदित्य प्रथम पल्लवों का सामंत था और उसने अपराजित वर्मन की हत्या कर पल्लव वंश का अंत किया था।

परान्तक -प्रथम

- उसने श्रीलंका के राजा 'महेंद्र-IV' को पराजित किया, लेकिन क्षेत्र का अधिग्रहण नहीं किया।

राज-राज चोल-प्रथम

- वह पहले दक्षिण भारतीय राजा थे जिन्होंने भारत के हिस्से के रूप में श्रीलंका के क्षेत्र का अधिग्रहण किया।
- वह आधुनिक नौसेना विकसित करने और श्रीलंका, इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा और बाली का अधिग्रहण करने वाले पहले राजा थे।

राजेंद्र चोल प्रथम

- राजराज प्रथम के मृत्यु के बाद उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम चोल राजवंश के गद्दी पर बैठा।
- उसने पल्लव वंश का पूरी तरह से अंत किया और उत्तर में गंगा तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- महमूद गजनवी ने उसके शासन काल में भारत पर आक्रमण किया था।

राजेंद्र चोल-III

- वह चोल वंश का अंतिम राजा था।
- 1279 ई. में उसे पाण्डय शासक कुलशेखर के हाथों पुनः पराजित होना पड़ा। इसी के साथ चोल वंश का अंत हो गया।

5. राष्ट्रकूट वंशः-

✓ **दंतिदुर्ग** ने दक्षिण भारत (दक्षिणापथ) के बादामी के चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन द्वितीय को पराजित कर 752 ई. में **'राष्ट्रकूट वंश'** की स्थापना की।
✓ राष्ट्रकूट बादामी के चालुक्यों के सामंत थे।
✓ दंतिदुर्ग राष्ट्रकूट वंश का प्रथम शासक था।
✓ उसने अपनी राजधानी **मान्यखेत** में बनायी।

कृष्णा- प्रथमः

- दंतिदुर्ग के बाद उसका चाचा कृष्ण प्रथम राष्ट्रकूट वंश का शासक बना।
- उसने **'राजाधिराज परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
- कृष्ण प्रथम ने एलोरा के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।

ध्रुव धारावर्ष

- कृष्णा- प्रथम के बाद उसका छोटा बेटा ध्रुव राष्ट्रकूट वंश का राजा बना।
- वह पहले दक्षिण भारतीय राजा था जिसने गंगा और यानुमा के चित्र वाले सिक्के जारी किए।

कृष्ण-चतुर्थ

- वह राष्ट्रकूट वंश के अंतिम राजा थे।

6. पाण्ड्य (प्रतीक-मछली)

✓ पाण्ड्यों का उल्लेख सबसे पहले मेगास्थनीज ने किया था, कहा जाता है कि उनका राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
✓ सबसे पहले पाण्ड्य शासक मुदुकुडुमी थे, जिन्होंने मदुरै से शासन किया था।
✓ पाण्ड्य क्षेत्र में तमिलनाडु के तिरुनेलवेली, रामनाड और मदुरै के आधुनिक जिले शामिल थे। इसकी राजधानी मदुरै में थी, जो वैगई नदी के तट पर स्थित थी।
✓ नल्लिक्कोडन पाण्ड्य वंश का अन्तिम शासक था।

7. चेर (प्रतीक - धनुष)

✓ चेरा राजवंश ने केरल और तमिलनाडु दोनों के हिस्से पर कब्जा कर लिया।
✓ चेरा की राजधानी वंजी थी।
✓ इसके मुख्य बंदरगाह मुजरी और टोंडी थे।
✓ **उदियन जेरल** चेर वंश का प्रथम शासक था, उसने महाभारत युद्ध में भाग लेने वाले सभी योद्धाओं को भोजन कराया था।
✓ शेनगुट्टवन एक महान शासक, योद्धा और कलाप्रेमी था, उसे **'लालचेर'** भी कहा जाता था।
✓ ऐसा कहा जाता है कि उसने उत्तर पर आक्रमण किया और गंगा को भी पार किया।
✓ वह पवित्रता की देवी कन्नगी की पूजा से संबंधित प्रसिद्ध पट्टिनी पंथ के संस्थापक भी थे।
✓ **कडक्को इलंजेरल इरंपोरई** चेर वंश का अन्तिम शासक बना।
✓ उसने चोल और पाण्ड्य राजाओं के विरुद्ध सफलता प्राप्त की।

KD Publication

1 Chapter

इस्लाम धर्म और भारत पर विदेशी आक्रमण

इस्लाम धर्म

500 – 600 ई० में, सऊदी अरब में धार्मिक परिवर्तन हुआ और इस्लाम धर्म का उदय हुआ।

पैगंबर मोहम्मद:-

- ✓ वह इस्लाम धर्म के संस्थापक थे।
- ✓ उनका जन्म 570 ई में सऊदी अरब के मक्का में हुआ था।

पैगंबर की कहानी:-

पिता- अब्दुल्लाह

माता- अमीना

पत्नी- खदीजा

संतान 1. पुत्र- अबू बक्र इब्न अब्दुल्ला

2. बेटी- फातिमा

- ✓ 610 ई० में पैगंबर को 40 वर्ष की आयु में मक्का की **हीरा गुफा** में ज्ञान प्राप्त हुआ था।
- ✓ पैगंबर के अनुसार **'जिब्राइल'** नाम के एक काल्पनिक चरित्र ने उन्हें इस्लाम का ज्ञान प्रदान किया और उन्होंने उस ज्ञान की रचना एक पुस्तक में की और उसका नाम **'कुरान'** रखा।
- ✓ 24 सितंबर, 622 ई०- पैगंबर ने **'हिजरी संवत'** नामक नए युग या इस्लामी कैलेंडर की शुरुआत की।
- ✓ पैगंबर को इस्लामिक धर्म का मुख्य स्रोत माना जाता था इसलिए उन्हें **'खलीफा'** कहा जाता था।
- ✓ 632 ई० में पैगंबर मोहम्मद की मृत्यु सऊदी अरब के मदीना में हुई थी।

भारत पर अरबियों का आक्रमण :-

- ✓ 636 ई० में खलीफा 'उमर' ने ठाणे क्षेत्र (मुंबई) पर हमला किया लेकिन वह असफल रहा।
- ✓ 700 ई० में, सिंध क्षेत्र पर चचनामा राजवंश का शासन था।
- ✓ चचनामा राजवंश के दाहिर और जय सिंह ने 'हज्जाज' (ईरान के शासक) पर हमला किया और हजाज के दो सेनापति 'अब्दुल और बुंदेल' को पराजति किया।
- ✓ 712 ई. में हज्जाज ने अपने भजीतें, दामाद व सेनानायक **मुहम्मद बिन कासिम** को चचनामा वंश पर आक्रमण करने के लिए भेजा।
- ✓ मोहम्मद बिन कासिम ने 'बोलन दर्रे' के माध्यम से भारत में प्रवेश किया और चचनामा वंश पर आक्रमण कर सिंध क्षेत्र पर विजय प्राप्त की।
- ✓ 715 ई० में मोहम्मद बिन कासिम ने 'जुनैद' को सिंध का नया राज्यपाल नियुक्त किया और वह ईरान वापस लौट गया ।
- ✓ उन्होंने 'जजिया कर' एक धार्मिक कर की शुरुआत की। (गैर-मुसलमानों पर उनके धर्म का प्रचार करने के लिए लगाए जाने वाला कर)

भारत में अरबों का योगदान

1. ऊंट
2. खजूर
3. दिरहम (अरबी सोने के सिक्के)

भारत पर तुर्कियों का आक्रमण

महमूद गजनी (1000 ई० – 1030 ई०)

- ✓ गजनविद राजवंश की स्थापना अफगानिस्तान के गजना में **'अल्पटेगिन'** ने की थी।
- ✓ महमूद गजनी अल्पटेगिन का पोता था और वह 998 ई० में गजना का राजा बना।
- ✓ महमूद गजनी पहला व्यक्ति था जिसने भारत पर कब्जा करने के लिए 'जिहाद' की घोषणा की थी।

KD Publication

महमूद गजनी की उपाधियाँः-

1. सुल्तान
2. यामीन-उल-उल्लाह (धार्मिक रक्षक)
3. यामीन-उल-दौला (साम्राज्य का रक्षक)

भारत में गजनी का आक्रमण :-

- ✓ महमूद गजनी ने 1000-1025 ई. के बीच भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
- ✓ **1001 ई०-** उसने पेशावर क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- ✓ **1003 ई० -** उसने भटिंडा के शासक पर आक्रमण किया।
- ✓ **1008 ई० -** उसने कांगड़ा क्षेत्र पर हमला किया और हिंदू देवताओं की मूर्तियों को नष्ट कर दिया।
- ✓ **1009 ई०-** उसने थानेश्वर पर आक्रमण किया और अजय पाल को पराजित किया।
- ✓ **1024 ई०-** गजनी ने अन्हिलवाड़ में सोलंकी राजा भीम-प्रथम को हराया। इस युद्ध को 'अनहिलवाड़ का प्रथम युद्ध' के नाम से जाना जाता है।
- ✓ **1024 ई०-** उसने सोमनाथ पर आक्रमण किया और शिवलिंग को क्षतिग्रस्त कर दिया और 2 लाख सोने के सिक्के लूट लिए।

महमूद गजनी के दरबारी विद्वानः-

1. अल-बरुनी- उन्होंने अरबी भाषा में 'किताबुल-हिंद' (भारत पर पहली अरबी पुस्तक) लिखी।
2. फिर-दौसी- उन्होंने फारसी भाषा में 'शाहनामा'(भारत पर पहली फारसी पुस्तक) लिखी।

मोहम्मद गोरी (1175 ई०-1206 ई०)

- ✓ शिहाबुद्दीन मोइनुद्दीन मोहम्मद गोरी 'घुरियाद कबीले' या शंसबानी वंश का था।
- ✓ गजनवी वंश को घुरियाद कबीले ने नष्ट कर दिया और 1173 में मोहम्मद गोरी गजना (अफगानिस्तान) का शासक बना।
- ✓ उसने वास्तविक विस्तार की विचारधारा के साथ गोमल दर्रे से भारत में प्रवेश किया।

भारत में गोरी का आक्रमणः-

- ✓ **1175 -** गोरी ने मुल्तान पर प्रथम आक्रमण किया और वहाँ के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- ✓ **1178-** 'अनहिलवाड़ का दूसरा युद्ध', गोरी और भीम-द्वितीय के बीच यह युद्ध हुआ जिसमें भीम द्वितीय ने गोरी को पराजित किया।
- ✓ **1191 -** गोरी और पृथ्वी राज चौहान के बीच **'तराई का प्रथम युद्ध'** हुआ, जिसमें गोरी बुरी तरह से पराजित हुआ था।
- ✓ **1192 -** गोरी और पृथ्वी राज चौहान के बीच **'तराई का दूसरा युद्ध'** हुआ जिसमें पृथ्वी राज की पराजय हुई और गोरी ने पृथ्वी राज चौहान कि हत्या कर दी।
- ✓ **1193 -** 'ऐबक' (घोरी का गुलाम अधिकारी) ने दिल्ली और मेरठ पर कब्जा कर लिया और दिल्ली को गोरी राजवंश की राजधानी बना दिया।
- ✓ **1194 - 'चंदावर का युद्ध'** राठौर वंश के जयचंद और गोरी के बीच हुआ जिसमें गोरी ने जयचंद का पराजित किया।
- ✓ **1202 -** 'बख्तियार खिलजी' (गोरी का गुलाम अधिकारी) ने नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया।
- ✓ 1206 में हिंदू खोक्खर जनजाति द्वारा धमियाका (रावलपिंडी) में गोरी की हत्या कर दी गई।
- ✓ गोरी की मृत्यु के बाद उसके गुलाम अधिकारी 'कुतुबुद्दीन ऐबक' ने खुद को भारत में गोरी के सभी क्षेत्रों का सुल्तान घोषित किया और गुलाम वंश की स्थापना की।

KD Publication

3 Chapter

DELHI SULTANATE

(1206– 1526 AD)

गुलाम वंश या मामलुक राजवंश (1206-1211 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक	(1206-1210)
आराम शाह	(1210-1211)

इलबारी राजवंश (1211-1266 ई.)

इल्तुतमिश	(1211-1236)
रजिया सुल्तान	(1236-1240)
बेहराम शाह	(1240-1242)
महमूद शाह	(1242-1246)
नसीर-उद-दीन शाह	(1246 - 1265)

कुतुबी राजवंश (1266-1290 ई.)

गयासुद्दीन बलबन	(1266-1286)
कैकुबाद	(1286 - 1290)
शम्सुद्दीन क्यूमर्स	(1290)

खिलजी वंश (1290 - 1320 ई.)

जलालुद्दीन खिलजी	(1290 - 1296)
अलाउद्दीन खिलजी	(1296 - 1316)
मुबारक शाह खिलजी	(1316 - 1320)
नसीरुद्दीन-खुसरो खिलजी	(1320)

तुगलक वंश (1320-1414 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक	(1320 - 1325)
मोहम्मद-बिन-तुगलक	(1325 - 1351)
फिरोज शाह तुगलक	(1351 - 1388)
नसीरुद्दीन तुगलक	(1390 - 1414)

सैय्यद वंश (1414 - 1451 ई.)

खिज्र खान	(1414 - 1421)
मुबारक शाह सैय्यद	(1421-1434)
मोहम्मद शाह सैय्यद	(1434-1445)
शाह आलम	(1445 - 1451)

लोदी वंश (1451 - 1526 ई.)

बहलोल लोदी	(1451 - 1489)
सिकंदर लोदी	(1489 - 1517)
इब्राहिम लोदी	(1517 - 1526)

1206 ईस्वी में मोहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद, ऐबक ने खुद को गजना से स्वतंत्र किया और भारत में 'दिल्ली सल्तनत' की स्थापना की और 'लाहौर' को दिल्ली सल्तनत की राजधानी बनाया।

गुलाम वंश या मामलुक वंश (1206-1211 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

✓ कुतुबुद्दीन ऐबक उत्तरी भारत में पहले स्वतंत्र तुर्की साम्राज्य का संस्थापक था।

✓ **ऐबक की उपाधियाँ:-**

(1) लाख- बख्श

(2) आमिर-ए-अखनूर

(3) कुरान खान

(4) हातिम ताई

✓ **ऐबक द्वारा निर्मित वास्तुकला :-**

(1) कुव्वत-उल-इस्लाम:- यह भारत में बनी पहली मस्जिद थी जिसे कुतुब मीनार के पास ऐबक ने बनवाया था।

(2) ढाई-दिन-का-झोंपडा:- यह राजस्थान के अजमेर में सैनिकों और यात्रियों के लिए विश्राम गृह था।

(3) कुतुब मीनार:-ऐबक ने सूफी संत 'ख्वाजा- कुतुब-उद्दीन-बख्तियार-काकी' की याद में कुतुब मीनार का निर्माण शुरू करवाया था।

✓ **ऐबक के दरबारी कवि:-**

(1) हसन-उन-निजामी:- उन्होंने 'ताज-उल-मस्सिर' (दिल्ली सल्तनत का इतिहास) नामक किताब लिखी थी।

KD Publication

(2) फखर-उद-दीनः- उन्होंने 'तारिक-ए-मुबारक शाही' नामक किताब लिखी थी।

✓ ऐबक की मृत्यु 1210 ई. में लाहौर में 'चौगान' खेलते समय घोड़े से गिर कर हुई थी।

आरामशाह (1210 ई.)

✓ कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद उसका पुत्र आरामशाह 1210 ई. में कुत्बी वंश का शासक बना।

✓ वह एक अयोग्य एवं अनुभवहीन शासक था।

इलबारी राजवंश (1211 ई.-1266 ई.)

इल्तुतमिश (1211-1236)

✓ वह ऐबक का गुलाम सेनापति था।

✓ उन्हें बगदाद के खलीफा द्वारा 'सुल्तान-ए-आजम' की उपाधि मिली।

✓ उसने दिल्ली सल्तनत की राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया था।

✓ **इल्तुतमिश द्वारा किए गए सुधारः-**

1. **तुरकान-ए-चहलगनीः-** यह 40 सलाहाकारों का समूह था, यह चहलगनी सुल्तान के लिए 'सलाहकार परिषद' के रूप में कार्य करता है।
2. **इक्ता व्यवस्थाः-** यह एक केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था थी।
3. उसने समाज में 2 नए सिक्के जारी किए।
   (a) टंका (चांदी का सिक्का)
   (b) जित्तल (तांबे का सिक्का)
4. इल्तुतमिश द्वारा 'रजिया' नामक एक विशेष सिक्का भी पेश किया गया था।

✓ **इल्तुतमिश के युद्ध :-**

(a) तराईन का तीसरा युद्ध (1215-1216 ई.): इल्तुतमिश और गजना के ताजजुद्दीन यलदोज के बीच लड़ा गया, इल्तुतमिश ने युद्ध जीता।

(b) प्रथम मंगोल आक्रमण (1226-1228 ई.):- इल्तुतमिश और चंगेज खाँ के बीच लड़ा गया।

✓ **इल्तुतमिश द्वारा निर्मित वास्तुकलाः-**

- इल्तुतमिश को 'भारत में गुंबद वास्तुकला के जनक' के रूप में जाना जाता था
- दिल्ली की कुतुब मीनार का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- बदायूं, उत्तर प्रदेश में 'जामा मस्जिद'।
- हौज-ए-शमशी, हौज खास, दिल्ली

✓ 1236 में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई और उनकी बेटी 'रजिया' को दिल्ली सल्तनत की पहली महिला सुल्तान के रूप में नियुक्त किया गया।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

✓ इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया सुल्ताना को अपना उत्तराधिकारी नामित किया था लेकिन सलाहकारों ने रुक्नुद्दीन फिरोज को सिंहासन पर बिठाया और अंत में तुर्कान-ए-चहलगनी के समर्थन से रजिया दिल्ली सल्तनत की सुल्तान बन गई।

✓ उसने महिलाओं के लिए दो नए अनुष्ठान शुरू किए
(a) कुलाह (चौकोर टोपी पहनना)
(b) कुबा (लंबा कोट पहनना))

✓ उन्होंने महिलाओं के लिए परदा प्रथा (बुरखा) को भी समाप्त कर दिया।

✓ उसके प्रवेश के तुरंत बाद, मुल्तान, बदायूं, हांसी और लाहौर के राज्यपालों ने उसके खिलाफ खुलेआम विद्रोह कर दिया। भटिंडा में भयंकर विद्रोह हुआ और वहाँ के राज्यपाल 'अल्तुनिया' ने रजिया के आधिपत्य को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। रजिया ने याकूत के साथ अल्तुनिया के खिलाफ कूच किया। हालाँकि अल्तुनिया ने याकूत की हत्या करवा दी और रजिया को कैद कर लिया। इसके बाद रजिया ने अल्तुनिया से शादी की और दोनों ने दिल्ली की ओर कूच किया।

✓ 1240 ई. में, रजिया आराम शाह की साजिश का शिकार हुई और कैथल के पास उसकी हत्या कर दी गई।

बेहराम शाह (1240 ई.-1242 ई.)

✓ उसने सलाहकार 'एटगिन' को अपना 'आमिर-ए-अखनूर' नियुक्त किया और उसे कुछ शक्ति हस्तांतरित की।

✓ एतगिन ने सुल्तान की तरह व्यवहार करना शुरू कर दिया इसलिए बेहराम शाह ने उसकी हत्या करवा दी, फिर दूसरे सलाहकारों ने क्रोधित होकर बेहराम शाह को मार डाला।

✓ बाद में उनके बेटे महमूद शाह को सुल्तान के रूप में नियुक्त किया गया था, लेकिन उसे उसके चाचा 'नासिरूद्दीन शाह' ने मार दिया और 1246 से 1266 ई० तक दिल्ली पर शासन किया था।

KD Publication

कुतुबी राजवंश (1266 ई०-1290 ई ०)

गयासुद्दीन बलबन (1266 -1286)

- ✓ नासिरूद्दीन शाह के मृत्यु के बाद गयासुद्दीन बलबन ने **'बलबनी वंश'** की स्थापना की।
- ✓ बलबन रजिया सुल्तान के समय **'अमीर-ए-शिकार'**, मुईजुद्दीन बहरामशाह के समय **'अमीर-ए-आखूर'**, अलाउद्दीन मसूद और नासिरूद्दीन शाह के समय में **'अमीर-ए-हाजिब'** व **'नाइब'** के पद पर कार्य कर चुका था।
- ✓ उसने इल्तुतमिश द्वारा स्थापित **'तुर्कान-ए-चिहालगानी'** (40 तुर्की सरदारों के दल) को **समाप्त** कर दिया।
- ✓ फारसी राजत्व सिद्धांत ने बलबन की राजत्व की अवधारणा को प्रभावित किया और उसने **जिल- ए-इलाही** (ईश्वर की छाया) की उपाधि धारण की।
- ✓ बलबन ने फारस के रहन-सहन की परम्परा को अपनाया, उसने **'सिजदा'** (घुटने पर बैठकर सम्राट के समाने सिर झुकाना) एवं **'पाबोस'** (पांव को चूमना) की प्रथा को दरबार में शुरू किया जो मूलत: ईरानी परम्परा थी और इन्हे गैर-इस्लामी समझा जाता था।
- ✓ उन्होंने एक नया अलग सैन्य विभाग **'दीवान-ए-अर्ज'** की स्थापना की
- ✓ आमिर खुसरो उनके दरबारी कवि थे जिन्होंने **'तुतिया-ए-हिंद'** नामक किताब लिखी थी।
- ✓ 1286 में बलबन की मृत्यु हो गई और उसके बेटे कैकुबाद को दिल्ली का सुल्तान नियुक्त किया गया।
- ✓ कैकुबाद ने 'जलालुद्दीन खिलजी' को अपना प्रमुख नियुक्त किया।
- ✓ बाद में 1290 में, खिजली ने कैकुबाद और उसके बेटे शम्सुद्दीन क्यूमर्स की हत्या कर दी और दिल्ली सल्तनत में खिलजी वंश की स्थापना की।

खिलजी वंश (1290 ई. - 1320 ई.):-

जलालुद्दीन खिलजी ने कुतुबी वंश के कैकुबाद और शम्सुद्दीन क्यूमर्स की हत्या कर दी और 1290 ई० में दिल्ली सल्तनत में खिलजी वंश की स्थापना की।

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296):-

- ✓ उन्होंने 70 वर्ष की आयु में सिंहासन प्राप्त किया, इसलिए उन्हें 'सबसे पुराना सुल्तान शासक' कहा गया।
- ✓ कैकुबाद ने उन्हें **'शाइस्ता खान'** की उपाधि दी थी।
- ✓ उनकी बेटी की शादी 'उलुग खान' (मंगोलों) से हुई थी और उन्होंने उलुग खान के लिए दिल्ली में मंगोलपुरी शहर की स्थापना की थी।
- ✓ उसने हिन्दू जनता के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया।
- ✓ उनके दामाद, जनरल या भतीजा 'अल्लाउद्दीन-खिलजी' ने दक्षिण भारत के अभियान के बाद उनकी हत्या कर दी।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.):-

- ✓ वह अपने चाचा जलालुद्दीन की हत्या करवाकर सिंहासन पर बैठा था।
- ✓ वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था क्योंकि वह दुनिया को जीतना चाहता है।
- ✓ अलाउद्दीन खिलजी ने मेवाड़, मालवा, रणथंभौर और चित्तौड़ जैसे राजपूतों के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।
- ✓ उसने शासन में इस्लाम के सिद्धांतों को प्रमुखता न देकर **राज्यहित** को सर्वोपरि माना।
- ✓ अलाउद्दीन ने अपने अनवरत युद्ध से उत्तर भारत में आधुनिक पंजाब, सिंध, उत्तर प्रदेश और मालवा क्षेत्र आदि पर अपना साम्राज्य विस्तृत कर लिया था।
- ✓ अलाउद्दीन का दक्षिण भारत के राज्यों पर आक्रमण करने का उद्देश्य धन व विजय लालसा था
- ✓ अलादुद्दीन ने रानी पद्मावती (सबसे खूबसूरत महिला) को जीतने के लिए चित्तौड़ पर हमला किया, उसने चित्तौड़ के राजा रतन सिंह को हराया लेकिन रानी पद्मावती ने 'जौहर' किया और अपनी जान दे दी।
- ✓ 1308 में, मलिक काफूर (अलाउद्दीन का जनरल) ने 'देवगिरी' पर कब्जा कर लिया और काकतीय वंश से कोहिनूर हीरा जीतकर अलाउद्दीन खिलजी को दिया।
- ✓ **अलाउद्दीन खिलजी की उपाधियाँ:-**
  1. सिकंदर-सहानी
  2. नायब-ए-खुदाई
  3. दिल्ली सल्तनत का बिस्मार्क।
- ✓ **उन्होंने समाज में कई नई नीतियां और विभाग बनवाए।**
  1. **'तुमुन'** - 14000 सैनिकों का एक संगठन।
  2. **'डाक-चौकी'**- समाज में डाक व्यवस्था।

KD Publication

3. **'दीवान-ए-मुस्तखराज'**- राजस्व संग्रह के लिए एक अलग विभाग।
4. **'दीवान-ए-रियासत':-** एक अलग विभाग जो बाजार और उसकी गतिविधियों को नियंत्रित करता है। 'दीवान-ए-रियासत' के दो पंख थे।
   (a) शाहना-ए-मंडी (फल और सब्जी के लिए बाजार)
   (b) सराय-ए-अदल (अनाज, चावल, दाल और मसालों के लिए बाजार)
5. **दीवान-ए-रसालतः-** यह विदेश विभाग था। यह विदेशी राज्यों से पत्र व्यवहार करता था।
6. उसने इल्तुतमिश द्वारा शुरू की गई 'इक्ता प्रणाली' को समाप्त कर दिया।

✓ 1316 में अलाउद्दीन खिलजी की ड्रॉप्सी रोग के कारण मृत्यु हो गई।

शिहाबुद्दीन उमर खिलजी (1316 ई.)

✓ अलाउद्दीन खिलजी के मृत्यु के बाद उसका पुत्र शिहाबुद्दीन उमर खिलजी दिल्ली के गद्दी पर बैठा।

✓ इसके समय मलिक काफूर ने सभी अधिकार अपने हाथों में ले लिया

✓ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने **मलिक काफूर** की हत्या करवा दी।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316 ई से 1320 ई)

✓ शिहाबुद्दीन उमर खिलजी की हत्या के बाद उसका भाई कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी दिल्ली के गद्दी पर बैठा।

✓ उसने गुजरात के विद्रोह का दमन किया और 1318 ई. में देवगिरि को पुनर्विजित किया।

✓ उसने **'अल-इमाम'**, **'उल-इमाम'** व **'खिलाफत-उल्लाह'** की उपाधि धारण की।

✓ मुबारक खिलजी राज्य दरबार में **स्त्रियों का वस्त्र** पहन कर आ जाता था

✓ 15 अप्रैल, 1320 ई० को मुबारक खिलजी के वजीर नासिरूद्दीन खुसरोशाह ने कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी की हत्या कर दिल्ली की गद्दी को हथिया लिया।

नसीरुद्दीन खुसरो खान खिलजी (1320ई०):-

✓ वह हिंदू धर्म के थे लेकिन उन्होंने इस्लाम धर्म अपनाया और मुसलमान बन गए।

✓ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी की हत्या के बाद नासिरूद्दीन खुसरो खान दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।

✓ उसने **'पैगम्बर के सेनापति'** की उपाधि धारण की।

✓ नासिरूद्दीन खुसरो खान, खिलजी वंश का अन्तिम शासक था।

✓ उनकी हिंदू पृष्ठभूमि के कारण गयासुद्दीन तुगलक (अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति) द्वारा उनकी हत्या कर दी गई थी।

तुगलक वंश (1320 - 1414 ई.)

गयासुद्दीन-तुगलक (1320-1325 ई.)

✓ वह खिलजी राजवंश में सेनापति थे, उन्होंने खुसरो खान खिलजी की हत्या कर दी और दिल्ली सल्तनत में तुगलक वंश की स्थापना की।

✓ उन्हें 'गाजी मलिक' (अर्थात् शत्रुओं के हत्यारे) के रूप में जाना जाता था।

✓ उन्होंने भारत में अकाल से निपटने के लिए और सिंचाई के लिए नहरों और कुओं का निर्माण कराया था।

✓ 1325 में उनके भतीजे 'मोहम्मद-बिन-तुगलक' द्वारा बनाए गए लकड़ी के मंच से गिरने से उनकी मृत्यु हो गई थी।

मोहम्मद-बिन-तुगलक (1325- 1351 ई.):-

✓ उनका असली नाम 'जूना खान' था।

✓ मध्यकालीन सभी सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सर्वाधिक शिक्षित विद्वान व योग व्यक्ति था।

✓ वह अरबी और फारसी का महान विद्वान तथा खगोल शास्त्र, दर्शन शास्त्र, गणित, चिकित्सा विज्ञान, व तर्कशास्त्र आदि में परांगत था।

✓ वह विजय नगर साम्राज्य और बहमन राजवंश के समकालीन थे।

✓ **मोहम्मद-बिन-तुगलक के शीर्षकः-**
1. दुनिया का खान
2. सिक्कों का राजकुमार
3. असफलता का सुल्तान
4. पागल सुल्तान

✓ **मोहम्मद-बिन-तुगलक द्वारा निर्मित वास्तुकला।**
1. निजामुद्दीन औलिया मकबरा, नई दिल्ली
2. बिजली महल, नई दिल्ली

✓ मुहम्मद बिन तुगलक ने कुछ नवीन योजनाओं का निर्माण कर उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया, ये योजनाएं है-

(i) दोआब में कर वृद्धि
(ii) राजधानी परिवर्तन
(iii) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
(iv) कुरासन या कराचिल अभियान

(i) दोआब में कर वृद्धि

- मुहम्मद बिन तुगलक ने दोआब क्षेत्र में भूराजस्व कर में वृद्धि कर उसे 50 प्रतिशत कर दिया किन्तु उसी वर्ष अकाल पर जाने के कारण फसल खराब हो गयी।
- सुल्तान के अधिकारियों ने बलपूर्वक कर वसूलना प्रारंभ कर दिया तो उस क्षेत्र में विद्रोह हो गया जिससे की यह योजना असफल हो गयी।

(ii) राजधानी परिवर्तन

- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी दूसरी योजना के अन्तर्गत राजधानी को दिल्ली से **देवगिरि** हस्थांतरित किया। 1327 ई. में राजधानी परिवर्तन से पूर्व देवगिरि का नाम **दौलताबाद** रखा था।
- कुछ वर्षों के बाद मुहम्मद तुगलक ने बड़े पैमाने पर दौलताबाद को छोड़ने का फैसला किया क्योंकि उसने जल्द ही पाया कि वह दौलताबाद से उत्तर को नियंत्रित नहीं कर सकता था, जिससे धन और समय की बर्बादी हुई।

(iii) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन

- मुहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी की कमी या कम उपलब्धता के कारण तथा खाली रिक्त कोष को भरने के उद्देश्य से **ताँबे की सांकेतिक मुद्रा** के प्रचलन का निर्णय लिया।
- सुल्तान ने सांकेतिक मुद्रा के अन्तर्गत **पीतल व ताँबा** धातुओं के सिक्के चलाये जिसका मूल्य चाँदी के रुपये **'टंका'** के बराबर होता था।
- अरबी इतिहासकारों के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में चाँदी के अभाव के कारण इसका मूल्य बढ़ गया, जिसे लोगों ने इसका भंडारण शुरु कर दिये।
- सुल्तान की यह योजना भी असफल रही क्योंकि सांकेतिक मुद्रा की छपाई पर कोई प्रभावी केन्द्रीय नियंत्रण नहीं था जिसके कारण लोगों ने स्वयं अपने ही घरों में ताँबा की मुद्रा बना कर उसके बदले शाहीकोष से बराबर मूल्य वाली **चाँदी** की मुद्रा प्राप्त कर लिये।
- इस योजना की असफलता पर सुल्तान को भयानक आर्थिक छति-पूर्ति का सामना करना पड़ा।

(iv) कुरासन या कराचिल अभियान

- मुहम्मद बिन तुगलक ने चौथी योजना के अन्तर्गत कुरासन को जीतने के लिए 3,70,000 सैनिकों की विशाल सेना बनायी और सैनिकों को एक वर्ष का **अग्रीम वेतन** भी दे दिया था
- उसने एक **त्रिगुट** बनाया था जिसमें मुहम्मद बिन तुगलक, तरमाशरीन व मिस्र के सुल्तान थे।
- राजनीतिक परिवर्तन के कारण दोनों देशों के बीच समझौता हो गया जिससे सुल्तान की यह योजना असफल रही।

✓ मुहम्मद बिन तुगलक जब गुजरात विद्रोह को दबाकर सिंध की ओर बढ़ रहा था तो थट्टा के पास बिमारी के कारण 1351 ई. में मृत्यु हो गयी।

✓ उसकी मृत्यु पर **अब्दुल कादिर बदायुनी** ने कहा कि सुल्तान को प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।

इब्न-बतूता:-

- वह एक विदेशी यात्री था और मोरक्को क्षेत्र से संबंधित था।
- 1333 ई. में वह मोहम्मद-बिन-तुगलक के दरबार में आया और उसे 'दिल्ली का काजी' नियुक्त किया गया।
- उन्होंने एक किताब 'रिहला' (ज्ञान की तलाश में यात्रा) लिखी थी।

फिरोजशाह तुगलक (1351 ई०1388 ई०)

✓ मुहम्मद बिन तुगलक के मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई फिरोजशाह तुगलक 45 वर्ष की उम्र में दिल्ली के गद्दी पर बैठा।

✓ **शीर्षक:-**

1. नहरों का राजकुमार (क्योंकि उसने 5 नहरें बनाई)
2. दिल्ली सल्तनत का अकबर (क्योंकि उन्होंने शुद्ध शरिया कानून की शुरुआत की थी)
3. शहरों का राजकुमार (क्योंकि उन्होंने 300 शहरों का निर्माण किया)
4 कासिम-अमीर-उल-मोममीन (खलीफा द्वारा)

KD Publication

✓ **फिरोज शाह तुगलक द्वारा समाज में सुधार**
- कराधान की नई व्यवस्था कुरान के अनुसार थी।
  1. खमसा – युद्धों में पकड़े गए लूट के इनाम का 1/6
  2. जजिया – गैर-मुसलमानों पर लगाया जाने वाला धार्मिक कर।
  3. जकात– संपत्ति कर।
  4. खराज– भू-राजस्व कर
- **दीवान-ए-खैरात** – गरीब लड़कियों के कल्याण, शिक्षा और विवाह के लिए एक अलग विभाग।
- **दीवान-ए-बंदगानः**– दासों के कल्याण के लिए एक अलग विभाग।
- **दारुल-शिफाः**– निःशुल्क स्वास्थ्य जांच और उपचार के साथ अब तक का पहला सार्वजनिक अस्पताल।
- **दीवान-ए-इस्तिहाकः**– पेंशन विभाग

✓ वह एक महान निर्माता और समाज विकासकर्ता थे क्योंकि उन्होंने अपने पूरे क्षेत्र में कई वास्तुकलाओं का निर्माण किया था।
1. उसने 300 नगरों का निर्माण किया।
2. फिरोज शाह कोटला किला, नई दिल्ली।
3. उन्होंने 30 विद्यालयों की स्थापना की
4. उसने 5 नहरें बनाई।
5. उसने अपने क्षेत्र में 100 अस्पताल स्थापित किए।
6. उसने सड़कों की मरम्मत की और 150 पुलों का निर्माण किया।
7. 40 मस्जिद और 20 किले बनवाए।
8. कुतुब मीनार दिल्ली की मरम्मत की।

✓ **फिरोज शाह तुगलक के युद्ध :-**
- 1360 ई. में फिरोज और भानु-तृतीय के बीच उड़ीसा के जगन्नाथ पुरी मंदिर में युद्ध हुआ। (फिरोज शाह तुगलक ने युद्ध जीता और मंदिर को नष्ट कर दिया)
- 1362 ई. में उसने हिमाचल के नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर पर हमला किया और 1300 संस्कृत वैदिक पाठ्य पुस्तकों को नष्ट कर दिया और 300 संस्कृत पाठ का फारसी भाषा में अनुवाद किया।

✓ **फिरोज शाह तुगलक के साहित्य**
- **फतुहात-ए-फिरोजशाही** (फिरोज शाह तुगलक की आत्मकथा)
- **तारिख-ए-फिरोजशाही** (जियाउद्दीन-बरनी द्वारा फिरोज शाह तुगलक की जीवनी)

✓ 1388 में फिरोज शाह तुगलक की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई और उनकी मृत्यु के बाद उनके दोनों बेटों 'तुगलक शाह' और 'अबू बक्र' की भी एक साल के भीतर मृत्यु हो गई, इसलिए उनके पोते 'नसीरुद्दीन तुगलक' को 1390 में सुल्तान के रूप में नियुक्त किया गया। ।

नसीरुद्दीन तुगलक (1390-1414 ई.)

✓ नासिरुद्दीन महमूदशाह 'तुगलक वंश' का **अंतिम शासक** बना।

✓ इसी के शासन काल में 1398 ई. में **तैमूर लंग** ने आक्रमण किया था

तैमूर लंग–
- वह एक तुर्की मंगोल था और किसी भी युद्ध में कभी पराजित नहीं हुआ था।
- उसने दिल्ली सल्तनत पर हमला किया और अपने क्षेत्र को अपने सेनापति खिज्र खान को दे दिया जिसने तुगलक वंश को गिराकर दिल्ली सल्तनत में सैय्यद वंश की स्थापना की।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

खिज्र खान (1414-1421 ई.)

✓ वह दिल्ली सल्तनत में सैय्यद राजवंश के संस्थापक थे।

✓ उसके शासन के दौरान दिल्ली सल्तनत तैमूर राजवंश के अधीन थी।

✓ उसने तैमूर के नाम से सिक्के जारी किए थे।

मुबारक शाह (1421-1434 ई.)

✓ खिज्र खाँ के मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुबारकशाह 1421 ई. में दिल्ली के गद्दी पर बैठा।

✓ उनके दरबारी कवि 'याहिया-बिन-सर-हिंदी' ने **'तारीख-ए-मुबारक शाही'** (मुबारक शाह की जीवनी) लिखी थी।

✓ मुबारकशाह के वजीर के नेतृत्व में कुछ हिन्दू एवं मुस्लिम सरदारों ने 19 फरवरी, 1434 ई. को मुबारकशाह की हत्या कर दी।

KD Publication

मोहम्मद शाह (1434–1445 ई.):–

- ✓ मुबारकशाह के हत्या के बाद उसका भतीजा **मुहम्मदशाह** दिल्ली के गद्दी पर बैठा।
- ✓ उसने 'बहलोल लोदी' को अपना सेनापति नियुक्त किया और उसे 'खान-ए-खाना' की उपाधि भी दी।

शाह आलम (1445–1451 ई.):–

- ✓ उन्होंने शासन छोड़ दिया और बहलोल लोदी को सत्ता सौंप दी जिन्होंने 1451 में दिल्ली सल्तनत में लोदी राजवंश की स्थापना की।

लोदी वंश (1451 ई.– 1526 ई.)

'बहलोल लोदी' (1451–1489 ई.)

- ✓ वह सैय्यद वंश का सेनापति था।
- ✓ वह दिल्ली सल्तनत में साम्राज्य स्थापित करने वाले पहले अफगान शासक थे।
- ✓ **शीर्षक:–**
  1. बहलोल शाह गाजी
  2. खान-ए-खाना
- ✓ उसने एक नया तांबे का सिक्का 'बहलोली सिक्का' पेश किया।
- ✓ वह दिल्ली सल्तनत में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाला व्यक्ति था।

सिकंदर लोदी (1489–1517 ई.)

- ✓ उसने आगरा शहर की स्थापना की और दिल्ली सल्तनत की राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित कर दिया।
- ✓ उन्हें 'सुल्तान सिकंदर शाही' भी कहा जाता था।
- ✓ वे एक अच्छे कवि थे और उन्होंने 'गुलरुखी' नाम से कविताएँ लिखीं।
- ✓ उन्होंने 'गज-ए-सिकंदरी' नामक भूमि माप पैमाने की शुरुआत की।
- ✓ उन्होंने दिल्ली में लोदी गार्डन का निर्माण किया।

इब्राहिम लोदी (1517–1526 ई.)

- ✓ वह दिल्ली सल्तनत के अंतिम शासक थे।
- ✓ उन्होंने दिल्ली सल्तनत पर अपने वंश की रक्षा के लिए राजपूतों और मुगलों से संघर्ष किया।
  1. **खतौली का युद्ध (1518):–** इब्राहिम और राणा सांगा के बीच लड़ा गया (इब्राहिम ने युद्ध जीता)।
  2. **पानीपत का पहला युद्ध (1526):–** 21 अप्रैल 1526 को इब्राहिम और बाबर के बीच लड़ा गया, बाबर ने युद्ध में इब्राहिम की हत्या की और दिल्ली सल्तनत को समाप्त कर दिया।

KD Publication

4 Chapter

VIJAY NAGAR EMPIRE
(1336 – 1650 AD)

दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत में दो साम्राज्यों का उदय हुआ।

1. विजय नगर साम्राज्य : (हिन्दू वंश)
2. बहमनी साम्राज्य : (मुस्लिम वंश)

विजय नगर साम्राज्य (1336 ई. - 1650 ई.)

- ✓ 1330 के समयकाल में मोहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत का सुल्तान था, उन्होंने दक्षिण भारतीय क्षेत्र पर हमला किया और 'हरि-हर' और 'बुक्का' को पराजित किया, उसने उन्हें बंदी बना लिया और दोनों को मुस्लिम धर्म में परिवर्तित कर दिया और उन्हें अपनी सेना में एक पद दे दिया।
- ✓ 1335 में, दक्षिण भारत में विद्रोह शुरू हुए, इसलिए मोहम्मद बिन तुगलक ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए हरि हर और बुक्का को दक्षिण में भेजा।
- ✓ 'विद्यारायण ब्राह्मण' नाम के एक व्यक्ति ने हरि-हर और बुक्का को फिर से हिंदू धर्म में परिवर्तित होने और दक्षिण पर शासन करने के लिए प्रेरित किया।
- ✓ हरि-हर ने खुद को मोहम्मद बिन तुगलक से स्वतंत्र किया और तुंगभद्रा नदी के पश्चिम में 'हस्तिनावत वंश' की स्थापना की और शासक बना।
- ✓ बाद में इस हस्तिनावत को विजय नगर साम्राज्य के नाम से जाना गया
- ✓ हरि हर ने अपने प्रशासनिक व्यवस्था को काकतियें के शासन व्यवस्था के आधार पर संगठीत किया।
- ✓ उसके प्रयत्नों के फलस्वरुप कृषि का विकास हुआ। कुछ समय के लिए हरिहर एवं बुक्का दोनों ने एक साथ शासन किया।
- ✓ इस साम्राज्य के 4 राजवंशो ने लगभाग 300 वर्ष तक शासन किया।

(a) संगम राजवंश (1336 - 1485)
(b) सालुव राजवंश (1485 - 1505)
(c) तुलुव राजवंश (1505 - 1665)
(d) अरावेदु राजवंश (1565 - 1650)

संगम राजवंश : (1336 - 1485 ई.)

संस्थापक - हरि-हरि

- ✓ **अन्य शासकः**

बुक्का
देवराय-प्रथम
देवराय-द्वितीय
प्रौध

देवराय प्रथमः

- ✓ इटली का एक विद्वान 'निकोलो-दी-कोंटी' उसके दरबार में आया और उसे राजदूत नियुक्त किया गया।
- ✓ देवराय प्रथम ने प्रसिद्ध तेलगू कवि **श्रीनाथ** को संरक्षण प्रदान किया था।
- ✓ 1422 ई. में देवराय प्रथम की मृत्यु हो गयी।

देवराय द्वितीय

- ✓ देवराय प्रथम के बाद उसका बेटा **रामचन्द्र** सिंहासन पर बैठा परन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गयी।
- ✓ रामचन्द्र के बाद उसका भाई **वीर विजय** गद्दी पर बैठा।
- ✓ उसके उपरान्त वीर विजय का पुत्र **देवराय द्वितीय** शासक बना। वह इस वंश के महान शासकों में से एक था।
- ✓ उसे 'गजबेटकर' कहा जाता था क्योंकि वह हाथियों का शिकार करता था।
- ✓ उन्होंने संस्कृत भाषा में 'महानाटक सुधानिधि' नामक पुस्तक लिखी।

KD Publication

प्रौध:

- ✓ वह संगम वंश के अंतिम राजा थे, 1485 में उन्होंने सिंहासन के लिए अपने पिता को मारने की कोशिश की लेकिन उनके मंत्री 'नरसिंह सालुव' ने उनकी हत्या की और विजय नगर साम्राज्य में सालुव वंश की स्थापना की।

सालुव वंश (1485 - 1505 ई.)

संस्थापक: नरसिम्हा सालुव

- ✓ नरसिम्हा सालुव ने 'नरसा-नायक' को अपना सेना नायक नियुक्त किया।
- ✓ नरसिम्हा सालुव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इम्मादी नरसिम्हा प्रथम शासक बना।
- ✓ इम्मादी नरसिम्हा प्रथम की मृत्यु के बाद, इम्मादी नरसिम्हा-द्वितीय राजा बने लेकिन वह असमर्थ थे इसलिए उन्होंने 'नरसा-नायक' को अपना मंत्री नियुक्त किया।
- ✓ नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिम्हा ने इम्मादी नरसिम्हा - द्वितीय की हत्या की और विजय नगर साम्राज्य में तुलुव वंश की स्थापना की।

तुलुव राजवंश (1505 - 1565 ई.)

संस्थापक: वीर नरसिम्हा (1505 - 1509)

- ✓ **अन्य शासक:**

  कृष्ण देव-राय

  अच्युतदेव राय

  सदाशिव राय

वीर नरसिंह (1505 ई. - 1509 ई.)

- ✓ सालुव वंश का अन्तिम शासक इम्मादि नरसिंह के मृत्यु के बाद नरसा नायक के पुत्र **वीर नरसिंह** ने तुलुव वंश की स्थापना की।
- ✓ उसने **'भुजबल'** की उपाधि धारण की थी।
- ✓ 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु हो गयी।

कृष्णदेव राय (1509 - 1529 ई.)

- ✓ वह विजय नगर का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- ✓ उन्हें 'आंद्रा भोज' और 'अभिनव भोज' के नाम से भी जाना जाता था।
- ✓ वह 'बाबर' के समकालीन थे।
- ✓ वे संस्कृत पुरस्कार विजेता थे और उन्होंने 2 पुस्तकें लिखीं।

  (a) जांबवती कल्याण

  (b) उषापरिण्य
- ✓ वह अपने दरबार में 8 कवियों के एक समूह 'अष्ट दिग्ज' के लिए प्रसिद्ध थे, जिसमें 'तेलानी रमन' भी शामिल है।
- ✓ 'डोमिंगो-पियास' एक पुर्तगाली यात्री 1520 में कृष्ण देव राय के दरबार में आया।

अच्युतदेव राय (1529 ई. - 1542 ई.)

- ✓ 1529 ई. में कृष्ण देव राय की मृत्यु के पश्चात उनके द्वारा मनोनित उसका भाई अच्युत देव राय शासक बना।
- ✓ उसने अपने शासन काल में बीजापुर के शासक इस्माइल आदिल खाँन से **रायचूर** एवं **मुद्गल** के किले छीन लिये।
- ✓ उसके शासन काल में पुर्तगाली यात्री **नूनीज** विजय नगर की यात्रा पर आया था।
- ✓ नूनीज घोड़े का व्यापारी था और उसने अपनी पुस्तक **'क्रॉनिकल ऑफ फर्नास नूनीज'** की रचना की थी।

सदाशिव (1542 ई. - 1570 ई.)

- ✓ अच्युतदेव राय के मृत्यु के बाद उसका भतीजा सदाशिव 1542 ई. में विजय नगर का शासक बना।
- ✓ सदाशिव ने अकेले अपने मंत्री 'राम राय' के साथ मिलकर विजय नगर साम्राज्य की शक्ति को बहाल किया।

अरावैदु राजवंश (1565 - 1650 ई.)

- ✓ 1565 में विजय नगर साम्राज्य को तालीकोटा या राक्षसी तंगड़ी युद्ध की प्रसिद्ध लड़ाई में बहमन राजवंश द्वारा ध्वस्त कर दिया गया था।
- ✓ इसके बाद इन क्षेत्रों में कुछ बस्तियाँ दिखाई दीं और इन्हें अरावैदु राजवंश के नाम से जाना गया और यह एक निष्क्रिय राजवंश था।
- ✓ श्रीरंग तृतीय विजय नगर साम्राज्य का अंतिम राजा था।

5 Chapter

BAHMAN DYNASTY (1347 – 1527 AD)

बहमन राजवंश के शासक:

हसन गंगू	(1347 - 1358)
मुहम्मद शाह बहमन-प्रथम	(1358 - 1377)
मुहम्मद शाह बहमन-द्वितीय	(1377 - 1397)
ताजुद्दीन फिरोज शाह बहमन	(1397 - 1422)
अहमद शाह बहमन-प्रथम	(1422 - 1435)
अहमद शाह बहमन-द्वितीय	(1435- 1463)
मुहम्मद शाह बहमनी-तृतीय	(1463 - 1482)

हसन गंगू (1347-1358 ई०)

✓ वह बहमन राजवंश के संस्थापक थे।

✓ उनका पूरा नाम अलाऊद्दीन हसन बहमनशाह था। वह देवगिरी के तुर्की अधिकारी थे और उन्होंने 1347 में बहमनी साम्राज्य की स्थापना की थी। ।

✓ उसने **गुलबर्ग** को अपनी राजधानी बनाया और उसका नाम बदलकर अहसानाबाद कर दिया।

✓ बहमनशाह ने हिन्दुओं से **'जजिया कर'** न लेने का आदेश दिया था।

मुहम्मद शाह बहमन प्रथम (1358 - 1377 ई०)

✓ अलाउद्दीन हसन बहमनशाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **मुहम्मद शाह प्रथम** सिंहासन पर बैठा। उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि विजय नगर एवं बारंगल पर विजय प्राप्त करनी थी।

✓ उसने विजय नगर साम्राज्य के बुक्का को पराजति किया था।

✓ वह प्राचीन भारत का पहला शासक था जिसने बारूद और तोप का इस्तेमाल किया था।

मुहम्मद शाह बहमन-द्वितीय (1377 - 1397 ई०)

✓ वह एक शांतिप्रिय शासक था और उसने अपने पड़ोसी शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे।

✓ उसने कई मस्जिदें, मदरसे और अस्पताल बनवाए।

ताजुद्दीन फिरोज शाह बहमन (1397 - 1422 ई०)

✓ वह बहमन वंश का सबसे शक्तिशाली राजा था।

✓ उन्होंने 'सोनार की बेटी के युद्ध' में विजय नगर के संगम वंश के देव राय-प्रथम को पराजित किया था।

✓ उन्होंने दौलताबाद, महाराष्ट्र में **'जंतर मंतर'** का निर्माण किया था।

✓ उसने दौलताबाद में बेधशाला का निर्माण कराया था।

अहमद शाह बहमन- प्रथम (1422-1435 ई०)

✓ वह कठोर और हृदयहीन शासक था और उसने वारंगल राजाओं पर विजय प्राप्त की थी।

✓ उसने राजधानी को **'गुलबर्ग'** से **'बीदर'** में स्थानांतरित किया था।

अहमद शाह बहमन-द्वितीय (1435- 1463 ई०)

✓ ईरानी यात्री **'मुहम्मद गुवान'** उनके दरबार में आया था और उसे मंत्री नियुक्त किया गया था।

✓ 'मुहम्मद गुवान' को **'मलिक-उत-तुज्जर'** (व्यापारियों के प्रमुख) की उपाधि मिली थी।

मुहम्मद शाह बहमनी तृतीय (1463 -1482 ई०)

✓ वे 9 वर्ष की आयु में राजा बने इसलिए उन्हें कठपुतली राजा कहा गया।

✓ वास्तविक सत्ता प्रधानमंत्री **'मुहम्मद गुवान'** के हाथों में थी जिन्होंने कोंकण, उड़ीसा, विजय नगर के शासकों को हराकर बहमन वंश को बहुत शक्तिशाली बनाया था।

आमिर अली बरीद

✓ वह एक बुद्धिमान विद्वान और एक सक्षम प्रशासक थे, उन्होंने कभी भी कोई शाही उपाधि धारण नहीं की, लेकिन **'प्रधानमंत्री'** की उपाधि के तहत बहमन राजवंश पर शासन किया।

✓ उन्हें **'डेक्कन की लोमड़ी'** के नाम से जाना जाता था।

KD Publication

- ✓ 1520 में उन्होंने अलाउद्दीन शाह बहमन-द्वितीय को बहमन वंश का राजा नियुक्त किया।
- ✓ 1523 में, उन्होंने वली-उल्लाह को बहमन राजवंश का राजा नियुक्त किया, लेकिन वली-उल्लाह ने आमिर बरीद के खिलाफ साजिश रचने की कोशिश की, इसलिए 1525 में आमिर बरीद ने उसकी हत्या करवा दी।
- ✓ 1525 में आमिर बरीद ने कलीम-उल्लाह-खान को राजा नियुक्त किया और वह बहमन वंश के अंतिम शासक थे।

बहमन राजवंश का पतन

- ✓ बहमन और विजय नगर शासकों के बीच हुए लगातार युद्ध।
- ✓ बहमन वंश का उत्तराधिकारी कमजोर था और उसने बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को खो दिया था।

KD Publication

6 Chapter

THE MUGHAL EMPIRE
(1526 – 1858 AD)

मुगल शब्द की उत्पत्ति मंगोल से हुई थी क्योंकि मुगल वंश का संस्थापक बाबर मंगोलों का वंशज था।

मुख्य मुगल (1526 - 1707 ई.)

1. बाबर (1525-1530 ई.)
2. हुमायूं (1530-1540 ई.)
3. अकबर (1556-1605 ई.)
4. जहांगीर (1605-1627 ई.)
5. शाहजहाँ (1627-1658 ई.)
6. औरंगजेब (1658-1707 ई.)

बाबर (1525-1530 ई.)

✓ 14 फरवरी, 1483 ई. में जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर का जन्म **फरगना** में हुआ था।

✓ उसके पिता का नाम **उमरशेख** मिर्जा (चगताई तुर्क) और माता का नाम **कुतलुग निगार** (मंगोल वंश) था।

✓ वह पिता की तरफ से तैमूर का **5वाँ** वंशज तथा माता की तरफ से चंगेज खाँ का **14वाँ** वंशज था।

✓ बाबर एक तुर्क-मंगोल और सुन्नी-मुस्लिम था।

✓ वह 11 वर्ष की आयु में फरगना का शासक बना।

✓ पंजाब के सुबेदार **दौलत खाँ** और इब्राहिम खाँ के चाचा **आलम खाँ** ने बाबर को भारत आने का निमंत्रण दिया।।

✓ 1519-1526 के दौरान उसने चार बार भारत पर हमला किया और अंत में 21 अप्रैल 1526 को उसने 'पानीपत के प्रथम युद्ध' में **'इब्राहिम लोधी'** को हराया और दिल्ली सल्तनत पर मुगल साम्राज्य की स्थापना की।

✓ उसने आगरा को मुगल साम्राज्य की राजधानी बनाया।

✓ बाबर **तुर्की** भाषा का विद्वान था। उसने अपनी आत्मकथा **'तुजुके-ए-बाबरी'** तुर्की भाषा में लिखी। उसका फारसी दरबारी कवि अर्ब्दुरहीम खानखाना ने **फारसी** में अनुवाद किया था।

✓ बाबर की आत्मकथा **'बाबरनामा'** का अंग्रेजी अनुवाद **लीडेन** एवं **एसकिन** ने 1826 ई. में किया था।

✓ बाबर ने मुबईयान नामक एक **पदशैली** का विकास किया।

✓ उसने **'रिसालय-ए-उसज'** की रचना की जिसे **'खत-ए-बाबरी'** भी कहा जाता था।

✓ बाबर ने सड़क मापने हेतु **'गज-ए-बाबरी'** नामक पैमाने का प्रयोग किया था।

बाबर के युद्ध

✓ पानीपत का प्रथम युद्ध (1526)- बाबर ने इब्राहिम लोधी को पराजित किया।

✓ खानवा का युद्ध (1527)- बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया।

✓ चंदेरी का युद्ध (1528)- बाबर ने मेदिनी राय को पराजित किया।

✓ घाघरा का युद्ध (1529)- बाबर ने मोहम्मद खान लोधी (इब्राहिम लोधी के पुत्र) को पराजित किया।

बाबर की उपाधियाँ:

(1) बादशाह (पादशाह)
(2) गाजी
(3) कलंदर

बाबर द्वारा निर्मित वास्तुकलाएं:

1. आगरा में नूर-ए-अफगान बाग (आराम बाग)
2. जामा-मस्जिद संभल, उत्तर प्रदेश
3. बाबरी मस्जिद, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

KD Publication

✓ बाबर एक शराबी था इसलिए 1530 में बीमारी के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

✓ शुरू में उन्हें आरामबाग में दफनाया गया था लेकिन बाद में उनकी पत्नी ने उनकी हड्डियाँ ले जाकर काबुल में उनकी समाधि का निर्माण किया।

हुमायूँ (1530–1540 ई.) – (1555–1556 ई.)

✓ बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र 'हुमायूं' मुगल साम्राज्य का बादशाह बना।

✓ हुमायूँ का जन्म 6 मार्च, 1508 ई. को काबुल में हुआ था।

✓ हुमायूँ के माता का नाम माहमंगा था।

✓ बाबर के चार पुत्र थे- हुमायूँ, कामरान, असकरी और हिन्दाल।

✓ हुमायूँ एक मात्र शासक था जिसने अपने भाईयों में साम्राज्य का विभाजन किया।

✓ हुमायूँ की सौतेली बहन गुलबदन बेगम ने 'हुमायूँनामा' नामक पुस्तक लिखी।

✓ हुमायूँ ने अपने वंश का विस्तार करने, बचाने और पुनः प्राप्त करने के लिए कई युद्ध लड़े।

✓ उनके जीवन में 3 युद्ध चरण थे।

चरण -1 राजवंश का विस्तार

1. **कलिंजर का युद्ध (1531):-** हुमायूं ने लगभग 30 दिनों तक बहादुर शाह (गुजरात क्षेत्र का शासक) पर हमला किया लेकिन इस युद्ध का कोई नतीजा नहीं निकला।
2. **देवरिया का युद्ध (1532):-** हुमायूँ ने मोहम्मद खान लोधी (इब्राहिम लोदी के पुत्र) को हराकर उसकी हत्या कर दी।
    - इस लड़ाई में शेरशाह सूरी ने मोहम्मद खान लोधी की मदद की थी।
3. **चुनार का युद्ध (1532):-** हुमायूँ ने शेरशाह सूरी को पराजित किया और उसने मुगल वंश के अधीन आधिपत्य स्वीकार कर लिया।
4. **बहादुर शाह युद्ध (1536):-** बहादुर शाह ने चित्तौड़ के क्षेत्र को घेर लिया, इसलिए चित्तौड़ की रानी 'रानी कर्णावती' ने हुमायूँ को उनकी रक्षा करने के लिए राखी भेजी थी।।
    - हुमायूँ ने बहादुर शाह को हराकर उसकी हत्या कर दी।

चरण- 2 जब उसने अपना साम्राज्य खो दिया:-

1. pkSkdk; ¼ (1539) %& चुनार की लड़ाई (1532) में शेरशाह सूरी ने आधिपत्य स्वीकार कर लिया लेकिन बाद में 1539 में उसने खुद को मुगल वंश से स्वतंत्र कर लिया।
    - इसलिए 1539 में हुमायूँ ने चौसा के युद्ध में शेरशाह सूरी पर हमला किया, यह लड़ाई 4 से 5 महीने तक जारी रही और मानसून ने मुगल सैनिकों को प्रभावित किया इसलिए हुमायूँ युद्ध हार गया और युद्ध के मैदान से भाग गया।
2. **बिलग्राम का युद्ध (1540):-** चौसा की लड़ाई में हुमायूँ को हराने के बाद शेरशाह सूरी आगरा पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन 'कन्नौज' (बिलग्राम) में हुमायूँ ने शेरशाह सूरी पर फिर से हमला किया लेकिन हुमायूँ फिर से लड़ाई हार गया और पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में भाग गया।
    - अब 1540 से 1555 तक सूर वंश ने मुगल साम्राज्य पर शासन किया।

चरण -3 साम्राज्य की वापसी

1540–1555 के दौरान, हुमायूँ सिंध में रहा जहाँ उसने 'हमीदा बानो बेगम' (अमरकोट के शासक की बेटी) से शादी की और 1542 में अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था।

1. **मछीवाड़ा का युद्ध (1555):-** हुमायूँ ने इब्राहिमशाह सूरी को हराया।
2. **सरहिंद का युद्ध (1555):-** हुमायूं ने सिकंदर आदिलशाह सूरी (सूर वंश के अंतिम शासक) को हराकर मुगल वंश को फिर से स्थापित किया।

✓ हुमायूँ ने दिल्ली में 'दीन-ए-पनाह' बनवाया और 'मीना बाजार शुरू किया।

✓ 1556 में हुमायूँ 'दीन-ए-पन्हा' की सीढ़ियों से गिर गया और उसकी मृत्यु हो गई।

✓ 'बेगा बेगम' ने नई दिल्ली के सफदरजंग में हुमायूँ के मकबरे का निर्माण कराया।

✓ लेनपुल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खराते हुए ही उसकी मृत्यु हो गई।

KD Publication

सूर वंश (1540-1555 ई.)

शेरशाह सूरी ने बिलग्राम के युद्ध (1540) में हुमायूँ को हराया और 1540 में मुगल साम्राज्य पर सूर वंश की स्थापना की।

शेरशाह-सूरीः-

- ✓ शेरशाह सूरी का जन्म बेजवाड़ा (होशियापुर) में हुआ था, उसका बचपन का नाम फरीद खाँ था।
- ✓ शेरशाह के पिता हसन खाँ **जौनपुर** के छोटे से जमींदार थे।

शीर्षक-

(1) शेर खान

(2) हजरत-ए-आला

शेरशाह सूरी के युद्ध :

1. **चंदेरी का युद्ध (1528):-** इस युद्ध में शेरशाह-सूरी बाबर की सेना में एक जनरल था और उसने मेदिनी राय के खिलाफ मुगलों के लिए लड़ाई लड़ी थी।
2. **चुनार का युद्ध (1532):-** हुमायूँ ने शेरशाह-सूरी को हराया।
3. **चौसा का युद्ध (1539):-** शेरशाह-सूरी ने हुमायूँ को हराया।
4. **बिलग्राम का युद्ध (1540):-** शेरशाह-सूरी ने हुमायूँ को हराकर मुगल साम्राज्य पर सूर वंश की स्थापना की।
5. **कलिंजर का युद्ध (1545):-** इस युद्ध में 'किरत सिंह चंदेल' ने शेरशाह-सूरी का वध किया।

शेरशाह-सूरी द्वारा किए गए सुधारः

- ✓ उन्होंने भूमि सर्वेक्षण की एक प्रणाली 'पट्टा' की शुरुआत की।
- ✓ उन्होंने किसानों और भूमि के रिकॉर्ड के साथ एक लिखित समझौता 'काबुलियत' शुरू किया।
- ✓ उन्होंने कई सिक्के पेश किए।
  - (a) अशरफी (सोने का सिक्का)
  - (b) रुपया (चांदी का सिक्का)
  - (c) दाम (तांबे का सिक्का)
- ✓ वह भारत का पहला शासक था जिसने सिक्कों पर शासक का नाम और पद अंकित किया था।
- ✓ उन्होंने **'दीन-ए-पन्हा'** के ऊपर **'पुराना किला'** बनवाया।
- ✓ उन्होंने **'पाटलिपुत्र'** का नाम बदलकर पटना कर दिया।
- ✓ उन्होंने **'शाहराह-ए-आजम'** नामक सड़क (पेशावर से सोनारगाँव तक) का निर्माण किया, जिसे बाद में ग्रैंडट्रंक रोड के रूप में जाना जाता है।
- ✓ 1545 में कालिंजर के युद्ध में वह उक्का नामक शस्त्र से मारा गया था और उसका मकबरा सासाराम बिहार में बनाया गया था।

अकबर (1556-1605 ई.)

परिचय

जन्म- 15/अक्टूबर/1542

जन्म स्थान- अमरकोट

वास्तविक नाम- बदरुद्दीन

पिता - हुमायूँ

माता - हमीदा बानो बेगाम

पालक माता - महा मंगा

रक्षक - बैरम खान

1556 में 14 वर्ष की आयु में अकबर बैरम खान के मार्गदर्शन में राजा बना।

शीर्षकः-

बदरुद्दीन-जल्लालुद्दीन-मोहम्मद-बेग-अकबर (यह उपाधि उन्हें बैरम खान ने दी थी)

अकबर के युद्धः-

1. **पानीपत का दूसरा युद्ध (1556):-** 1556 में, हेमू (सूर वंश का जनरल) ने ग्वालियर और आगरा पर कब्जा कर लिया, इसलिए बैरम खान ने पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमू को पराजित किया।
2. **मेवाड़ का युद्ध (1568):-** यह अकबर का क्षेत्रभूमि में प्रथम युद्ध था। इस युद्ध में अकबर ने राणा उदय सिंह को हराकर आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी शहर की स्थापना की थी।
3. **हल्दीघाटी का युद्ध (1576):-** अकबर ने महाराणा प्रताप को हराया था जो युद्ध के मैदान से अपने चेतक पर भाग गए थे।
4. **असीरगढ़ का युद्ध (1601):-** अकबर ने मीरान बहादुर को पराजित किया और यह अकबर का अंतिम युद्ध था।

KD Publication

अकबर की धार्मिक नीतियाँ:

1. **सुलहकुल :-** 1575 में अकबर ने फतेहपुर सीकरी में 'सुलहकुल' या 'इबादत खाना' शुरू किया जहां धार्मिक गुरू विभिन्न धर्मों की चर्चा और व्याख्या करते थे।
2. **दीन-ए-इलाही:-** 1582 में अकबर ने सुलेहकुल में सभी धर्मों को सीखकर 'दीन-ए-इलाही' नाम से एक नए धर्म की शुरुआत की। इस धर्म के कुल 250 अनुयायी थे और बीरबल दीन-ए-इलाही के एकमात्र हिंदू अनुयायी थे।

- ✓ उसने ईसाइयों को आगरा और लाहौर में चर्च स्थापित करने की अनुमति दी थी।
- ✓ उन्होंने हिंदू धार्मिक गुरू विट्ठलाचार्य को जमीन दान की थी।
- ✓ उन्होंने 'हरविजयसूर्या' (जैन गुरु) को 'जगत गुरु' की उपाधि दी थी।
- ✓ उन्होंने अमृतसर में गुरु रामदास को 500 बीघा जमीन दान में दी थी।

अकबर के नवरत्न :-

अकबर के दरबार में 9 दार्शनिक या विशेषज्ञ थे जिन्हें नवरत्न के नाम से जाना जाता था।

1. बीरबल
2. टोडरमल
3. मान सिंह
4. तानसेन
5. अबुल फजल
6. अबुल फैजी
7. फकीर अजियोद्दीन
8. मुल्ला दो प्याजा
9. अब्दुलरहीम खान-ऐ-खाना

अकबर द्वारा किए गए सामाजिक सुधार:-

- ✓ उन्होंने करोरी, दहसाला और गल्ला बख्शी जैसे कई करों की शुरुआत की उन्होंने सैन्य प्रशासन में 'मनसबदारी' की शुरुआत की।
- ✓ अकबर ने सत्ती प्रथा को रोकने का प्रयास किया था।
- ✓ उन्होंने विधवा विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान की।
- ✓ अकबर ने लड़के के विवाह की आयु 16 वर्ष और लड़कियों के विवाह की आयु 14 वर्ष निर्धारित की।
- ✓ अकबर के शासन काल में राजा टोडरमल ने 1580 ई. में 'दहसाला बंदोबस्त' व्यवस्था लागू की।

अकबर द्वारा पेश किए गए सिक्के:-

1. सोने के सिक्के:-
   - (a) मुहर (चौकोर आकार)
   - (b) इलाही (गोल आकार)
   - (c) शनसाब (अकबर द्वारा पेश किया गया सबसे भारी और सबसे बड़ा सिक्का)
2. जलाली एक चौकोर आकार का चांदी का सिक्का था।

साहित्य:

- ✓ अकबर के शासनकाल को साहित्य का स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है।
- ✓ उन्होंने 'मकतब खाना' एक अनुवाद विभाग की स्थापना की जहां कई संस्कृत और तुर्की पाठों का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया।
- ✓ महाभारत का फारसी भाषा में अनुवाद 'रज़्मनामा' के रूप में 'अब्दुल कादिर बदायूंनी' द्वारा किया गया था।

अकबर द्वारा निर्मित वास्तुकला:-

1. 'दीवान-ए-आम', फतेहपुर सीकरी
2. 'दीवान-ए-खास', फतेहपुर सीकरी
3. जोधा महल या हरका महल
4. बुलंद दरवाजा, फतेहपुर सीकरी
5. लाल किला, आगरा

- ✓ 16/अक्टूबर/1605 को अकबर की मृत्यु हो गई और उसका मकबरा 'जहांगीर' ने आगरा के पास 'सिकंदराबाद' में बनवाया।

जहांगीर (1605-1627 ई.)

- ✓ नुरूरुद्दीन मोहम्मद जहांगीर (सलीम) अकबर और हरका बाई के पुत्र थे।
- ✓ खुसरो, खुर्रम (शाहजहाँ) और सहरियार जहाँगीर के तीन पुत्र थे।
- ✓ 1606 में खुसरो ने जहांगीर के खिलाफ विद्रोह किया, इसलिए उसे बंदी बना लिया गया और जेल में डाल दिया गया। बाद में खुसरो जेल से फरार हो गया और सिखों के पांचवें गुरु 'अर्जन देव' से मिल गया।
- ✓ भैरोवाल के युद्ध में, जहांगीर के बेटे खुर्रम ने खुसरो को हराकर उसकी हत्या करवा दी।
- ✓ जहांगीर ने गुरु अर्जन देव को फांसी दिलवा दी।
- ✓ जहाँगीर ने आगरे के किले के शाहबुर्ज एवं यमुना नदी के किनारे स्थित खम्भे में **'न्याय की जंजीर'** लगवाई, जिसमें 60 घंटियाँ लगी थीं जो इसके न्यायप्रियता की निशानी थी।

KD Publication

- ✓ उन्होंने अनावश्यक करों को समाप्त कर दिया और शराब पर प्रतिबंध लगा दिया।
- ✓ उन्होंने लूट, अंग विच्छेदन और जानवरों की हत्या पर प्रतिबंध लगाया था।
- ✓ जहांगीर के शासनकाल को 'चित्रकारी का स्वर्ण युग' के रूप में जाना जाता था, वह एक अच्छा चित्रकार था और उसने आगरा में एक चित्रकारी और कला विद्यालय शुरू किया था।
- ✓ जहांगीर ने फारसी भाषा में अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहांगीर' लिखी थी।
- ✓ जहाँगीर के दरबार में **विलियम हॉकिन्स** 1608 ई. में इंग्लैंड के राजा **जेम्स प्रथम** के दूत के रूप में आया। जहाँगीर ने हॉकिन्स को **'फिरंगी खाँ'** की उपाधि दी।
- ✓ हॉकिन्स के बाद जेम्स प्रथम का दूसरा दूत पॉलकेनिंग 1612 ई. में जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ।
- ✓ इसके बाद 1615 ई. में जेम्स प्रथम का तीसरा दूत विलियम एडवर्ड आया था।
- ✓ 1615 ई. में **टॉमस रो** जहाँगीर के दरबार में आया था, वह फारसी विद्वान था। टॉमस रो सूरत में अंग्रेजों को व्यापार करने के लिए फरमान प्राप्त करने में सफल रहा।
- ✓ 1627 में जहांगीर की मृत्यु हो गई और लाहौर में रावी नदी के तट पर उनका मकबरा बनाया गया।

शाहजहाँ (1627-1658 ई.)

- ✓ शाहजहाँ का जन्म 5 फरवरी, 1592 ई. को लाहौर में हुआ था।
- ✓ शाहजहाँ के बचपन का नाम **खुर्रम** था।
- ✓ उसके पता का नाम **जहाँगीर** और माता का नाम जगतगोसाई था।
- ✓ जब जहाँगीर की मृत्यु हुई, शाहजहाँ आगरा में नहीं था, इसलिए उसके छोटे भाई शहरयार ने खुद को बादशाह घोषित किया।
- ✓ शाहजहाँ ने 'दावर बख्श' (खुसरो के पुत्र) के साथ एक साजिश रची और दावर बख्श ने शहरयार की हत्या कर दी और बादशाह बन गया, बाद में शाहजहाँ ने दावर बख्श को मार डाला और बादशाह बन गया।
- ✓ दावर बख्श को 'मुगल वंश के बलि के बकरे' के रूप में जाना जाता था।
- ✓ 1612 ई. में खुर्रम का विवाह **'अर्जुमंद बानो बेगम'** से हुआ जिसे खुर्रम ने **'मलिका-ए-जमानी'** की उपाधि प्रदान की जो बाद में **'मुमताज बेगम'** के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- ✓ खुर्रम की पत्नी मुमताज से **14 बच्चों** का जन्म हुआ था।
- ✓ 1631 ई. में अर्जुमंद बानो बेगम की मृत्यु हो गयी। उसके शव को **आगरा** में दफन किया गया और उसकी याद में प्रसिद्ध **'ताजमहल'** का निर्माण किया गया।
- ✓ ताजमहल का वास्तुकार उस्ताद ईशा खाँ थे।

शाहजहाँ द्वारा किए गए सुधार :-

- ✓ उसने बलबन द्वारा शुरू किए गए सिजदा-पैबोस को समाप्त कर दिया।
- ✓ उसने गाय के वध की अनुमति दी जिसे अकबर ने प्रतिबंधित कर दिया था।
- ✓ उसने चांदी और तांबे के मिश्रित सिक्के 'आना' को पेश किया।

शाहजहाँ द्वारा निर्मित वास्तुकलाएं:-

शाहजहाँ के शासनकाल को मुगल वास्तुकला के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता था।

(1) मुमताज बेगम की याद में आगरा में ताजमहल।
(2) दिल्ली में लाल किला।
(3) हीरा महल, दक्षिणी दिल्ली
(4) मोती महल
(5) दिल्ली, लाहौर और श्रीनगर में मुगल गार्डन या शालीमार गार्डन।

- ✓ 1658 में औरंगजेब (शाहजहाँ का पुत्र) बादशाह बन गया और उसने शाहजहाँ को बंदी बना लिया और 1666 में शाहजहाँ की जेल में मृत्यु हो गई।
- ✓ उनका मकबरा ताजमहल आगरा में बनाया गया था।

औरंगजेब (1658 - 1707 ई.)

परिचय:-
पिता- शाहजहाँ (खुर्रम)
माता- मुमताज बेगम
शीर्षक:-1. आलमगीर - प्रथम
2. जिंदापीरी
3. फकीर

KD Publication

✓ वह 40 वर्ष की आयु में बादशाह बनने वाले सबसे उम्रदराज मुगल थे।

✓ वह मुगल वंश के सबसे लंबे समय (49 वर्ष) तक शासन करने वाले बादशाह थे

औरंगजेब के युद्धः-

✓ औरंगजेब के शासनकाल के दौरान।
- दारा सिकोही दिल्ली पर शासन कर रहा था
- शाह सुजा बंगाल पर शासन कर रहे था
- मुराद गुजरात क्षेत्र पर शासन कर रहा था
- औरंगजेब दक्कन पर शासन कर रहा था।

1. **बहादुरपुर का युद्ध :-** दारा सिखोई ने शाह सुजा को हराया।
2. **धर्मत का युद्धः-** औरंगजेब और मुराद ने मिलकर दारा-सिखोई को हराया।
   - इस युद्ध को 'राजकुमारों का युद्ध' के नाम से जाना जाता है।
3. **खजवार का युद्धः-** औरंगजेब ने शाह-सुजा को हराया
4. **देव राय का युद्धः-** औरंगजेब ने दारा-सिखोई को फिर से पराजित कर उसकी हत्या कर दी।

औरंगजेब के शासन काल में हुए विद्रोह :-

1. **अहोम आदिवासी विद्रोहः-** चक्रद्वाज और बीरफुर-खान के नेतृत्व में असम की अहोम जनजाति ने मुगल जनरल मीर जुमला और शाशा खान को हराया।
2. **सिक्खों के साथ विद्रोहः-** 1675 में सिखों के 9वें गुरु 'तेग बहादुर' ने 'दारूल इस्लाम' को अपनाने से मना कर दिया इसलिए औरंगजेब ने उनकी हत्या कर दी थी। 1705 में खदराना के युद्ध में औरंगजेब ने गुरु गोबिंद सिंह को पराजित किया।
3. **ej kBkd sl ãk"kZ&** 1659 में शिवाजी ने अफजल खान (बीजापुर का सुल्तान) की हत्या कर दी।
   - 1663 में शिवाजी ने शाइस्ता खान (औरंगजेब के सेनापति) को पराजित किया।
   - पुरंदर का युद्ध (1665), जय सिंह (औरंगजेब के जनरल) ने शिवाजी को हराया और शिवाजी ने मुगल की आधिपत्य स्वीकार कर लिया।
   - 1668 में, शिवाजी को आगरा में 'दारुल-इस्लाम' स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया, इसलिए उन्हें बंदी बना लिया गया और जेल में डाल दिया गया।
   - 1674 में, शिवाजी जेल से भाग गए और संप्रभुता की घोषणा की और 'छत्रपति' बन गए।

औरंगजेब द्वारा किए गए सुधारः-

1. उन्होंने 'दारुल-इस्लाम' की शुरुआत की।
2. उसने 1679 में 'जजिया कर' फिर से लगाया।
3. उन्होंने वास्तुकला पर होने वाले अनावश्यक खर्चों को समाप्त कर दिया।
4. उसने मुगल वंश के दरबार में शराब, गायन और संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया।
5. उन्होंने नवरोज के उत्सव को समाप्त किया।
6. उसने औरंगाबाद में बीवी का मकबरा या मिनी ताजमहल बनवाया।

✓ 1707 में औरंगजेब की 88 वर्ष की आयु में अहमदनगर के भिंगर में मृत्यु हो गई और उसका मकबरा औरंगाबाद में बनाया गया।

KD Publication

7 Chapter MARATHA DYNASTY

शिवाजी

परिचय-

जन्म-1627

जन्म स्थान- शिवनेर का किला महाराष्ट्र

पिता-शाहजी भोसले

माता-जीजाबाई

शिक्षक-समर्थ रामदास और तुका राम

पत्नी-1. साई बाई

2. बोहरा बाई

3. यशो बाई

शिवाजी का संघर्ष :-

- ✓ 1643 में 16 साल की उम्र में शिवाजी ने सिंह गढ के किले पर हमला किया।
- ✓ 1645 में उन्होंने खुद को संप्रभु घोषित किया और 'स्वराज' का विचार दिया।
- ✓ 1646 में उन्होंने 'तोरण किले' पर हमला किया और इनायत खान को हराया।
- ✓ 1647 में उन्होंने 'रायगढ़ किले' पर हमला किया और 'चंद्र रावजी' की हत्या कर दी।
- ✓ 1656 में उन्होंने अहमदनगर और जुन्नार किले पर कब्जा कर लिया।
- ✓ 1659 में उन्होंने अफजल खान को बाघ के पंजे से मार डाला।
- ✓ 1663 में उन्होंने 'शाइस्ता खान' को पराजित किया।
- ✓ 1664 में उन्होंने सूरत पर हमला किया और मुगल व्यापार केंद्र से 1 करोड़ सिक्के लूट लिए।
- ✓ 1664 में जय सिंह (मुगल जनरल) ने शिवाजी पर हमला किया और उन्हें प्रतापगढ़ किले में हराया और शिवाजी और मुगलों के बीच पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि के अनुसार शिवाजी ने मुगलों के अधीन आधिपत्य स्वीकार कर लिया और मुगलों को 23 किले वापस दे दिया और युद्ध मुआवजे के रूप में 40 लाख का भुगतान किया।
- ✓ 1666 में शिवाजी और संभाजी को औरंगजेब ने 'दारुल-इस्लाम' स्वीकार करने के लिए आगरा बुलाया था, लेकिन दोनों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, इसलिए उन्हें बंदी बना लिया गया और जेल में डाल दिया गया। बाद में शिवाजी जेल से भाग गए और फिर से मुगल साम्राज्य के कुछ किलों पर कब्जा कर लिया।
- ✓ 1674 में, रायगढ़ किले से शिवाजी ने मुगलों से 'स्वतंत्रता' की घोषणा की और 3 उपाधियों का इस्तेमाल किया।
  1. छत्रपति (अर्थ संप्रभु)
  2. शक-कर्ता (अर्थात नए युग की शुरुआत)
  3. हिंदू धर्मोधारक (अर्थात हिंदू धर्म का रक्षक)।
- ✓ 1680 में बीमारी के कारण शिवाजी की मृत्यु हो गई।
- ✓ शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके सबसे बड़े पुत्र 'संभाजी' छत्रपति बने।
- ✓ 1689 में औरंगजेब ने संभाजी को प्रताड़ित किया, उनकी हत्या कर दी और उनके बेटे शाहूजी को बंदी बना लिया।
- ✓ 1689 में राजा राम-प्रथम छत्रपति बने और उन्होंने राजधानी को रायगढ़ से सतारा स्थानांतरित कर दिया।
- ✓ 1700 में शिवाजी-द्वितीय (राजा राम-प्रथम के पुत्र) छत्रपति बने।
- ✓ जब 1707 में औरंगजेब की मृत्यु हुई, तो बहादुर शाह ने शाहूजी (संभाजी के पुत्र) को रिहा कर दिया।

खेड़ा का युद्ध (1707):- शाहूजी ने शिवाजी-द्वितीय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया और छत्रपति बन गए।

KD Publication

8 Chapter SIKHISM

सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक ने की थी और उनके अनुसार सिख का अर्थ है 'ईश्वर का शिष्य' या जो सिख गुरु की शिक्षाओं में विश्वास करते हैं।

सिख धर्म में कुल 10 गुरु थे।

1. गुरु नानकः-

वास्तविक नामः- नानाक

जन्म - 13/अप्रैल/1469

जन्म स्थानः- तलवाड़ी या ननकाना गांव, पंजाब, पाकिस्तान।

पिता- मेहता कालू

माताः तृप्ती

बहनः-नानकि

शिष्यः-बाला, लहाना (अंगद), रामदास।

- ✓ वह एकेश्वरवाद और निर्गुण (निराकार ईश्वर) में विश्वास करते थे।
- ✓ उन्होंने लंगर प्रथा या सामुदायिक रसोई शुरू की थी।
- ✓ वह बाबर के समकालीन थे।
- ✓ 1539 में, पाकिस्तान के करतारपुर में उनकी मृत्यु हो गई।

2. गुरु अंगदः-

- ✓ वे सिख धर्म के दूसरे गुरु थे।
- ✓ वह गुरु नानक के शिष्य थे।
- ✓ उन्होंने 'गुरुमुखी' लिपि की शुरुआत की थी।
- ✓ वह हुमायूं और शेर शाह सूरी के समकालीन थे।

3. गुरु अमरदासः-

- ✓ वे सिख धर्म के तीसरे गुरु थे।
- ✓ वह अकबर के समकालीन थे।
- ✓ उन्होंने आनंद-कराज (सिख विवाह प्रणाली) की शुरुआत की थी।
- ✓ उन्होंने मांजी-पीर (सिख धर्म को बढ़ावा देने वाले संत) का परिचय कराया था।
- ✓ उन्होंने रामदासपुर में सिख समुदाय को शुरू किया था।

4. गुरु रामदास :-

- ✓ वे अकबर के समकालीन थे।
- ✓ अकबर ने उसे 500 बीघा जमीन दान की थी।
- ✓ उन्होंने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर का निर्माण शुरू कराया था।

5. गुरु अर्जन देवः-

- ✓ वह जहांगीर के समकालीन थे।
- ✓ उन्होंने स्वर्ण मंदिर का निर्माण पूरा कराया था।
- ✓ उन्होंने 'आदि ग्रंथ' नामक पुस्तक में सभी गुरुओं की शिक्षाओं का संकलन गुरुमुखी लिपि में किया था।
- ✓ जहाँगीर ने उनकी हत्या करवा दी थी।

6. गुरु हरगोबिंदः

- ✓ वे गुरु अर्जन देव के पुत्र थे
- ✓ उन्होंने सिख धर्म में हथियारों की शिक्षा का परिचय दिया और युद्ध की रणनीतियों का उल्लेख किया था।
- ✓ उन्होंने स्वर्ण मंदिर में 'अकाल तख्त' (शाश्वत सिंहासन) की शुरुआत की थी।

7. गुरु हर रायः-

उन्हें औरंगजेब ने फाँसी दी थी।

8. गुरु हर किशनः-

- ✓ वे 5 साल की उम्र में गुरु बन गए थे इसलिए उन्हें बाल गुरु भी कहा जाता था।
- ✓ चेचक के कारण 9 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया था।

9. गुरु तेग बहादुरः-

- ✓ उन्होंने पंजाब में 'पटियाला शहर' की स्थापना की थी।

KD Publication

✓ उन्होंने 'दारुल-इस्लाम' को स्वीकार नहीं किया इसलिए औरंगजेब ने उसकी हत्या कर दी थी।

10. गुरु गोबिंद सिंहः-

✓ उनका जन्म 1666 में आनंदपुर में हुआ था

✓ उन्होंने 'सिंह और कौर' उपाधि का प्रयोग शुरू किया।

✓ उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब या आदि ग्रंथ को पूरा किया और कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब को सिख धर्म का 11वां और अंतिम गुरु माना जाएगा।

उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की (शुद्ध आत्माओं की सेना) और पांच प्रतीकों का उपयोग किया

(a) केश
(b) कंगा
(c) कड़ा
(d) कृपाण
(e) कच्छा

KD Publication

1 Chapter

यूरोपीय कंपनियों का भारत में आगमन

यूरोपीय कंपनियों का भारत में आगम

1. पुर्तगाली 2. डच 3. ब्रिटिश
4. डेनिस 5. फ्रेंच

भारत में पुर्तगालियों का आगमनः-

✓ पुर्तगाली भारत आने वाले पहले यूरोपीय थे।

✓ 1450 के पूर्व काल में पुर्तगाली लोग भूमि मार्ग से व्यापार के लिए भारत आया करते थे।

✓ 1453 - तुर्क साम्राज्य के एक तुर्की शासक ने पुर्तगालियों के लिए मार्ग बंद कर दिए ताकि पुर्तगाली दक्षिण-पूर्व एशिया के रास्ते भारत की यात्रा न कर सकें।

✓ 1497 - यूरोप में लिस्बन शहर के राजा 'मैनुअल' ने वास्कोडीगामा को यूरोप से भारत के समुद्री मार्ग की खोज कराने के लिए एक यात्रा पर भेजा।

✓ 20 मई 1498 को वास्कोडिगामा भारत के कालीकट बंदरगाह (मालाबार तट) पर पहुंचा और यूरोप से भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज की। उनका स्वागत 'विजय नगर साम्राज्य' के एक हिंदू शासक 'जमोरिन' ने किया था।

✓ इस खोज के बाद पुर्तगालियों ने अगले 100 वर्षो तक समुद्री मार्ग पर शासन किया और मसालों, हस्तशिल्प और वस्त्रों का व्यापार किया।

✓ 1500- 'एस्टोडा-दा-इंडिया', एक पुर्तगाली कंपनी की स्थापना हुई जो भारत में व्यापार के लिए बनायी गयी थी।

✓ 1503- पुर्तगालियों ने कोचीन (केरल) में अपना पहला कारखाना या गोदाम स्थापित किया। इस स्थापना का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं का भंडारण करना और एक स्थायी कार्यालय बनना था।

✓ भारत में गोवा पुर्तगालियों की राजधानी थी।

पुर्तगाल के गवर्नरः-

1. **फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा (1505)**
   - 1505 में फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा को भारत में पुर्तगालियों का पहला गवर्नर नियुक्त किया गया था।
   - उसने 'नीली जल नीति' की शुरुआत की, जिसमें अरब सागर में आगमन के लिए जहाजों द्वारा टोल टैक्स एकत्र किया जाता था और इस कर को 'फीटोरियस कर' के नाम से जाना जाता था।
2. **अल्फोंसो-डी-अल्बुकर्क (1509):**
   - 1509 में अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगालियों के दूसरे गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया था।
   - उन्होंने 'साम्राज्यवाद की नीति' की शुरुआत की (एक क्षेत्र पर कब्जा करना और फिर उसका विस्तार करना)।
   - 1510 में अल्फोंसो-डी-अल्बुकर्क ने 'आदिल शाह' (बीजापुर के सुल्तान) को हराकर गोवा पर कब्जा कर लिया, इसलिए गोवा पुर्तगालियों द्वारा कब्जा किया गया पहला स्थान था।

सेंट फ्रांसिस जेवियरः-वह एक पुर्तगाली ईसाई था जो 1540 में भारत आया और उसने अकेले ही 7 लाख भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।

अन्तिम महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर **जोवा-डी-कैस्ट्रो** था जिसने बीजापुर के सेना को पराजित किया।

भारत में पुर्तगालियों का योगदानः-

- पुर्तगाली भारत में सबसे पहले आये और सबसे अन्तिम गोवा, दमन, दीव पर शासन करते रहे।

KD Publication

- पुर्तगालियों के आगमन से भारत में तम्बाकु की खेती, जहाज निर्माण और प्रिंटींग प्रेस की शुरूआत हुई।
- 1556 ई. में गोवा में पुर्तगालियों ने भारत में **प्रथम प्रिंटींग** प्रेस की स्थापना की।

(1) संत पीटर चरित – मराठी भाषा में भारत में छपी पहली पुस्तक।

(2) बाइबिल– भारत में छपी तेलुगु भाषा की पहली पुस्तक।

- पुर्तगालियों ने भारत में विभिन्न सब्जियां और फल पेश किए

(a) आलू (b) टमाटर

(c) मक्का (d) काजू

(e) पपीता

भारत में डचों का आगमन

✓ डच लोग नीदरलैंड और हॉलैंड से आए थे।

✓ 1602 ई. में डच संसद द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसके तहत **'संयुक्त डच ईस्ट इंडिया कंपनी'** की स्थापना की गई।

✓ पुलिकट को भारत में डचों की पहली राजधानी बनाया गया था।

✓ 1605 – 'वाडर हेग' (भारत में डच के पहले गवर्नर) के नेतृत्व में डच कम्पनी ने मुसलीपट्टम आंध्र प्रदेश में अपना पहला कारखाना स्थापित किया।

✓ 1610– डचो ने पुलिकट (आंध्र प्रदेश) में एक नया कारखाना स्थापित किया।

✓ 1650– डच कम्पनी ने भारत में रेशम और कपड़ा उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कासिम बाजार (पश्चिम बंगाल) में पहली रेशम की फैक्ट्री की स्थापना की।

✓ 1653 – चिनसुरा (पश्चिम बंगाल) में 'गुस्ताव किला' नाम से कारखाना स्थापित किया

✓ डच कम्पनी ने अपने कारखानों के लिए वेतन के आधार पर भारतीयों को काम पर रखा था।

✓ 1759– मीर जाफर (बंगाल के नवाब) द्वारा ' बेदरा के युद्ध' में संयुक्त डच ईस्ट इंडिया कंपनी की हार हुई और भारत में डचों की सभी गतिविधियाँ समाप्त हो गए।

भारत में अंग्रेजों का आगमन

✓ भारत से लाए गए सामान को बेचकर पुर्तगाली लोग ब्रिटेन में मुनाफा कमा रहे थे, इसलिए अंग्रेजों ने व्यापार के लिए सीधे भारत आने का फैसला किया।

✓ 1600– भारत में व्यापार करने के लिए ब्रिटेन में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना की गई।

✓ इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने एक घोषणा पत्र जारी कर ईस्ट इंडिया कंपनी को पूर्व के साथ व्यापार करने के लिए 15 वर्षों का अधिकार प्रदान किया जबकि 1609 में जेम्स प्रथम ने व्यापार की अवधि को अनिश्चित समय के लिए बढ़ा दिया था।

✓ अगस्त, 1609 – जहांगीर ने 'ईस्ट इंडिया कंपनी' को सूरत में अपना पहला स्थायी कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी और केप्टन विलियम हॉकिन्स को अंग्रेजी खान की उपाधि दी।

✓ 1611– 'ईस्ट इंडिया कंपनी' ने भारत में गोलकुंडा राजवंश के शासक कुतुब शाह के अधीन मुसल्लिपट्टम (आंध्र प्रदेश) में अपना पहला अस्थायी कारखाना स्थापित किया।

✓ 1613 – ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूरत में एक स्थायी कारखाना स्थापित किया।

✓ 1615– 'सर टॉमस रो' भारत में कर माफी पास के लिए फरमान (अनुमति) लेने और अंतर्देशीय कर से छूट लेने के लिए मुगलों के दरबार में आए, ताकि 'ईस्ट इंडिया कंपनी' को 'व्यापार पास' मिले और उन्हें हर टोल पर कर नहीं देना पड़े। और इन पासों के लिए 'ईस्ट इंडिया कंपनी' मुगलों के शाही खजाने में अग्रिम कर का भुगतान करेगी।

✓ 1632 ई. में गोलकुंडा के सुल्तान ने एक सुनहरा फरमान जारी किया जिसके तहत अंग्रेज 500 पैगोड़ा वार्षिक कर अदा करने के बदले गोलकुंडा राज्य में स्थित बंदरगाहों से बिना किसी कर के व्यापार कर सकेंगे।

✓ 1639 ई. में फ्रांसीसी डे नामक अंग्रेज ने चन्द्रगिरी के राजा से मद्रास को पट्टे पर ले लिया और यहाँ पर 'फोर्ट सेंट जार्ज' नामक किले की स्थापना की।

✓ 1651 ई. में बंगाल के सुबेदार शाहशुजा ने अंग्रेजों को 300 पैगोड़ा वार्षिक कर देने के बदले व्यापार का विशेषाधिकार प्रदान किया।

KD Publication

- ✓ 1661 ई. में इंग्लैंड के सम्राट चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरीन ब्रेगांजा से हुआ जिसे बंबई दहेज के रुप में मिला।
- ✓ 1668 ई. में चार्ल्स द्वितीय ने बंबई को 10 पौंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दी।
- ✓ 1690 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के 'जॉब चारनक' ने मुगल सम्राट से बंगाल के गोविंदपुर, सुतनावती, कालिकाता के 3 गांवों को खरीदा और इन 3 गांवों को मिलाकर बंगाल प्रेसीडेंसी का गठन किया।

भारत में डेनिस आगमन

- ✓ डेनिस डेनमार्क से व्यापार के लिए भारत आए।
- ✓ 1616- डेनिस ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपना पहला कारखाना 'ट्रावणकोर' (तमिलनाडु) में स्थापित किया।
- ✓ 'सेरामपुर' (पश्चिम बंगाल) डेनिसों की राजधानी थी।
- ✓ 1645-डेनिस लोगों ने अपने सारे कारखाने अंग्रेजों को बेच दी और भारत छोड़ दिया।

भारत में फ्रांसीसियों का आगमन

- ✓ 17वीं शताब्दी में 2 यूरोपीय देश फ्रांस और इंग्लैंड शक्तिशाली हो रहे थे और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर उनकी प्रतिद्वंद्विता थी और उन्होंने पूरी दुनिया में अपने व्यापार उपनिवेश और व्यापार जाल स्थापित कर लिए थे।
- ✓ 1664- भारत में व्यापार के लिए राजा 'लुई-14' द्वारा 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना की गई थी।
- ✓ 1668- 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' भारत आई और 'सूरत' में अपना पहला कारखाना स्थापित किया।
- ✓ 1669- 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' ने मुसलीपट्टम (आंध्र प्रदेश) में अपना दूसरा कारखाना स्थापित किया।
- ✓ 1674- 'फ्रांसिस मार्टिन' द्वारा 'पांडिचेरी' को फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की राजधानी बनाया गया था।
- ✓ अब भारत में विभिन्न देशों की 2 व्यापारिक कंपनियाँ थीं और व्यापार प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही थीं और उन्होंने अधिक से अधिक व्यापारिक अधिकारों को पाने के लिए स्थानीय शासकों का उपयोग किया।
- ✓ उस समय तक व्यापारिक कंपनियां वह स्थानीय शासक अपने-अपने क्षेत्रों के लिए लड़ रहे थे क्योंकि उस समय भारत एक संयुक्त देश नहीं था।
- ✓ 1731 ई. में गवर्नर के रुप में **लॉर्ड डूप्ले** की नियुक्ति हुई।
- ✓ 1742 -'लॉर्ड डुप्ले' ने विस्तार का नया अध्याय शुरू किया और भारत में 'सहायक संधि' की रणनीति पेश की।
- ✓ **'लॉर्ड वेलेस्ली'** - को सहायक संधि के जनक के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने इस रणनीति को भारत में जमीनी स्तर पर लागू किया था।
- ✓ 1742 ई. के बाद डूप्ले का भारतीय राज्यों में हस्तक्षेप और फ्रांसीसी शक्तियों का विस्तार हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों से उनका संघर्ष शुरु हो गया, इन दोनों शक्तियों के बीच तीन युद्ध हुए जो आंग्ल कर्नाटक युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।
- ✓ आंग्ल का अर्थ है ब्रिटिश और कर्नाटक तमिलनाडु और केरल की सीमा पर स्थित एक स्थान का नाम है।

आंग्ल-कर्नाटक युद्ध

युद्ध	काल	संधि	संधि वर्ष	परिणाम
प्रथम कर्नाटक युद्ध	1746-48 ई.	एलाशापेल की संधि	1748 ई.	फ्रांसीसी विजयी हुए।
द्वितीय कर्नाटक युद्ध	1749-54 ई.	पांडिचेरी की संधि	1754 ई.	अंग्रेज विजयी हुए।
तृतीय कर्नाटक युद्ध	1758-63 ई.	पेरिस की संधि	1763 ई.	अंग्रेज विजयी हुए।

KD Publication

2 Chapter
BRITISH CONQUEST OVER PRINCELY STATES OF INDIA

1707 के दौरान औरंगजेब की मृत्यु के बाद, मुगल राजवंश कमजोर हो गया और छोटे राज्यों में विभाजित हो गया, जिससे विदेशियों को उनके क्षेत्रों पर कब्जा करने में आसानी हुई।

बंगाल पर अंग्रेजों की विजय

- ✓ 1756:-सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब बने, उन्होंने 'फोर्ट विलियम' पर कब्जा कर लिया और 146 अंग्रेजों को बंदी बनाकर काल कोठरी में डाल दिया, इनमें से 123 अंग्रेजों की दम घुटने से मृत्यु हो गई। इस घटना को 20 जून, 1756 की 'ब्लैक होल घटना या काल कोठरी की घटना' के रूप में जाना जाता है।
- ✓ इस घटना को सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के बीच 'अलीनगर की संधि' द्वारा सुलझाया गया था।
- ✓ ब्लैक होल घटना से अंग्रेजों को अपमानित किया गया था इसलिए रॉबर्ट क्लाइव ने सिराजुद्दौला के खिलाफ एक साजिश रची और नवाब के मुख्य नेताओं को रिश्वत देकर उन्हें नवाब की पीठ में छुरा घोंपने और युद्ध में गद्दार की भूमिका निभाने के लिए मजबूर किया।

प्लासी का युद्ध (1757):

- प्लासी नदी के तट पर एक काल्पनिक युद्ध का दृश्य रचा गया। नवाब युद्ध के मैदान से भाग गया और बाद में धोखे से मीर जाफर ने उसकी हत्या कर दी।
- प्लासी की लड़ाई के बाद अंग्रेजों द्वारा मीर जाफर को बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया था, लेकिन 3 वर्ष बाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया क्योंकि मीर जाफर अंग्रेजों को कर देने में असमर्थ था।

बक्सर का युद्ध (1764)

- मीर कासिम भी अंग्रेजों को अपेक्षित अधिकार और कर देने में असमर्थ रहा इसलिए मीर जाफर को फिर से बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया।
- मीर कासिम ने सुजा-उद-दौला (अवध के नवाब) और शाह-आलम-द्वितीय (मुगल सम्राट) के साथ एक त्रि-गठबंधन बनाया और ईस्ट इंडिया कम्पनी के खिलाफ बक्सर में युद्ध लड़ा।
- उस समय हेनरी विंसिटार्ट भारत के गवर्नर थे।
- 22 अक्टूबर, 1764 को बक्सर की लड़ाई में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने त्रि-गठबंधन को हराया।
- परिणाम स्वरूप सुजा-उद-दौला, शाह आलम और अंग्रेजों के बीच 'इलाहाबाद की संधि' हुई और बंगाल, बिहार, उड़ीसा के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को दीवानी अधिकार दिए गए।

मैसूर पर अंग्रेजों की विजय

- ✓ हैदर अली मैसूर पर कुशलता से शासन कर रहा था और फ्रांस के साथ विस्तार और विदेशी व्यापार द्वारा मैसूर का विकास कर रहा था।

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1766-1769))

- हैदर अली ने ईस्ट इंडिया कम्पनी, माधव राव (मराठा के पेशवा) और हैदराबाद के निजाम के त्रिदलीय गठबंधन को हराया।
- यह युद्ध 'मद्रास की संधि' द्वारा तय किया गया था।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780 - 1784)

- लॉर्ड वॉरेन हेस्टिंग और हैदराबाद के निजाम के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कंपनी ने हैदर अली पर हमला किया।

KD Publication

- 1782 में युद्ध में हैदर अली की मृत्यु हो गई और फ्रांसीसी बंदरगाह 'माहे' को अंग्रेजों ने जब्त कर लिया।
- हैदर अली की मृत्यु के बाद उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने लड़ाई लड़ी लेकिन वह भी ईस्ट इंडिया कंपनी से हार गया।
- यह युद्ध टीपू सुल्तान और सर आयर कूट के बीच 'मैंगलोर की संधि' द्वारा सुलझाया गया।

तीसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध (1789-1792)

- टीपू सुल्तान को ईस्ट इंडिया कंपनी (लॉर्ड कॉर्नवालिस), हैदराबाद के निजाम और बाजीराव-द्वितीय (मराठा के पेशवा) के त्रिदलीय गठबंधन ने हराया।
- यह युद्ध 'श्री रंगपट्टनम की संधि' द्वारा सुलझाया गया था।

चौथा आंग्ल मैसूर युद्ध (1798-1799)

- तीसरे एंग्लो-मैसूर युद्ध के बाद मैसूर कमजोर हो गया और टीपू सुल्तान ने लॉर्ड वेलेस्ली के सहायक संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, इसलिए हैदराबाद के निजाम और ईस्ट इंडिया कंपनी ने मैसूर पर हमला किया। 1799 में श्री रंगपट्टनम में टीपू सुल्तान की मृत्यु हो गई और सहायक संधि के तहत मैसूर में एक कठपुतली राजा बनाया गया।

युद्ध	समय	गवर्नर-जनरल	संधि	संधि वर्ष	संधिकर्त्ता
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध	1767-1769 ई.	लॉर्ड वेरेलस्ट	मद्रास की संधि	1769 ई.	हैदर अली और अंग्रेजों के बीच
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1780-1784 ई.	वारेन हेस्टिंग्स	मंगलौर की संधि	1784 ई.	हैदर अली और अंग्रेजों के बीच
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1790-1792 ई.	लॉर्ड कार्नवालिस	श्रीरंगपट्टनम की संधि	1792 ई.	टीपू सुल्तान और अंग्रेजों के बीच
चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	1799 ई.	लॉर्ड वेलेजली	मैसूर की सहायक संधि		वोडियार वंश और अंग्रेजों के बीच

मराठा संघ पर अंग्रेजों की विजय

✓ मराठा संघ 5 छोटे राज्यों का एक समूह था जिसमें पुणे के पेशवा, नागपुर के भोंसले, बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होल्कर और ग्वालियर के सिंधिया शामिल थे।

✓ पहले मराठा राजवंश में छत्रपति पद शक्तिशाली था और पेशवा की नियुक्ति छत्रपति द्वारा की जाती थी लेकिन बाद में पेशवा का पद अधिक शक्तिशाली हो गया और पेशवा बालाजी-विश्वनाथ ने इस पद को वंशानुगत बना दिया और 1720 में अपने बेटे बाजी-राव-प्रथम को पेशवा नियुक्त किया।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-1782)

- रघुनाथ राव ने पेशवा माधव राव-प्रथम (पेशवा बालाजी-बाजी राव के पुत्र) की हत्या कर दी, परिणामस्वरूप मराठा राजवंश में युद्ध शुरू हो गया।
- सबसे पहले रघुनाथ राव और ईस्ट इंडिया कम्पनी के बॉम्बे प्रेसीडेंसी के गवर्नर के बीच 'सूरत की संधि' (1775) द्वारा युद्ध को सुलझाया गया था, लेकिन 1773 के रेगुलेटिंग अधिनियम के अनुसार बॉम्बे प्रेसीडेंसी बंगाल के गवर्नर जनरल के अधीन था, इसलिए इस संधि को कलकत्ता की परिषद द्वारा खारिज कर दिया गया था।

KD Publication

- अंत में लॉर्ड वारेन हेस्टिंग और माधव राव-द्वितीय के बीच 'सालबाई की संधि' द्वारा प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हुआ।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1802-1805)

- 1802 में बाजी राव-द्वितीय ने सहायक संधि के तहत ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ 'बसीन की संधि' पर हस्ताक्षर किए।
- पेशवा बाजी-राव-द्वितीय के मंत्री ने इंदौर में होल्कर के राजकुमार की हत्या कर दी जिसके परिणामस्वरूप मराठा संघ के बीच आंतरिक संघर्ष उत्पन्न हुआ और द्वितीय एंग्लो मराठा हुआ।
- 1805 में मराठा संघ के सभी प्रमुखों और ईस्ट इंडिया कंपनी के सर जॉर्ज बार्लो के बीच 'राजघाट की संधि' द्वारा इस युद्ध को समाप्त किया गया था।

तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818):-

- मराठा का पेशवा ईस्ट इंडिया कंपनी की सहायक संधि के अधीन था लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी को मराठों से अपेक्षित लाभ नहीं मिल रहा था इसलिए वह मराठों के खिलाफ एक बहाना खोजने की कोशिश कर रहे थे।
- पेशवा के मंत्री ने गायकवाड़ के राजदूत की हत्या कर दी जिससे एक संघर्ष पैदा हुआ और ईस्ट इंडिया कंपनी ने पेशवा से अपराधी को सौंपने के लिए कहा, लेकिन पेशवा ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, जिसके कारण बाजी-राव-द्वितीय और ईस्ट इंडिया कंपनी के लॉर्ड वॉरेन हेस्टिंग के बीच तीसरा एंग्लो-मराठा युद्ध शुरू हुआ।

✓ ईस्ट इंडिया कंपनी ने युद्ध जीत लिया और 1818 में 'पुणे की संधि' पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि के अनुसार मराठा संघ को भंग कर दिया गया और पेशवा पद को समाप्त कर दिया गया।

सिख साम्राज्य पर अंग्रेजों की विजय:-

✓ मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद पंजाब भी 12 मिस्लों या प्रांतों में विभाजित हो गया लेकिन 1801 के दौरान महाराजा रणजीत सिंह ने सभी मिसलों पर विजय प्राप्त की और उन सभी को मिलाकर सिख साम्राज्य का निर्माण किया।

✓ 1839:- रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई।

✓ 1843:- रणजीत सिंह के पुत्र दलीप सिंह 7 साल की उम्र में शासक बने और इससे अंग्रेजों को सिख साम्राज्य पर हमला करने और जीतने का मौका मिला।

प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1845-1846):-

- लॉर्ड हार्डिंग-प्रथम के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कंपनी ने दलीप सिंह को हराया।
- 1846 में दलीप सिंह और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच 'लाहौर की संधि' पर हस्ताक्षर किए गए और दलीप सिंह ने अंग्रेजों के अधीन सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।

द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1845-1849)

- ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी हेनरी गॉफ की सिखों ने हत्या कर दी और वह ईस्ट इंडिया कंपनी को कर देने को तैयार नहीं थे, इसलिए सिखों और अंग्रेजों के बीच युद्ध शुरू हो गया।
- 13, जनवरी,1849 'चिलियानवाला' में दलीप सिंह की हार हुई और ईस्ट इंडिया कंपनी ने उन्हें जेल में डाल दिया और 'अमृतसर की संधि' से युद्ध समाप्त हो गया।

KD Publication

3 Chapter

POLITICAL CONSOLIDATION AND ADMINISTRATION OF BRITISHERS IN INDIA

रेगुलेटिंग अधिनियम, 1773

- ✓ भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के कार्यों को ब्रिटिश सरकार द्वारा नियमित और नियंत्रित किया गया।
- ✓ ईस्ट इंडिया कंपनी के राजनीतिक और प्रशासनिक कार्यों को मान्यता मिली।
- ✓ बंगाल के गवर्नर को बंगाल का गवर्नर जनरल पद नाम दिया और लॉर्ड वॉरेन हेस्टिंग बंगाल के पहले गवर्नर जनरल थे।
- ✓ बंगाल के गवर्नर जनरल की सहायता के लिए 3 सदस्यों की एक कार्यकारी परिषद बनाई गई
- ✓ 1774 में कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई।
- ✓ कंपनी के कर्मचारियों को निजी व्यापार करने, और भारतीय लोगों से उपहार या रिश्वत लेने पर रोक लगा दी गई।

पिट्स अधिनियम 1784

- ✓ कंपनी के वाणिज्यिक और कार्य अब अलग कर दिए गए। भारत में कंपनी के राजनीतिक मामलों का मार्गदर्शन और नियत्रंण करने के लिए छह सदस्यों की नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की गई थी।
- ✓ इस प्रकार द्वैध शाासन की व्यवस्था का आरंभ किया गया।

यह अधिनियम दो कारणों से महत्वपूर्ण था।

1. भारत में कंपनी के अधीन क्षेत्र को पहली बार 'ब्रिटिश आधिपत्य' का क्षेत्र कहा गया।
2. ब्रिटिश सरकार को भारत में कंपनी के कार्यों और प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान किया गया।

1786 का अधिनियम

- ✓ बंगाल के गवर्नर जनरल की नियुक्ति ब्रिटिश संसद द्वारा कि जाएगी।
- ✓ लॉर्ड कार्नवालिस को बंगाल का गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया।
- ✓ गवर्नर जनरल को परिषद की शक्तियाँ दी गई और उन्हें कमांडर-इन-चीफ बनाया गया।

1793 का चार्टर अधिनियम

- ✓ कंपनी को 20 वर्षों के लिए व्यापार का एकाधिकार बढ़ा दिया गया था।
- ✓ नियंत्रण बोर्ड के सदस्यों तथा कर्मचारियों को भारतीय राजस्व से भुगतान किया जाएगा।
- ✓ सभी कानूनों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाने का आदेश दिया गया।

1813 का चार्टर अधिनियम

- ✓ भारत में कम्पनी के व्यापार एकाधिकार को समाप्त कर दिया और सभी अंग्रेजी व्यापारियों को व्यापार का अधिकार मिला।
- ✓ ईस्ट इंडिया कम्पनी को चाय और चीन के साथ व्यापार करने का एकाधिकार दिया गया।
- ✓ ईसाई मिशनरियों को भी भारत आने और अपने धर्म का प्रचार करने की अनुमति दी गई थी।

1833 का चार्टर अधिनियम

- ✓ चाय और चीन के साथ व्यापार में भी कंपनी के एकाधिकार को समाप्त किया गया। कंपनी को अपने वाणिज्यिक कारोबार को जल्द से जल्द बंद करने के लिए कहा गया था।
- ✓ बंगाल के गवर्नर जनरल को 'भारत का गवर्नर जनरल' बना दिया गया, सभी शक्तियां, प्रशासनिक और वित्तीय, गवर्नर-जनरल के हाथों में केंद्रीकृत थीं। लॉर्ड विलियम बेंटिक भारत के प्रथम गवर्नर जनरल थे।

KD Publication

- ✓ गवर्नर जनरल को विधायी शक्तियाँ दी गई थी।
- ✓ गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद में एक अस्थायी विधि सदस्य को जोड़ा गया था। मैकाले पहले विधि सदस्य थे। इससे परिषद की संख्या चार हो गई।
- ✓ ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत सिविल सेवाओं के लिए एक खुली प्रतियोगिता शुरू करने का प्रयास किया गया। परंतु नियंत्रण बोर्ड के डायरेक्टर्स के विरोध के कारण प्रावधान समाप्त कर दिया गया।

1853 का चार्टर अधिनियम

- ✓ गवर्नर-जनरल विधान परिषद या भारतीय विधान परिषद की स्थापना कि गई और भारत के गवर्नर जनरल कि कार्यकारी परिषद् के विधायी एवं प्रशासनिक कार्यों को अलग कर दिया।
- ✓ विधि सदस्य को गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद का पूर्व सदस्य बनाया गया।
- ✓ गर्वनर जनरल विधान परिषद् में 6 नए स्थानीय सदस्य जोड़े गए और उन्हें विधान पार्षद कहा गया।
- ✓ ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत सिविल सेवाओं में भर्ती के लिए खुली प्रतियोगिताएं शुरू की गई और मौकाले समिति नियुक्त की गई।

भारत सरकार अधिनियम, 1858

- ✓ इस अधिनियम को **भारत के शासन को अच्छा बनाने वाला अधिनियम** के रूप में जाना जाता था क्योंकि भारत में कंपनी का शासन समाप्त हो गया था और सभी शक्तियों को ब्रिटिश राजशाही में स्थानांतरित कर दी गई थी।
- ✓ भारत के गवर्नर जनरल का पदनाम बदलकर भारत का वायसराय कर दिया गया। लार्ड कैनिंग भारत के प्रथम वायसराय थे।
- ✓ द्वैध शासन की प्रणाली के निदेशक मंडल और नियंत्रण बोर्ड को समाप्त कर दिया गया और उन्हें एक नए पद **भारत क राज्य सचिव** के पद के साथ प्रतिस्थापित किया गया।
- ✓ भारत को राज्य सचिव की सहायता के लिए 15 सदस्यीय भारतीय सलाहाकार परिषद् कि स्थापना की गई।
- ✓ राज्य सचिव ने गवर्नर जनरल के माध्यम से भारत पर शासन किया।
- ✓ एक एकात्मक और अत्यधिक केंद्रीकृत प्रशासनिक ढांचा बनाया गया था। जिसके माध्यम से इंग्लैंड में भारतीय सरकार का आधीक्षण और उसका नियंत्रण किया जा सके।

भारतीय परिषद अधिनियम, 1801

- ✓ ब्रिटेन की संसद ने बंगाल, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांतों और पंजाब के लिए नई विधान परिषद की स्थापना करके भारत में दशमलवीकरण की शुरुआत की।
- ✓ कानून बनाने कि प्रक्रिया में भारतीय लोगों को शामिल करने की शुरूआत हुई। भारतीय विधान परिषद् में लार्ड कैनिंग ने 3 भारतीय को गैर-सरकारी सदस्यों के रूप में नामांकित किया (बनारस केराज, पटियाला के महाराज और सर दिनकर राव को शामिल किया गया।)
- ✓ देश के शासन में पोर्टफोलियो प्रणाली की शुरुआत की गई।
- ✓ वायसराय आपात कालीन स्थिति में अध्यादेश जारी कर सकता था।

भारतीय परिषद अधिनियम, 1892

- ✓ केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में अतिरिक्त (गैर सरकारी) सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई, हालंकि बहुमत सरकारी सदस्यों को दी गई।
- ✓ प्रांतीय विधान परिषदों में गवर्नर को जिला परिषद्, नगरपालिका, विश्वविद्यालय, व्यापार संघ, जमींदार और बंगाल चैंबर ऑफ कॉर्मस की सिफारिश पर गैर-सरकारी पर गैर सरकारी सदस्यों को नियुक्त करने की शक्ति दी गई।
- ✓ परिषदों के पास राजस्व और व्यय के वार्षिक विवरण (अर्थात बजट) पर चर्चा करने और कार्यपालिका को प्रश्नों को संबोधित करने की शक्तियाँ प्रदान की।

भारतीय परिषद अधिनियम, 1909

- ✓ इस अधिनियम को मॉर्ले मिंटो सुधार के नाम से जाना जाता था।
- ✓ मॉर्ले राज्य सचिव थे, और मिंटो भारतीय वायसराय थे।
- ✓ वायसराय की कार्यकारी परिषद में पहली बार भारतीयों कि नियुक्ति की अज्ञा मिली और सतेंद्र प्रसाद सिन्हा को वायसराय की कार्यकारी परिषद में एक आधिकारिक विधि सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था।

KD Publication

- ✓ प्रांतीय विधान परिषदों के आकार को निर्वाचित गैर-सरकारी सदस्यों को शामिल करके बढ़ाया गया ताकि आधिकारिक बहुमत समाप्त हो जाए। उनके कार्यों में भी वृद्धि हुई, अब वे बजट और सार्वजनिक मामलों के कुछ मामलों पर प्रस्ताव पेश कर सकते थे।
- ✓ केंद्रीय विधान परिषद में चुनाव का एक तत्व भी पेश किया गया था, लेकिन आधिकारिक बहुमत बनाई रखी गई।
- ✓ पृथक निर्वाचन के आधार पर मुस्लिमों के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व का प्रावधान किया गया, इस अधिनियम ने सांप्रदायिकता को वैधानिकता प्रदान कि और लार्ड मिंटो को सांप्रदायिक निर्वाचन जनक के रूप में जाना गया।

भारत सरकार अधिनियम, 1919

- ✓ इस कानून को माण्टेक्यू चेम्सफोर्ड सुधार को कहा जाता है।
- ✓ केंद्रीय और प्रांतीय विषयों कि सूचियाँ अलग कर दी गई और प्रांतीय विधान परिषदों को अपने संबंधित विषयों पर कानून बनाने की अनुमति दी गई थी।
- ✓ प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली शुरू की गई और प्रांतीय विषयों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जाना था: हस्तांतरित और आरक्षित।
- ✓ केंद्रीय विधान परिषद या भारतीय विधान परिषद में उच्च सदन और निचले सदन के साथ द्विसदनीय व्यवस्था प्रारंभ की गई।
- ✓ सांप्रदायिक आधार पर सिखों, ईसाइयों, आंग्ल-इंडियन और यूरोपीयों के लिए भी पृथक निर्वाचन के सिद्धांत को विस्तारित किया।
- ✓ 1926 में लोक सेवा आयोग गठन किय गया।
- ✓ केंद्रीय और प्रांतीय बजट को अलग कर दिया और राज्य विधान सभाओं को अपना बजट स्वंय बनाने के लिए अधिकृत कर दिया।

भारत सरकार अधिनियम, 1935

- ✓ ब्रिटिश प्रांतों और रियासतों को मिलाकर अखिल भारतीय संघ की स्थापना की गई।
- ✓ केंद्र और प्रांतों के बीच शक्तियों को विभाजित किया गया और तीन सूचियाँ -संघीय सूची (59 विषय), प्रांतीय सूची (54 विषय) और समवर्ती सूची (36 विषय) के रूप पेश किया गया, अवशिष्ट विधायी शक्तियाँ गवर्नर जनरल के अधीन थीं।
- ✓ प्रांतों में द्वैध शासन को समाप्त किया और प्रांतीय स्वायत्तता की शुरुआत की गई।
- ✓ केंद्र में द्वैध शासन प्रणाली को शुरू किय गया।
- ✓ इसने भारत सरकार अधिनियम 1858 द्वारा स्थापित भारतीय सलाहाकार परिषद को समाप्त कर दिया।
- ✓ देश की मुद्रा और साख को नियंत्रित करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना की गई।
- ✓ मताधिकार का विस्तार किया और लगभग दस प्रतिशत जनसंख्या को मत का अधिकार दिय गया।
- ✓ 1937 में एक संघीय न्यायालय की स्थापना कि गई।

KD Publication